## सचित्र

$$
\begin{aligned}
& \text { प्रकाशक } \\
& \text { ज्योतिष प्रकाशन } \\
& \text { चीक्cur (ean }
\end{aligned}
$$



# 枵: <br> सचिन्न <br> सामुद्रिक-रहसम् 

बनारससेटे - 'रामनगर'-निवासिना श्री $९ \circ २$ काश़िराजाश्रित-
श्रीमत्- हनुमनग्रसादज्योतिर्विदात्म्मेन राजज्यौतिपी-
स्व. पं. श्रीकालिकाप्रसादर्शर्मणा
सडूलितम्
काशिराजकीयाङ्म्लविद्यालया-(मि. हा. सूल)-डध्यापक-सर्गहित्याजार्य-
द्विव्द्धुपाह्व-पं. श्रीठाकुरप्रसादशर्मणा

ब्याकरणानार्य, साहित्यवारिधि-इल्युपाधिधारिणा पण्डित-श्रीशिनदत्तमिश्न-शास्त्रिणा संभोषितम्र प्रकाशक : ज्योलिष प्रकाशन चौक, वाराणसी-२२१००१
प्राप्ति स्थान : ठाकुर प्रसाद बुक्सेलर, चौक, वाराणसी सन् २०१९ फोन-०५४२-२३९०८५४ मूल्य ६०)-

# प्रकाशक <br> ज्योतिष प्रकाशन <br> चौक, चित्रा के सामने <br> वारणणसी-२२९००१ <br> फोन : 04૪२-२३९०८५४ 

## सन् २०११ ई.

मूल्य : ६०) $0 \circ$

फोटो कम्पोजिंग :
ज्योतिष प्रकाशन
चौक, वाराणसी-२२२००१

## मुद्रक :

स्वस्ति-श्रीमन्महाराजाधिराज-द्विजराज-काशिराज-परमगौरवास्पद-कैप्टन हिज हाइनेस श्री ?०० मदादित्यनारायण सिंह शर्म धर्मवीर पुङ्गव के. सी. एस. आई. महोदय के कर-कमलों में

## समर्णण

## राजन् !

श्रीमान् प्रिय प्रजाजनों के प्राणाधार तथा भारतवर्ष में धर्म के स्तम्भ-स्वरूप हैं। सनातनधर्म और हिन्दू समाज को महाराज से गौरव है। इस लेखक को राज्य से बहुकालिक सम्बन्ध है। अत: यह 'सामुद्रिक-रहस्य' नामक सचित्र पुस्तक का चतुर्थ-संस्करण महाराज के कर-कमलों में सादर समर्पित है। आशा है कि श्रीमान् इसे स्वीकार कर पूर्ववत् मुझे पोत्साहित करेंगे।

प्राचीन रामनगर,
बनारस स्टेट
संवत् २००२

श्रीमान् का शुभेच्छु-
पं० कालिकाप्रसाद
राजज्यौतिषी।

## भूमिका

श्री सर्वशक्तिमान् सत्चिदानन्द परम कारणिण परत्रह्य परमेश्भर को अनम्त धन्यदाद है. जिन्होंने जगत् की उचना कर सांसारिक जीवों के उपकारार्थ अनिन्वचनीय सुग्वान्पादक सामत्रियों को प्रक्तुत किया। प्रत्येक विषय-ज्ञान के लिये अनेक उपाय भी द़ाँाये। परमेश्रर की ही प्रेरणा मे न्निकालदर्शी महर्षियों के द्वारा कला-कौश़ल-ज्ञान के लिये शिल्प, रोग मे मुक्त होने के लिये वैद्यक, भूत, भविष्य. वर्तमान जानने के लिये ज्योनिष एगं अनेक विषय जानने के लिये अनेकानेक शास्त्र रचे गये। अन्रान्तर भदों के सहिन ज्यौनिषश़ास्त्र में अनेक शाखायें हैं; जैसे स्वर, केरन्न, होरा, शकुन, गणिन, संहिता और सामुद्रिक। डस गास्त्र के द्वारा प्राचीनकाल के महर्षि लोग भूत, भविष्य, वर्नमानकाल की यथार्थ ब्वातें बतलाते थे; जो पुराणों में प्रमड्ज-वश यथावकाश उपलब्ध होते हैं। उन ग्रन्फों में हल, पद्म, पुष्करिणी, हय, गज इन्यादि के द्वारा फलकथन की प्रणाली कही गई है। वस्तुतः मनुष्यों के हाथ में हाथी, घोड़ा, रथ, पालकी, हल, बैल इत्यादि प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिग्र पड़ते, इनका केई विशेष चिह्न अवश्य है परन्तु उनके रूप और स्थान का परिचय प्राय: सर्वत्न नहीं मिलता, इसी कारण से देववाणी में यह ग्रन्थ लुप्तप्राय हो रहा है।

पाश्चात्त्य विद्वानों ने यद्यपि इस विषय में नवीन प्रणाली का अत्यन्त अनुसन्धान कर इस शास्त्र की उनति की है और उन्हीं रेखाओं के द्वारा विचित्र ढंग से फल-कयन प्रणाली भी प्रदर्श्रित की है, तथापि (रेखा कामदुष्या स्मृता) रेगायें कामधंनु रूप हैं- ऐेसा महर्षियों ने कहा है। अतः प्राचीन पद्धति के अनुसार फल-कथन में कठिनाई होती है। इस कारण इस छोटी-सी पुस्तक में बहुत अन्वेषण के साथ प्राचीन हस्तलिखित प्रन्यों का अध्ययन, मनन और अनुभव द्वारा प्राचीन तथा नवीन रीतियों का समावेश कर चित्रों में सुगमतापूर्वक अङु के द्वारा रेखाओं के रूप, स्थान और सप्रमाण फल दर्शाये गये हैं।

इसमें दो विषय हें, लक्षण और रेखा। रेखाओं के तीन प्रधान स्थान हैंकर, कपाल तथा चरण। चिर्काल के अनुभव से इनके द्वारा भून, भविष्य, वर्तमान तथा जन्मकालिक मास, पक्ष, तियि डत्यादि का भी ज्ञान होता है। प्रायः ऐसी जनश्रुति है कि इस शास्त्र द्वरारा कथित भूत और वर्तमान फल ठीक

घटते हैं, पर भविष्य नहीं मिलता। यह अत्यन्त गूढ़ विषय है, ड़ पर विचार करना आवश्यक है। जैसे आकाश में बादल जब उठने लगता है तो ऊँट. बकरी. घोड़ा इत्यादि का रूप धारण करता है, परन्तु दर्शकों को पहले ही यधार्थ रूप का जान नहीं होता। इसी प्रकार हाथ में जब छोटी-छोटी रेखाओं का उदय होने लगता है, जो थोड़े ही भेद से फल में महान् भेद कर देता है, उंसका भी आकाशस्थ बादल के समान यथार्थ ज्ञान होना कठिन है। जब यह रेखा पूर्णतया अपने रूप को धारण कर लेती है तो उस समय का फल भूत हो जाता है; इस कारण भूत, वर्तमान फल तो ठीक मिल जाता है परन्तु भविष्य के लिए अनुभव तथा शुद्ध प्रतिभा की आवश्र्यकता पड़ती है।

जैक्षे चित्र १? में नं०११। चित्र १₹ में नं०€। एवं चित्र १३ में नं०११। चित्र १७ में नं० ३ इत्यादि रेग्वाओं के अल्प भेद से फल में विशेष अन्तर होता है। अतः उदयकाल में साधारण पुरुष इनका यथार्थ फल नहीं कह सकता एवं अनेक कारणों से भविष्य-फल में अड़चन मालूम होती है। इसका चिरकाल तक अनुभव धीरता के साथ करना चाहिए।

यदि पाठकगण अपनी दया-दृष्टि से इस प्रस्तुत संर्करण को पूर्व संर्करण की भॉनित अपना कर पुनः मेरे उत्साह को बढ़ायेंगे तो भविष्य में मैं और भी अनेक विषयों को लेकर सेवा में उपस्थित होऊँगा।

नष्ट जन्मपत्र की बहुत-सी सामग्री भी एकत्र है। परमेशर की कृपा से सर्वाड़्न सम्पत्न होने पर प्रकाशित किया जायेगा।

चित्रों में जो पृष्ठांक दिये गये हैं वे प्राय: उत्तरार्द्ध के हैं। पूर्वर्द्ध के लिए उसी स्थान पर पूर्वार्द्ध या पू० शब्द दिया गया है।

इस ग्रन्ध के रचना में मेस्टर हाई स्कूल के अध्यापक पूज्यपाद द्विवेद्युपनामक $\dot{ष} \circ$ ठाकुरग्रसाद शर्मा, साहित्याचार्य ने अत्यन्त सहायता दी है तथा और कई प्रसिद्ध मह्रानुभाव विशेष्ज विद्वानों ने जो यथानक्राश इसमें सम्मति दिये हैं उन सब महातुभावों को हार्दिक धन्यवाद देते हुए इस भूमिका को समाप्त करता हूँं।

लेखक
कालिकाप्रसाद
राजज्यौतिषी, रामनगर, वाराणसी स्टेट

## प्रस्तावना

श्री परम कृषालु परब्रह्म परमेश्वर की पर्मानुकम्पा से सचित्र 'सामुद्रिक रहस्य' का प्रस्तुत संख्करण लेकर पाठकों की मेंवा में उपस्थित होने का गौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस संस्करण में भाल-रेबा सम्बन्धी कुछ अनेक नवीन विष्य तथा गत $१ २$ वर्यों में इस गाम्न्र के अनेक प्राच्चीन हस्त्रलिखित ग्रत्यों के अध्ययन-मनन तथा अनुभव द्वारा प्रात्र विपयों की टिप्पणी चित्रप्रकरण और मूल ग्रन्य की टीका में यथावकाश प्रकाशित की गंयी है।

संवत् $? € ७ ७$ में कामरूप कामाख्या के एक महात्मा मे इस विषय की शिक्षा प्राप हुई। महात्माजी इस शास्त्र के द्वारा विचित्र ढंग से फल कहते थे, जिसे देख और सुनकर ऐसा प्रतीत होता था मानो इष्ट द्वारा फल-कथन कर रहे हैं। वस्तुतः यह बात नहीं थी, वे केवल इसी शास्त्र के आधार पर तीनों का यथार्थ फल कहते थे।

उन्हीं महात्मा की दया से संवत् १६६४ वि. में सचित्र सामुद्रिक-
 छोटी पुस्तक केवल भाषा में लेकर पाठकों की सेवा की थी, जिसे विद्वज्रनों ने अपनाकर अनुपम प्रसन्नता के साथ-साथ अपनी अमूल्य सम्मति भी प्रदान की, जिनका दिग्दर्शन ग्रन्य के अन्त में यभावकाश हुआ।

इस संस्करण में नष्ट जन्म-पश्रादि विषय के समावेश करने का विचार था, परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण शीघ्रता से सम्पूर्ण सामत्री प्रस्तुत न हो सकी, अतः पाठकगण इसके लिए कृपया क्षमा प्रदान करेंगे।

यदि परमें्वर की कृपा होगी तो फिर कभी इस विषय को लेकर उपस्थित होने का साहस करूँगा । इस समय साभुद्रिक सोपान नामक एक और छोटी पुस्तक सर्वसाधारण के लाभार्थ इसके साथ ही प्रकाशित की जाती है। आशा है, सअ्ञनगण पूर्ववंत् इन्हें अपनाकर मुक्ने प्रोत्साहित करेंगे। इति शम्।

कालिका शसाद, राज-ज्यौतिषी, रामनगर, बाराणसी स्टेट।

## 5

## नबम संख्करण की प्रस्ताबना

## ग्रिय पाठक महोदय!

आज मैं पून्य पिताजी की अनुपस्थिति में सचित्र सामुद्रिक-रहमस्य के प्रम्नुत संक्करण को लेकर उपम्धित हुआ है।। इम पुस्तक को अपनाकर आप लोगों ने जो उदारता दिखलायी है उसके लिए में आप लोगों का हृदय से कृतज हूँ, इस पुस्सक के छपते ही धड़ाधड़ इसकी प्रतियाँ विक जाती हैं। जिसमे कि इस अस्पकाल में ही इसके नवम संख्करण्ञ छपने की नौबत आयी, यही इस पुस्तक के सर्वोपयोगी होने का प्रमाण है और इसके अतिरिक्त भारत के अनेक हिन्दी, अंग्रेज्जी, संस्रृत के धुर्धर विज्ञ क्द्वाने, रोजा-महाराजा, धनी-मानी मज्जन तथा ख्यातित्राप्म पत्तकारों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करके इसे और भी गौरवान्तित किया है। जिसके कारण कई संख्करण थोड़े ही समय में एकदम बिक गये और जिसके लिए वहुत दिनों से देश-विदेश के चारों ओर से माँग पर माँग बराबर जारी है । यही इस पुस्तक की अधिक चाह का और भी दोतक है। अतएव इसका नबम संख्ररण छपना अनिवार्य समक्न कर संशोधन करेे शीष्र उसी को छपाना चाहा, परन्तु अनेक कार्य कारणवश छपने में बहुत विलम्ब हुआ। इसके लिए पाठकों से क्षमा चाहता हूँ। इस वर्ष इस पुस्तक में कुछ नबीन विषय परिंबर्द्धित नहीं हो सका, जहौँ कहीं पूर्व संस्करण में छोटी-मोटी तुरियाँ रह गई थीं उनको ठीक करके शुछ़ तथा साफ छुपने की ओर विश्रेष ध्यान दिया गया है। परन्तु फिर भी दृहिदोष तथा प्रेस-कर्मबारियों की असावधानी से कुछ नुटियाँ इस बार भी रह गई हों तों पाठकवृन्द कृपंया मुधार कर पढ़ंग, यही प्रर्थना है। प्रस्तुत संस्करण में समूर्ण संशोधनकार्य पश्डित ध्रीजिषदत्तयिश्र जी गास्त्रीने किया है। अतः वे धन्यवादार्ह हैं।

भत तीन वर्ष पूर्व ‘सायुद्रिक कुज्विका’ नाम की एक छोटी-सी पुस्तक द्वारा मैंने पाठकों की त्रेवा की है। वह पुस्तक "सचिन्त सामुद्रिक रहस्य" पढ़नेनालों के लिए परमोपयोगी है, क्योंकि जहीँ-कहीं इस सामुद्रिक रहस्य में विषय गुप है उसके लिए कुल्किका पथ-प्रदर्शन का काम करती है। पाठकणण स्वयं मैगाकर इसका अनुभव कर लाभ उठा सकते हैं, हाध कंगन को आरसी क्या? मूल्य 40.00 मात्र किमधिकम्
संब्त् २०३द
ष. गौरीशंकर उपाध्याय
रामनगर, (सामुद्रिक सदन)

## 574

जिस समय इस सामुद्रिक-रहस्य का जन्म हुआ, उस समय हिन्दी भाषा में प्राय: इसका अभाव-सा था। जो एक-दो ग्रन्ध मिलते भी थे, तो किसी में नग्बशिख वर्णन-मात्र ही है तथा किसी में प्राचीन काल के "छत्रं तामरसं धनू रथ्थरो दम्भोऽलिकूर्माड़ुशाः" इत्यादि चित्र परिचय के ४१ पृष्ठ में उक्त ३२ रेखाओ की आकृति चित्न में देकर उनके फल प्रदर्शित हैं। परन्तु वैसा रथ, हय, गज, कलशादि की रेग्रायें हाय में कहीं भी प्रत्यक्ष देखने में नहीं आतीं। अत: इस विषय के जिज्ञासुओं का मन उसमें नहीं रमने से यह विषय प्रायः लुत्त हुआ जाता था। कोई एकाध पुस्तक पाश्चात्य ग्रू्यों का अनुसरण कर छपी भी थी तो विस्तार और मूल्य के अधिक्य से प्रचलित नहीं थी। अतः स्वर्गीय पं. कालिकगप्रसादर्जी राजर्यौतिषी ने कामरूप कामाख्या के महात्मा से प्रास्त प्रसाद का अनुभव कर पुस्तकरूप में प्रकाशित कर जनता में काफी प्रचार किया।

यद्यपि, अनेक सामुद्रिक पुस्तनें मुद्रित हैं, तथापि इसके टक्षर की अबतक एक भी पुस्तक नहीं निकल सकी, क्योंकि संकलन की ऐसी प्रणाली किसी भी पुस्तक में नहीं है। बड़ी भारी विशेषता तो यह है कि काम (कोक) शात्रोक्त शशक, मृग आदि जाति के अवान्तरभेद सहित १६ प्रकार के पुरुष एवं पयिनी, चित्रिणी, हस्तिनी और पंख्रिनी जाति की स्त्रियों के जीवनचरित्र, नख-श्रिखादि वर्णन, विधवा, सधवा, पुंश्चली, देवी, देवादि लक्षण, शुभाशुभ फल ज्ञान की रीति, उद्दाह मेलापक, बालकों का शुभाधुर चिह्ह, वालारिष्ट आदि विषयों ने इसे अत्युत्कृष्ट बना दिया है। एवं दस भाल चित्रों द्वारा ललाट तथा २० वित्रों द्वारा प्राय: सम्पूर्ण रेखाओं के नाम, रूप, स्थान, फल अत्यन्त सरल रीति से दिये गये हैं। यही कारण है कि यह पुस्तक दनादन बिकती जाती है। यदि कर्ई कारणों से इस संस्करण के छपने में विलम्ब न हुआ होता तो अब तक छइयों संस्करण हो गये होते। अस्तु, जैसी यह्ठ पुस्तक सर्वोपयोगी हुई है, वैसी ही उब्त ज्यौतिषीजी द्वारा संकलित 'सामुद्रिक कुख्चिका' भी सरोपयोगी पुस्तक है। इन पुस्तकों में अ्रन्यकार ने अनेक गुस विषयों का समावेश करे मोने में सुगन्ध का काम किया है। सिर्फ इसकी परीक्षा प्रार्थनीय है।

ठादुर् असाद बिखेदी
अध्यगपक, मे. हार्ईस्कूल, रामनगर, बनारस स्टेट।

## अर्थ चित्र-रेखा सूचीयत्र

चित्र रेखा
फल
पुष्य का रति रखा फल
१ ११ परिचय
२ ₹ विद्या-बुद्धि,धन यश इ०
३ ६ मिल्पसाहित्यजान
४ ६ परिश्रम से घनग्रापि
\& $\ell$ कवित्वर्शक्ति इत्यादि
६ $\zeta$ जूआा,व्यापार में दक्ष
() $\gamma$ भाग्य, बुद्धि, विद्या इ०

ऽ $४$ पर सम्पत्ति प्राप्ति इत्यादि
६. (तारकादि) व्वान्धवसे अर्धला०

१० जिल्पविद्या में निपुण इ०
११ ज ( + ) धर्मात्मा इत्यादि
१२ $५$ (त्रिकोण) कारीगर इत्यादि
श₹ ₹ (छिन्न-भिल्नरेखा) शत्रुवृद्धिए.
१५ \& (Bिम्न-भिम्न) स्नी विधवा
२० जै सौमाम्यशालिनी स्री अदु वा स्सन्त्न रेखा
१ १२ परिचय
२ शान्तचित्त इत्यादि
३ $५$ सन्दिख्धचित्त इत्यादि
8

है ? ? अल्मायु इत्यादि
( ह परिश्रम से धनग्रासि ₹़०
$\leftarrow$

चित्र रेखा
वन

१० ६ अल्पायु इत्यादि
१० ६ स्त्रीद्देषी, हृद्रोग़ी
११ ६ घर्मोन्मादी इत्यादि
१२ ४ द्रब्यरहित इत्यादि
१ ₹ 8 सन्तान इत्यादि
१ ४ 8 भाग्यहीन इत्यादिं
१\& $\zeta$ पक्षाषात इत्यादि
१६ $४$ मृत्युतुल्यकष्ट इत्यादि
१६ $६$ (कमल) तीर्थ, मृत्यु इ०
१९ $\varsigma$ सहसा विनाश इत्यादि
q७ $€$ हिंसक ङत्यादि
श. 5 (दो रेखा हो) भक्तिमान्
१५ ३ विधवा
२० 8 सधवा

## मापृ या शीर्ष रेखा

१ १? परिचय
२ ६ मानसिक बलशाली इत्यादि विपरीत से फल भी विपरीत
३ ३ मातृ-पितृ-सुख ज्ञान
४ ₹ अव्यवस्थित चित
द इ (श्रृ⿸्वललाकार) प्रतिज्ञा शून्य
६ ₹ आत्मघाती इल्यादि
६ ६ (त्रि०) मातृकुल (ननिहाल) से सम्पसित्राप्ति
७ ₹ अभीष्टसिन्दि हत्यादि तथा कक्वित्वशक्ति

चित्र रेखा
फल

- ₹ दैवी बुद्धिवाला इत्यादि
€ 8 त्रिकोण बनता है
१० ४ विश्वासरहित इत्यादि
१? ४ उदररोगयुक्त इत्यादि
?२ ३ अनेकरूप धारण करना, वक्ता, आत्माभिमानी इ०
१ ३ ३ साहित्यशास्त्रज्ञता इत्यादि
?४ ३ प्रभावशाली इत्यादि
?\& ३ अकालमृत्यु इत्यादि
?\& \& (यव चि०) विवाहरहित इ०
१ ६ ₹ भक्त इत्यादि
श \& $\in$ मातृ-पितृ-वियोग इत्यादि
? ७ $\varsigma$ सहसा विनाश इत्यादि
१₹ ₹ फॉसी इत्यादि
?₹ 8 विधवा
२० ऽ सधवा
स्वास्थ्य वा आरोग्य रेखा
४ (पितृरेखायुक्त) दुःखी इत्यादि
६ $४$ वाचाल, बुद्धिमान् इत्यादि
ऽ २ (मातृरेखायुक्त) देवीबुद्धि इ०
६ \& (भाग्य मातृ युक्त त्रिकोण) से भविष्यद् वक्ता
१० $\&$ सुखी इत्यादि
११ द अव्यवस्थितचित्त, प्रनंहरोगइ०
११ - अग्निमान्य इत्यादि भाग्य बा ऊध्वरिखा
१ $\in$ परिचय
२ ४ राज्यरोग इत्यादि

चित्र रेखा

## फल

३ २ (हल) राजयोग इत्यादि
8 ? (केतु) राजयोग इत्यादि
द. ? (करवाल) राजयोग इत्यादि
? (चाप) ऐश्वर्यशाली इत्यादि
७ ? (गज) राजयोग इत्यादि
ऽ ? कष्टनिवृत्ति इत्यादि
૬ २ शिल्पी (कारीगर)
'?० २ नाटक द्वारा प्रसिद्धि, शास्त्रोपदेशक, विज्ञानोपदे०
११ २ शित्पीशास्वज इत्यादि
११ १० (त्रि०) अनायास धनप्रापि
१२ २ उच्चाभिलाषी
१₹ २ दुर्भाग्यसूचक इत्यादि
१४ २ दरिद्न इत्यादि
१४ \& (यव) मातृ-पितृवियोग इत्या.
१६ २ प्रथमदरिद्र पश्धाद्धनी इत्यादि
१\& द विवाहरहित इत्यादि
१६ \& स्ती पुरुष को मोहित करे, पुरुष स्त्री को मोहित करे
१५ ६ (त्रिकोण) मातृपितृवियोग इ०
१६ २ त्रिकालज्ञान
१७ ? धननष्ट इत्यादि
१७ ₹ स्त्रीकष्ट इत्यादि
१७ 8 माता-पिता के रहते भी दुःख
? $\&$ मातृ-पितृ विनाश
१७ ६ असवर्ण पुरुष से स्ती, असवर्ण स्त्री से पुरुष मोहित
१५ ४ परधर्मग्रहण
१५ ६ विपत्ति

## इ

## चिन्न रेखा

फल
१₹ ६ सांसारिक कष्ट
१६ $v$ उद्योगरहित
々६ \& ७, с विधना
२० ? १३ सधवा
पिदू, कर्भ बा मतन्तर से
आद्ररेखाफलमझ।
१ १० परिचय
२ $५$ वर्णसकुर तथा मातृ-पितृसुख इत्यादि।
३ ₹ मातृ-पितृसुखज्ञान।
४ २ सांमारिक कष्ट और (छिन्नभिम्न) अव्यवस्थित
\& ? दीर्घजीवी इत्यादि
६ २ अल्पायु इत्यादि
७ २ दीर्घजीवी इत्यादि
(3) 4 (त्रिकोण) पैतृकधनाधि०इ०

- २ किसी स्त्री का उत्तराधिकारी इत्यादि
€ ३ द्यूत(जुआ) कलह मे सम्पत्ति वि
q० ३ स्त्री-पुत्र विनाश
१० १० पर्सम्पत्तिप्राप्ति इइत्यादि.
११ ११ आत्मीयजनवियोग
१₹ ₹ रचना-निपुणता इत्यादि
१४१० विद्या में पारङ्जत इत्यादि
१६ $\in$ मातृ-पितृ वियोग इत्यादि
१७ ₹ स्तीवियोग इत्यादि
१५ € सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठा इत्यादि
१€ $₹$ विधवा
२० ₹ सधवा

वित्र रेखा फल
गणिन्नस्दरेखाफलम्न
? \& ज प परिचया
२ ₹ २ ३ धन, शास्त्र, भक्ति
₹ ६ परिश्रम से द्रव्याप्ति
¢ ? (त्रिकोण) परधनप्रासि
१० १ आलसी, दरिद्र
११ ₹ पापी इत्यादि
१२ १ द्वीपान्तर यान्रा
१ ₹ ใ द्वीपान्तरयात्रा में मृत्यु
१\% ? अनायास धनप्राप्ति
१५ $?$ दूसरे की सहायता से धनप्रासि
१६ ₹ भाग्यहीन
१६ ? विधवा
२० ? सघवा
अथ श्राइन दिविविधरेसनिचार
₹ ₹ गह्बन्बेखाविचार
₹ € चक्रविचार
₹ ?० सीपविचार
१\& \& पर्वविचार
\& $\in$ पर्वविचार
द ज पर्वविचार
२ $£$ ललना (स्त्री) रेखाविचार
२ १० भ्रातृभगिनी रेखाविचार
₹ १? १२ सन्तान रेखाविचार
१₹ \& पुस्र-पौन्रादिविचार
१६ ज़ हिंसारेखाविचार
१०० हिसारेखाविचार
₹ ज हिंसारेखाविचार

चित्र रेषा
१६ ₹ भात्रु-मित्र बिजार विद्या्रद-रेबाबिचार उत्तरार्द प. १द्ध स्लोक ₹२, ३ः मंहिला (स्वी) अर्य ह्वनयोग उ० पृष्ठ १६र क्लोक ३४
\& $७$ परदारायोग
₹ 8 (डमरू) याब्नावृत्ति, वज्ञ कुम्भ, रेबाविनार उत्तरार्दी पृष ई६ट श्लोक ३४-३द
$\epsilon \leqslant \in$ (स्ूर्यनन्द) यश्न-अपयशवि. 5 यझ-अ-अपवश्राविचर \& \& (मकर-रेखा) अगड़ातू अन्यमत से घनी। (योगावली)
१० ₹ भगबदाराधनायोग १६ ₹ भक्तियोग
Pज ?० भविष्यद्यक्ता का योग
१६ २ त्रिकालझयोग
iv ? (योग्रेखा) योगी का योग
it ? जनिस्थान में त्रिकोण होने से योग में किशेष मीरख प्रान्तहो, उत्तरार्द्दृष श७० ह्लोकई प।
१२ $\in$ श्रेषपदलभभयोग
१० ?० परसम्पत्तिलाभयोग
१\% 9० विद्यापारक्ऩयोग-
(िखिता अ या बहु कूट, ग्वप्ड, कुठार, कूर्म से) धनकष्ट पृष्ठ १७) म्लोक $f 1$

वित्र र्वा फल
११ ११ द्रबमनाश योग
१११० विवाइ से धनप्रास्ति योग (कष्कर विवाह पृष्ठ१ज: फ्लोक१२)
१४ ६ अनेकभार्यायोग।
98 ं स्नीवियोग।
विवाहविचार तथा दाग्मत्य
जीवन, उत्तरार्द्ध पृष्ठ १७३
१४ ₹ $₹$ कारागगरयोग।
१ ₹ ₹ फॉसीयोग
१५ ३ आत्महत्यायोग
१₹ जल्पमृन्यु योग
₹ $६$ अकालमृत्युयोग
if $७$ अल्पायु
$\checkmark$ तीर्थमृत्यु (दीर्घायु, मध्यायु, अल्पायु विचार, उत्तरार्ब पृष्ठ

₹ $७$ अरिष्ट विचार, पृष्ठ पद विफेष ब्याब्या उत्तररार्द्ध पृष्ठ

१₹ 5 व्यभिचारोग।
?₹ 8 परधर्मग्रहणयोग
? $ง$ () भाग्योदय योग
१२ ६ जलमग्नयोग
१६१० सुखमयनीवन
(चित्रफरिच्य-たिप्मणी दूकी)
रेखाओं का माप (नाप) पृ०? २ज
५ ऽ ग्राम और काननरेखा।
(नवीनरेबाओं का उदय)

## 4

## वित्र रेका <br> （समान रेखा，समान रेबा

 कटी नहीं कही जाती，पृ．२६） （आवश्रयकसूचना पृष्ष२乡－ २ง）（चूर्णिका पृष्ठ२६） （विशेषस्तनका पृष्ठः）
१२ ७ मीलरेखा पृष्ठ२६।（पन्व－ रेंखाज्ञान（नोट）पृष्ठ३） （सांकेतिक सामुद्रिक पृष्ठ そと，₹७，३६）
१६ \＆अयुरेखा में यनफल।
（द्वान्तिशत् ३२लक्षण，पृ．४१）
चक्रवर्तीलक्षण，घन
（संख्या－ज्ञान पृ．४३）
（नारद－का कहा हुआ रेखा देखने का प्रकार पृष्ठ३७） （नोट पृष्ठ४ᄃ）
（सशीपुरखों का धुराशुभ बोधकचक्र पृष्छะ～）
परिभाषोक्त शेष रेखा प्रच्ची
₹ ₹（मत्य रेखा）सबका स्वामी
२० ₹（मत्य रेखा）सधवा
－（बण्ड）पण्प्डितश्रेष्ठ
（9）（खत्）पुख्वश्रेष्ठ
－$\in$（तर）पष्डितथेष्ड
१ง 5 （तुरग）राजलक्मी इ०
१० $\in$（वृष्म）कृषिकर्म में निपुण इ०（मन्दिर त्रिकोण को ही

चित्र रेखा फलन
मन्दिर कहते हैं परिभाषा प्रकरण पृ．२）
8 ᄃ（पुष्करिणी）पुरषश्रेष्ठ
$8 €$（अादर्श）सवश्रेश्ठ
8 १०（आलबाल）दखि
8 १？（अहि，）शन्तुवृद्दि
द．（कानन）उत्तमप्रकृति
द १०（कुठार）अत्यन्त दु：खी
६ १०（ग्राम）सम्पत्तिशाली
१₹ ₹（जाल）ब्यभिचारी इत्यादि
१२ ७（गेल）मण्डलाधीक्वर
१५＜（पर्）तीर्थमृत्यु
२६ \＆（पक्ष）
११ $=$（करे०）कल्याणययुक्त
११ $€$（घट）राजलष्ष्मी इत्यादि $\epsilon \mathfrak{q} \circ$（वीणा）पुर्षश्षेष्ठ
२ १२（यव स ङुष्ठमूलमें）सन्तानयुक्त २ १३（अट्डुच्छोदर में यब）यमस्बी， पकी，तोमर，बाप，नदी，कूर्म， उपवीत क्त्यादि अनेक रेखायें हाथ में होती हैं，जो गुरुपरम्परा क्ष्टेव प्रसाद से जानी जाती है। प्रंयविस्तार भय से इनके रूप－स्पनादि नहीं दिबलाये जा सके। अति शम्।

चित्रेर्बाओ के बाद ललाट－ सम्बन्धी－विचार तथा भालचित्र यथा－ वकाण दिखाये गये हैं।

| होगाय नम: |  |
| :---: | :---: |
| विष्या: दूष्न\| | निष्या: |
| सामुद्रिक-रहस की विशेषषता च | अथ प्रमदालक्षणविशेष: |
| मझ्ञलानरणम् पद | स्र्नीसशिखदर्णनम् ७? |
| केशावर्णनम, ललाटवर्णनम् $\xi_{0}$ | प्रमदाकराह्रुष्टरेबादि ल०वि०७४ |
| ध्रूर्णनमे, गे ग्रवर्णनम् ६? | ज़ारीर्रमाजग् |
| नासिकावर्णनम् ६? | विशेषाद्नशुभाड्रुभवर्णनम् |
| पुम्मसूरिकावर्णनम् ६? | तिलवर्णनम् |
| स्रीमरूरिका,आननवर्णनम् ६२\| | पशक्लक्षणम् |
| ओष्ठर्णनम्, दत्तवर्णनम् ६३ | साधारणमृगलक्षणम् |
| स्वरवर्णनमे, ग्रीवावर्णनम् ६\% | फलज्य |
| कृकाटिकारकम्धहृद्ययवर्णनम् ६४ | प्रथममृगलक्षणम् |
| बाहुवर्णनम, हुसा局लीलक्षणमุ $¢ ¢$ | द्वितीयमृगलक्षणम् |
|  | तृतीयमृगलक्षणम् |
| करतलवर्णनम, तबवर्णनम् ६६, | चतुर्थमृगलक्षण |
|  | उुरगतृष्भपक्टतिलक्षण |
| कररषावर्शनम् ६ษ | चिन्नानि $¢ €$ |
| आयुरोषावर्णनम् ६ヶ | वृषभसामान्यभेद: $\ddagger$ |
| वर्षकल्पनाप्रकार: हृ | प्रथमतुरगभेद: $\quad$ ¢ |
| बलिलभणग् दू | द्वितीयतुराभेद: $\quad$ § |
| नाभिलक्षम् द¢६ | वृतीयतुरगभेद: $\frac{4}{}$ |
| प्रक्षकणम्, कटितक्षणम् ६¢ | बतुर्युगणभेद: दे\% |
|  | एवं वृष्पपुखषाणाम - $\ddagger$ ¢ |
| ऊरस्वर्णनम, पषलक्षणम् ט०- | पथिनीलकणम् |
|  | चित्रिणीसामान्यभेद: |


|  | पृष्प्म |  | ［ |
| :---: | :---: | :---: | :---: |
| דचित्रिरीलक्षणम् ？ | 90 | रेखापरिमाणम् | १२ |
| याचित्रिणीलक्षणम् |  | भाग्यरेखामानज्ञानम् | २．5 |
| तीयाचित्रिणीलक्षणम् \％ | \％ 0 | रेखादर्शनविचार： | ？\％ |
| चतुर्थचित्रिणीलक्षणम् ？ | 20 ${ }^{\text {\％}}$ | नियमान्तरम् | ३。 |
| हस्तिनी प्रथमो भेद：？ | 20\％ | फलकयनप्रकार： | १ ३० |
| हस्तिनी द्वितीयो भेद：？ | 20u | अबलासु विशेष： | \％३ 0 |
| हस्तिनी तृतीयो भेद：？ | 905 | रेखालंघनविचार： | ？₹ |
| स्तिन्याश्रतुर्यों भेद： | ？Oも | अनिष्टफलकथनप्र | १ ३ २ |
| त्व्बनीनां जीवनचरित्राणि？ | 9 | सामान्यशुभाऽशु | १ ३ |
| अथोद्वाहे मेलापकविचार：？ | १२२ | जतकाभरणाक्तराज | ？${ }^{\text {\％}}$ |
| बालकानां सामुद्रिकचिह्नानि ？ | १ ？ 8 | पुष्यरेखाविचार： | १ ३ |
| अथ बालाडरिष्टविचारः ？ |  | आयुरेखाविचार： | १8\％ |
| लक्षणम् ？ | ११६ | मगतररेख | 9\％ |
| क्षणम् ？ | ？ 90 | आरोग्यरेखाविच | 985 |
| लक्षणम् ？ | १） 5 | भाग्यरेखाफलम् | ¢8も |
| नरनारीणांपैशाचिकचिह्नानि ？ | १२० | पितृरेखाफलम् | ¢8 |
| चिह्नानि，देवीचिह्नानि पदर्वर्ं समाप्तम | १ २१ | मतान्तरेणायुषां ज्ञानम् मणिबन्धरेखाफलम् | ¢ 8 |
| थ उत्तराद्सम्य विषयाडनुक्रम | सणिका | ｜शंखरेखा | ६ |
| मङ्ञलाचरणम् ？ | १ २ ₹ | क्ररेखाफलम्，सीप | १६？ |
| परिभाषाप्रकरणम् है | ¢ ${ }^{\text {\％}}$ | पर्वरेखाफलम् | ६ २ |
| करतले दिग्ज्ञानम् | १ २६ | ललनारेखाफलम् | १ ६ \％ |
| ग्रहस्थानज़नम्，राशिस्थानानि ？ | १ २ 心 | श्रातृभगिनीबोधकरेख | १६\％ |
| रेखावर्णमुखजानम् | 220 | सत्तानरेखाफलय् | ใ ¢ \％ |


|  | पृष्ष |  |  |
| :---: | :---: | :---: | :---: |
| तथादिबोधकरे |  | बन्दीगृहयोग: |  |
| ारेखाफलम् | ? ¢¢ | प्राणदण्ड (फॉसी) यो | ใง\% |
| पाप-पुप्यसूतकरेबाफलम् ? | १६¢ | आत्महत्यायोगः |  |
| मिन्राडम व्रसूक्करेखाफ्ल | ¢¢¢ | अकालमृत्युयोग: | ט |
| माृृ-पित्रेबाफल | १६¢ | अल्पायुष्ययोग: | \% |
| त्रिकोणरेखाफलम् | १६६ | तीर्थमृत्युयोग: | ¢ 以 |
| विद्यापदरदखाफल म् | १६७ | आयुरेबाविचार: | ใง६ |
| महिलार्थर्दन्नपरदारयो |  | दीर्घायु:रेखाविचार: | १७६ |
| रेखाफलय् | १६, | मध्यमायु: रेखाविचार: | १७६ |
| याञ्यासूपकरेखाफलम् | १६г | अल्पायु: रेखाविजार: | ¢ |
| गयशगरूचकरेखाफल म् |  | अथाडरिष्रेखाविचार: | 9, |
| मेथरपूजनभविष्यदट |  | अल्पाबस्थायां पित्रोर्वियः |  |
| योगाश, भक्तियोग: | १६є | पुरुषब्यभिवारयोग: | put |
| भविषद्दक्तृत्वयोग: | १६̇ | परधर्माउबलम्बनम | ใง¢ |
| त्रिकालजानमू, योगीयोगः ¢ |  | भाग्योदय:, जलम |  |
| उपदलाम: | 9 | ससम्पत्तिसुबजीबनय |  |
| परकीयसस्पत्तिलाभ: |  |  | ? ¢ |
| पूर्णविद्यायोग: धतकष्म, | 9ง? | मासश़भाइध्रुभज्ञानम् | ? |
| द्रब्यना | ¢७२ | तियिग्नुभाश्श भजानम् | ใヶ\% |
| विवाहाय्बनासि | ¢0? | ग्रत्यस्तुतिविज़ापनम् | \% 5 |
|  | ¢ 2 | षश्रार्वंनम | Pry |
| अनेकमार्ययोग: | ใง) | प्रन्यसमातिः | ¢ |
| हविच्तार: | ใ ${ }^{\text {P }}$ | घुर |  |

## 1/शीमझ्नलम्नुर्तये नम:// अथ चित्र-परिचय:

चिन्न नं. ?

१. इस अड्ञ-स्थान को अंगुष्ठ कहते हैं।। मध्यमा।। $४$ अनामिका। $\zeta$ कनिष्ठा। ह।


विषया:
पुत्रपौत्रादिबोधकरेखाफलम् १ ६ ४ हिंसारेखाफलम्

१६
? द̨
? ६६
१ ६ छ
ใ $\xi$
ใ \&
दीर्घायु:रेखाविचार: ใけ६
रेखाफलम्
याक्चासूचकरेखाफलम् यशोडयशसूचकरेखाफलम् १६५ परमेकरपूजनभविख्यद्टन्टियोगाश्ष, भक्तियोग:
भविष्यद्वक्तृत्वयोगः
त्रिकालज्ञानम्, योगीयोग: ? १०
श्रेष्ठपदलाभ:
परकीयसम्पत्तिलाम:
पूर्णविद्घायोग: धनकष्ट्, द्रव्यनाश्र:
विसताब्ननासियोग-
कष्टकरषिवाह:
अनेकभार्यायोग:
विवाहभित्रारः
? ${ }^{\circ}$ ३
qu

##  अय चिच्र-परिचय:

चित्र नं. $p$

१. इस अढु-स्थान को अंगुष्ठ कहते हैं॥ एवं, २ तर्जनी॥ ३ मध्यमा।I $४$ अनामिका। $\&$ कनिष्ठा।। है। 15 इन स्थानों को मणिबन्ध कहते हैं। $\epsilon$ उर्ष्वरेखा अथवा भाग्य रेखा।। १०ितृ या

कर्म रेबा मतान्तर से आयु रेखा" $१$ १ मातृ या शीर्ष रेखा।। १२ आयु या स्वान्त रेखा।। १३ पुण्य या रवि रेखा। १४ परिणय या लंलना रेखा ॥ $\uparrow \stackrel{Y}{ }$ भ्रातृभगिनी सूचक रेखा।। आयु रेखा से मणिबन्ध रेखा तक।। ₹ सन्तान सूचक रेखा उच्चस्थान ।। १७ मेष 11 १ ᄃ वृष $\|$ १€ मियुन॥ २० कर्क ॥२? ॥ सिंह ॥२२ कन्या ॥ २३ तुला। २४ वृश्चिक।। २Ц धन॥ २६ मकर॥ २७ कुम्भ।।२ॅ मीन।। ये बारहों राशि के स्थान हैं।

ग्रहों के नाम का प्रथमाक्षर ग्रहस्थान में दिया है। चित्न नं: ?

' Courtesy Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

## २. चित्राङ्कित रेखाओं के फल-

मणिंबन्ध में पाय: तीन रेखायें होती है, उनमें-
१्ली धन, २ री शास्त्र, ₹री भक्ति का जानना। पृष्ठ $? \stackrel{\text { पे श्लोक }}{ }$ १। इन तीनों रेखाओ में जो रेखा स्वच्छ, सरल, गम्भीर, स्निग्ध हो और छिन्न-भिन्न न हो तो वह रेखा उस विषय के उत्तम फल को देती है। यदि तीन से अधिक रेखायें हों तो दारिक्निय और दुर्भाग्य की सूचना देती हैं। पृष्ठ १५ए ⿹्लोक २।

8 - ऊर्धरेखा- यदि व्यक्त और अविच्छिन्न हो तो राज्य, मान, प्रतिष्ठा को देती है, पृष्ठ १३६ श्लोक रे। यह रेखा मणिबन्ध से लेकर शनि स्यान तक यदि शुद्ध हो तो मनुष्य अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है। पृष्ठ श५० श्लोक २।

द- पितृ मतान्तर से आयु रेखा। मातृ-पित्तृ रेखा यदि परस्पर मिली न हों तो मनुष्य वर्णसङ్ুर होता है। दोनों रेखा यदि टेढ़ी, लम्बी, छोटी और छिन्न-भिन्न हों तो मनुथ्य को माता-पिता का सुख नहीं होता। पृष्ठ १५प श्लोक १।

६-मातृ रेखा यदि उत्तम हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, विचार में निपुण, प्रभावशाली और मानसिक बल से युक्त होता है। विपरीत होने से फल विपरीत होता है। पृष्ठ १४६ श्लोक ?।

७- आयु रेखा या हृदय रेखा। यदि निर्मल और शुद्द हो तो मनुष्य शान्तचित्त और दयालु होता है। पृष्ठ $१ ४$ ? श्लोक ?

५- सरस्वती या पुष्य रेखा। यह रेखा यदि अपने स्थान पर शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य बुद्धिजीवी, धनी, यशस्वी इत्यादि, पृष्ठ ? ३७१३० क्लोक ? में उक्त गुणों से युक्त होता है।
\&- ललना रेखा। अन्य मत में- यह रेखा कुशाग्र और मनोहर हो तो मृग पुरुष को एक रेखा से ₹ और २ से तीन और ३ रेखा से द स्त्रियाँ होती हैं, और तुरग पुरुष को $?$ से दो और दो रेखाओ से $?$ स्त्री होती है। ग्रन्थान्तरोक्त रीति से सुन्दर जितनी रेखायें हो उतना ही विवाह कहना। पृष्ठ १६३ श्लोक १५-१६।

१०- भ्रन्तु-र्भागेनी, बहहिन रेखा। आयुरेखा से नीचे मणिबन्ध रेखा तक मनोहार कर्म-स्थान में जितनी रेखायें हों उतने ही भाई-बहिन कहना। पृष्ठ १६४ श्लोक ?ज।

११- सन्तान रेखा। उच्च स्थान में मनोहर जितनी रेखायें हों उतने ही लड़क्की-लड़के होते हैं परन्तु शुद्ध रेखा होने से दीर्घायु और स्वल्पया छिन्नभिन्न हो तो अल्पायु सन्तान होती है। पृष्ठ १६४ श्लोक १५।

१२- अङुष्ठमूल में यव होने से मनुष्य सन्तान से युक्त होता है। पूर्वर्द्ध पृ. ६६ श्लोक २६, वा उत्तरार्द्व पृष्ठ २६४ श्लोक ः $\curvearrowleft$ की (टिप्पणी)।


Courtesy Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

धनी-मानी और सद्वुणों से युक्त होकर सबका स्वामी होता है। पृष्ठ १ ३६ श्लोक ६। (इसे भाग्यरेखा भी कहिते हैं। क्योंकि भाग्य रेखा ही टेढ़ी होकर हल रेखा हो जाती है।) भाग्यरेखा चन्द्रस्थान से होकर चले तो मनुष्य दूसरे के द्वारा उन्नति प्रांप्त करता है। पृष्ठ १६० श्नोक २।

३- पित्तृ-मातृ ये दोनों रेखायें यदि सुन्दर और स्पष्ट हों तो मनुष्य मातृ-पितृ-सुख से युक्त होता है। ये दोनों जिस वर्ष प्रमाण में कटी हों उस वर्ष में उनके लिये कष्ट कहना। पृष्ठ १५४ प्लोक २।
$y$ - डमरू। इस रेखा से मनुष्य याज्चा (भिक्षा) वृत्ति से अपना उदर-पोषण करता है। पृष्ठ १६₹ श्लोक ₹६।
$ц-$ यह आयु रेखा यदि गुरुस्थान से बुधस्थान तक जाय तो मनुष्य मानसिक पीड़ा और संदिग्ध चित्तवाला होता है। पृष्ठ १ ४ ? श्लोक २।
$\varepsilon-$ सरख्वती रेखा। यह पितृ रेखा मे मिली हो तो मनुष्य फिल्पसाहित्य में दक्ष (कुशल) होता है और लाट्टक विषय में प्रतिभाशाली होता है। पृष्ठ १३० श्लोक २।

७- हिंसा। इस रेखा के द्वारा मनुष्य गो, बालक, स्त्री और धनादि से दु:खी होकर शम्तुओं से युक्त होता है। पृष्ठ १६६ श्लोक २१२२। हिंसा रेखा कई प्रकार की होती है।

## अन्यमत से

(इस ढंग की रेखायें मातृ-पितृ रेखा के बीच में हों तो उस मनुष्य को निकटवर्ती (नगीची) जनों से शत्रुता होती है। यदि बीच में अन्य तिद्छी रेखा से कटी हों तो वह मनुष्य हत्यारा होता है और उसे प्राणदण्ड व देश-निर्वासन का दण्ड्ड मिलता है।

जब हिंसा रेखा कटी हो तथा पुण्य रेखा सुन्दरी हो तो मनुष्य पुफ्यात्मा और यदि पुण्य रेखा न हो या छिक्न-भिन्न हो तो मनुष्य पापी होता है। हिंसा र्स्बा होने पर इसका विचार कर्ना चाहिए , अन्यथा नहीं।

> नोट- वड़ी रेखाओ में एक लम्वे यव का मान 90 वर्ष के बराबर होता है। (हल, अयु, मझतृ, पितृ, उर्धादि रेखाऍं बड़ी कहलाती हैं) पृष्ठ १२२-१२६।
 २-३ तक देखिए।

६- चक्र- इसका भी ? से १० तक की फलश्रुति पृष्ठ १६? श्लोक $8-\xi-\xi$ में देखिए।

१०- सीप- इसका फल पृष्ठ १६१-१६२ क्लोक ज-६-६ में देखिए। चित्र नं. ४


वह मनुष्य श्रीमान् होता है और हाथी, घोड़े, तथा अन्यान्य वाहनों के सुख का उपभोग करता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ६।

२- पितृत रेखा। यह यदि मलिन, छिन्न-भिभ्न हो तो मनुष्य मन्द बुद्धि इत्यादि दुर्गुणों से युक्त होकर दु:खमय जीवन व्यतीत करता है। यही जिस वर्ष के मान में कटी हो तो उस वर्ष में सांसारिक महान् कष्ट या मृत्यु होती है। कहीं-कहीं छिन्न और कहीं सूक्ष्म हो तो वह अव्यवस्थित चित का पुरुष होता है। पृष्ठ $\{\uparrow\}$ श्लोक $8-\zeta ।$

अथवा
(पितृरेखा नं. २, मातृरेखा नं. ३ ये दोनों आपस में मिली न हों और किसी शाखा से युक्त भी न हों तो वह मनुष्य दू घुठा, लालची, अभिमानी, निर्दय और क्षणिक बुद्धिवाला होता है, तथा उसका जीवन कष्ट से च्यतीत होता है)
₹- मातृरेखा। दो हो तो मनुष्य अव्यवस्थित चितनालना होता है अर्थात् करी दयालु, कभी क्रूर। पृष्ठ १४७ श्लोक ३।

४- स्वास्थ्य रेखा। यह़ रेखा पितृ रेखा से युक्त हो नो मनुष्य चिन्ता और दुःख से युक्त होता है। यह पितृ रेखा से न मिलकर स्वच्छ हो तो मनुष्य दीर्घायु और बलवान् होता है। पृष्ठ १४२ श्लोक १।
$६$ - स्वान्त या आयु रेखा। यह मातृ रेखा युक्त हो तो मनुष्य लोभी, हिंसक और ठग होता है। पृष्ठ 98 २ श्लोक ४।

६- सरस्वतीरेखा। यह रेखा यदि भौम स्थान तक गई हो तो मनुष्य अति परिश्रमी और परिश्रम से द्रब्य प्रास करनेवाला होला है ाप. १३१-१? ₹प्लो.४।

७- त्रिकोण रेखा । यदि आयु रेखा से युक्त हो तो पुरुष अपने पुरुषार्थसे गृह, भूमि और वाटिका आदि अनेक ऐश्वर्य प्रास कर सुखी होता है। पृष्ठ ? ६६ श्लोक २२।
$\tau-च त ु ष ् क ो ण ~ य ा ~ प ु ष ् क र ि ण ी ~ र े ख ा । ~ ल घ ु च त ु ष ् क ो ण ~ ह ो न े ~ स े ~ व प ु र े ख ा ~$ और बृह सतुख्योण होने से पुष्करिणी रेखा कही जाती है। यह जिस प्राणी के हाथ में होती है वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सबका स्वामी होता है। कुलनुमान से इसका विचार करना उचित है। पृष्ठ १३६ श्लोक ४।
$t-$ आदर्श रेखा। यह किसी बड़ी रेखा से मिले तो डमरू अन्यथा आदर्श जान्ना चाहिए। जिस पुरुष के कर-कमल में यह रेखा विद्यमान हो तो वह निजकुलानुसार पृथ्यी का स्वामी और सब में श्रेछ होता है। पृष्ठ ११६ झ्लोक ५।
$१ ०-$ आल-बाल. रेखा। करमध्य में यदि यह रेखा हो तो मनुष्य दु:ख़ी और दरिद्री होता है। पृष्ठ १२४ पंक्ति ११ परिभाषा प्रश्न में।
$१ १-$ अहि रेखा। जिस मनुष्य के हाथ में यह रेखा हो वह शत्तुओ से युक्त होता है। पृष्ठ १६५-१६६ स्लोक २४। चिज्न नि:द

## घ. चित्र परिचय-

१- करवाल, रेखा। उर्ध्वरेखा यदि टेढ़ी, मोटी और कुशाग्र हो तो करवाल होता है। जिसके करकमल में यह रेखा सुशोभित हो वह प्राणी कुलानुसार प्रतापी और भाग्यशाली होता है। पृष्ठ $१$ ३ $५$ इलोक $\zeta ।$

२- पितृ रेखा । यह रेखा लम्बी हो तो मनुष्य प्रतिज्ञा शून्य और च़्वल होता है। पृष्ठ ₹ \& 8 श्लोक ३।
(अथवा जिसके हाथ में पितृरेखा तलवार के सदृश टेड़ी होकर नीचे की ओर झुकी हो तो वह पुरुष प्रतापी, विजयी तथा दीर्षजीवी होता है।

३-मातृरेखा शृर्ब्रलाकार हो तो मनुष्य प्रतिज्ञाशून्य और चज्चल होता है। पृष्ठ शच्छ श्लोक रे।

8 - सरस्वती रेखा सूर्य स्थान से चन्द्र स्थान तक जाय और मातृ रेखा भी शुद्ध रूप से चन्द्र स्थान लक जाय तो मनुष्य पद्यरचना में निपुण और कवि होता है। पृष्ठ १ ३ॅ श्लोक ३।

५- स्वान्त या आयु रेखा। यह रेखा यदि मलिन और शृद्बन्लाकार हो तब मनुष्य धूर्त और ठग होता है। पृष्ठ 9.8 श श्लोक ₹।

६- अंगुष्ठोदर में मकर रेखा के होने से मनुष्य कगड़ालू होता है। पृष्ठ १६ऽ क्लो. ३६ $\frac{?}{₹}$ किसी के मत से धनी भी होता है। पूर्वार्ध पृ. ६७ श्लो. ३फ।

७-जार रेखा। ललना रेखा के ऊपर तिर्र्यग्गामिनी रेखाओं को जार रेखा कहते हैं। इस रेखा के होने से मनुष्य परंस्त्रीगामी होता है। पृष्ठ १ ६५ घ्लोक ३ं४।

द- कानन * रेखा के उत्र स्थान पर होने से मनुष्य उत्तम प्रकृति का होता है, अन्य मत से समझना।

* ग्लोक्-मामरेखा सनाएथो कै पुरुषो बहुद्रन्यकान् । काननाँक्षूतो मत्त्यः लभते घक्टकतिं शुर्याम् 11 शी। पुंसां पार्णौ डुला स्यासेद्व वण्जिजां चृत्तिश्रारका: । कृष्विकर्मदु निपुण: पुर्षा: दृषभांकिता: ॥२॥ नोट-जिन रेखाओ के मूल शलोक ग्रन्ध में अवशिष्ट रह गये हैं, उनको यथावकाषा टिप्रणी में दिया जायेगा।
?
£-पर्व रेखा। मनुष्यों को चारों अंगुलियों में ऊर्ष्वगामिर्ना जितनी रेखगएँ हों संख्यानुसार उनके पृथक् २ फलों को श्लोक १०-११-१२-१३-१४ पृष्ठ १६२ और १६₹ में देखना।

१०- कुठार रेखा। इस रेखा से मनुष्य अत्यन्त दु:खी होता है। पृष्ठ १₹₹ पंक्ति १५।
(इस रेखा के रहने से मनुष्य स्री, पुत्र, धन, मान, प्रतिष्ठादि से हीन होकर दुःखमय जीवन ब्यतीत करता है)। चित्र नi: ६


## ह. चिन्न परिचय-

१- चाप रेखा। जिसके कर व चरण में यह (धनु) रेखा विराजमान हो वह मनुष्य ऐप्वर्यशाली होता है। पृष्ठ १₹६ श्लोक ६। २- पित्रेखा के लघु वा भन्न होने से मतुष्य की आयु अल्प होती है। पृष्ठ १५५ श्लोक छ।

३- मातृरेखा। जिसके हाय में यह छोटी २ रेखाओं से छिन्नभिन्र होती हुई मणिबन्ध तक चली जावे तो वह मनुष्य आत्मघात करता है। पृष्ठ १४ज श्लोक ४।

8 - स्वास्थ्य रेखा। जिसके हाथ में यह रेखा मध्य भाग से चले वह मनुष्य बुद्धिमान्, वाचाल और चपल होता है। पृष्ठ १४ॅ श्लोक २।

५- सरख्वती रेखा। शुद्ध हो तथा मध्यमा और अनामिका दोनों बराबर लम्बी हों तो मनुष्य जुआ और व्यापार में चतुर होता है। पृष्ठ १३६ क्लोक द।

६- मातृरेखा में त्रिकोण होने से मनुष्य मातुकुल (ननिहाल) की सम्पत्ति को प्रात्त करता है। छोटा कोण हो तो स्वल्प और बड़ा त्रिकोण हो तो अधिक सम्पत्ति का द्योतक होता है पृष्ठ १ ६६-१ ६७ फ्लोक २६-३०।

ज- तुला रेखा। यह रेखा जिस मनुष्य के हाथ में हो वह व्यापारी और धनी होता है। स्री के हाय में यह रेखा हो तो वह बनिया की स्री होती है। पृष्ठ ज५-७६ क्लोक २६ पूर्वार्द्ध।
$\tau$ - माला रेखा। यह रेखा जिस मनुष्य के पाणि मध्य में विराजमान हो वह ऐखर्वर्यशाली तथा मतान्तर से भक्त होता है। पृष्ठ १३६ क्लोक $\downarrow 1$

## मूघना-१ . मन्तुष्यों के हाथ में प्रायः दो-तीन वर्षों में नूतन

 छोटी छोटी रेखायें उदित हुआ करती हैं। ये भावी विशिष्ट जुभामुभ फलों को दर्शाती हैं।२. समान रेखा से समान रेखा कटी नहीं कही जाली। जैसे ऊध्वरेखा से मातृ आीर आयु रेखा तथा दुण्य रेखा से आयु मातृरेखा डत्यादि। उंदाहरण चिच $€$ नें. २ रेखा से नं. 81 ६ मावृ और द्वसय रेखा कटी नहीं कही जा सकती।

20
€- रथ रेखा। इस रेखा के द्वारा मनुष्य राजसुख़ का उपभोग करता है। पृष्ठ ?ै३ह श्लोक ६।
$9^{\circ}$ - ग्राम * रेखा के होने से मनुष्य सम्पत्तिशाली और धनी होता है अन्य मत से।

११- स्वान्त रेखा। शाखाओं से रहित होकर शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य अल्पायु होता है। पृष्ठ १४२ श्लोक दे। चिनデ 6


* चित्र द की टिप्पणी में देखिए।
७. चित्र परिचय

१- गज रेखा। जिस मनुष्य के हाथ में यह रेखा सुशोभित हो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और महान् ऐश्वर्यवाला होता है। पृष्ठ १ ३द् श्लोक ४।

२- पितृ रेखा। मणिबन्ध से उठकर शुद्दरूप से गुस्थान तक चली जाय तो मनुष्य उच्चाभिलाषी, दीर्वजीवी और अनेक सत्र्रतिष्ठा प्राप्त कर कृतकृत्य होता है। पृष्ठ १५६-१५६ श्लोक ६-ज।

३- मातृ रेखा। दो खण्ड होकर एक शाखा चन्द्रस्थान तक जावे तो मनुष्य के अभीष्ट की सिद्धि होती है- इसी रेखा का शेष भाग टेढ़ा होकर सिन्धु स्थान तक जाय तो मनुष्य कस्पना-शक्ति में दक्ष और गुप्त विद्याओ का ज्ञाता होता है। पृष्ठ $₹ \%$ श्लोक दू।

8 - पुण्य रेखा। जिस मनुष्य के कर-कमल में यह रेखा स्पष्ट हो, बुध और गुखस्थान उत्च हो तो उसकी प्रतिष्ठा, भाग्य तथा बुद्धि की वृद्धि होंती है। वह शास्त्र परिशीलन में निमग्न रहता है। पृष्ठ ?३६ फ्लोक ६। क्- पितृ रेखा में त्रिकोण। जिस मनुष्ये के पित्र रेखा में त्रिकोण हो वह पैँृृष सम्पत्ति का अधिकारी होता है। पृष्ठ ? ६६, क्लोक २६।

६- आयू या स्वान्त रेखा। यह रेखा अनामिका के मूल से उठे और सूक्ष्म हों ती मनुय्य सदा कष्ट से युक्त और अधिक परिश्रम से द्रव्योपार्जन करता है। पृष्ठ १४४२ श्लोक ६।

७- दप्ड रेखा। यह रेखा जिसके करतल में हो वह राज्य-शी का भोगने वाला और पण्डितों में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ १ ३६ श्लोक ज।

ᄃ- छत्र रेखा। यह रेखा हाथ में हो तो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सबका स्वामी होता है। पृष्ठ १३५ श्लोक ४।

वाहा सामुद्दिक- मनुष्यों की आयु का चार भाग कर प्रथम भाग में माता-विता सम्बन्धी, द्वितीय भाग में स्ती, पुत्र, विद्या इत्त्यादि सम्बन्धी, वृतीय भाग में राज्य सम्बन्धी (नोकरी, मान, प्रतिष्ठा क्षत्यादि), चतुर्थ भा़ग में पुत्र पौत्रादि सुख, कीर्ति, तीर्थाटनादिका, णुभाशुभ फल, शुभाशुभ रेखाओओ के द्वारा वर्णन करना समुचित होगा।

## २マ

$t$ - तर रेखा। इस रेखा का फल दण्ड रेखा के समान होता है। पृष्ठ १३६ श्लोक ज।

१०- हिंसा रेखा। इस रेखा के हाथ में रहने से मनुष्य धन, पुत्र, स्री से दु:खी रहता है, इसका फल शान्तिपूर्वक कहना चाहिए। यह उन्चस्थान में होने वाली रेखा हिंस्वनगग से प्रसिद्ध है। पृष्ठ १ ६६ प्लोक २०-२१-२२।
(हिंसा रेखां अथवा
कियेग रांक होने से मनुष्य के सामने ही बहुत प्राणियों का वियोग होता है। इस दुष्ट रेखा के द्वारा बहुत नेष्ट फल कहा जाता है।) चिन्न नं: 5


## ६. चिन्न परिचय

१- भाग्य रेखा मणिबन्ध से लेकर मध्यमा अद्नुली के मूलपर्य्यन्त शुद्यरूप से विराजमान हो तो मनुष्य सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त होकर भाग्यशाली होता है। पृष्ठ १५० ज्लोक २। भाग्यरेखा सरल और शुद्ध हो तो मतुष्य का सम्पूर्ण कष्ट शीष्र नष्ट होता है। पृष्ठ १५२ श्लोक $\mathrm{\epsilon}$

२- पितृरेखा से कोई रेखा उठकर शुद्धरूप से शुक्तसान तक जाय तो मनुष्य किसी स्त्री का उत्तराधिकारी होकर सम्पत्तिशाली होता है। पृष्ठ ३६६ श्नोक ज-६।

३- स्वास्थ्य रेखा मातुरेखा से युक्त होकर त्रिकोण बन जाय तो मनुष्य कीर्तिमान्, गुत्रविद्याओं का ज्ञाता, देवी बुद्धिकाला तथा प्रभावशाली होता है। पृष्ठ शे४ श्लोक ३।

४- सरस्वती रेखा पुष्ट हो और ग्रहों के स्थान नीच हों तो मनुष्य दूसरे का धन पाता है। पृष्ठ श४०- श्लोक ज।

4 -आयु- (स्वान्त) रेग्रा जिस भनुष्य के हाथ में न हो तो वह प्राणी कपटी और स्वाभाविक दुर्दृत्त होता है। (कुछ लोगों का कथन है कि इस रेखा के न होने से मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। परन्तु प्रायः देखा जाता है कि इसके बिना भी प्राणी जीवित रहते हैं। किन्तु इसके न रहने से वे कपटी और दुराचारी ही होते हें)। पृष्ठ १४३ श्लोक ७।

६- मणिबन्ध की तीनों रेखायें यदि शृद्वन्लाकार हों तो मनुष्य परिश्रम से द्रव्य प्राप्त करता है। पृष्ठ $२ \& \tau$ श्लोक २-३।

ง- पर्व रेखा। अड⿹勹ुलियों में पर्व रेखा की संख्याओं का फल € से २१ रेखा तक पृथक् २ चित्र ६ नं. $€$ के अनुसार समझना। यह रेखा ऐसी भी होती है।

वानट समुदिक-दिन तथा रात्रि के समान मतुष्यों के सुख के बाद दुःख, दुःख के बाद सुख का प्राय: $\epsilon$-७-३-२ वर्षों में परिवर्तन होता है, जो रेखा तथा लक्षण द्वारा जाना जाता है। पूर्वार्द्ध में ४ प्रकार के पुरुष, 8 प्रकार की स्त्रियों के शुभाशुभ वर्षों का निर्णय हो चुका है।

६- जिस मनुष्य का अङुष्ठ यव रेखा से शून्य हो वह मनुष्य यशहीन होता है। पृष्ठ १ ६ट श्लोक ३ ६।
(यदि अंगुष्ठमूल में तगम्रवर्ण यव रेखा हो तो मनुष्य धन से युक्त होताहै, और अंगूली का सम्पूर्ण पर्व लम्बा हो तो मनुष्य पुत्र करके युक्त होता है।।
f- वेदी रेखा। यदि उच स्थान (अंभुष्ठमूल) में शोभित हो तो मनुष्य अन्निहोत्री होता है। पूर्वर्द्ध पृष्ठ छैज श्नोक ३५। चित्र नं:


## 5．सिक्र करिचय

१－मणिबन्ध रेखा में यदि त्रिकोण हो तो मनुष्य दूसरे का धन，प्रतिष्ठा और सम्मान ग्रास करता है। पृष्ठ १५६ फ्लोक ४।
（यदि मध्यमा अंगुली अयबा अंगुष्ठ में ताप्रवर्णका पूर्ण यव हो या तर्जनी तथा मध्यमा में चद्र．चिह्न हो तो मनुष्य को अनायास दूसरे का धन प्रात होता है।）

२－भाग्य रेखा मणिबन्ध से लेकर सूर्यस्थान तक हो तो पुरुष फिस्प（कारीगरी），काव्य तथा नाटक के द्वारा उम्नति प्राप्त करता है। पृष्ठ १द० क्लोक ३।

३－यह आरोग्य रेखा को स्पर्श करती हुई अधोमुखी होंकर चन्द्रस्थान तक जाय तो प्राणी मूर्ख हो जड़ताकश द्यूत या कलह के द्वारा सम्पूर्ण सम्पत्ति शोड़े काल में नष्ट कर देता है। पृष्ठ १६६－ १दे क्लोक E －१०।

४－यह्ट आरोग्य रेखा से मिलकर त्रिकोण बनाती है।
$५$－स्वास्थ्य रेखा，भाग्य तथा मातृरेखा से मिलकर त्रिकोणाकार होने से मनुष्य स्वाभाविक भविष्यवक्ता तथा अलौकिक कार्य करने वाला तत्त्वज्ञानी होता है। पृष्ठ १४४६ फ्लोक ४।

६－आयुरेखा के गुरु तथा शनिस्थान के बीच में होने से मनुष्य जन्मभर सौभाग्यशाली होता है। पृष्ठ १४३ श्लोक 5 ।

७－पुण्यरेखा के ऊपर यदि तारक चिन्न्न हो तो मनुष्य बान्धव के द्वारा अर्यलाभ करता है। पृष्ठ 980 林市 ち।

आवस्यक हूचना－१ श घस ग्रन्प में अवान्तर मेद के साथ शशकादि चार प्रकार के पुरूप। पय्यिन्यदि चार प्रकार की स्ती जाति द्वरा फलनिरूपण－ संकित नम्बमिख वर्णन तथा रेखाकों के द्वारा शुभाशुर फल्ल कहा गया है।

प्रायः एकदेशेशीय फल यधार्य नहीं घटते जैसे नख़्रिख प्रकरण के मसक वर्णन में उक्त＇कपोले बहुपुत्रक：＇छसी वाक्य को लेकर फल में बहुत सन्तान वाला न कहना षाक्किए किन्तु रेखा के द्वारा भी सन्तानयोग निश्चित कर लेना चाहिए। ＂

## २द

ए- चन्द्र या $€$ सूर्य-रेखा कर मध्य में जिसके हों वही प्राणीयशस्वी होता है। पृष्ठ १६५ फ्लोक ₹६।
$\leftarrow$ - वीणा रेखा जिस प्राणी के ह्राथ में शोभती हो वह स्ती पुरुषां में श्रेष्ठ और सब का स्वामी होता है। पृष्ठ १₹द क्लोक 81 चिन्न नें

१- मपिबस्ष की तीनों रेखाओं के छित्र-भिम्ध होने से मुग्य दरि, आलसी और निर्चोगी होता है। पृष्ठ २५€ क्लोक 81

२- भाग्यरेखा मध्य भाग से उठकर बुधस्थान तक जाय तो पुरुष शास्त्र और विज्ञान विषय का उपदेश करता है। पृष्ठ १५० श्लोक ₹।

३- फ्तिरेखा से कोई रेखा उठकर अधोमुस्री होती हुई चन्द्रस्थान तक जाय तो मनुष्य के शेष जीवन में उसके द्रव्य, स्त्री-पुत्रादि का विनाश जानना। पृष्ठ १६६ श्लोक ६-६।

8 - मातृरेखा लम्बी और सूष्ष्म हो तो मनुष्य विश्वासरहित और धूर्त होता है। पृष्ठ ? \& ह क्लोक २।

4 - स्वास्थ्य रेखा यदि किज्चित् रक्तवर्ण (गुलाबी) हो तो मनुष्य प्रमोदप्रिय और निरोग रहकर सुख्सादि का अनुमद करता है। पृष्ठ १४ट घ्लोक ? ।

६-आयुरेखा शुद्ध न हो तो मनुष्य अस्मायु होता है और हृदय की पीड़ा से उसकी मृत्यु होती है। यही प्रत्येक स्थान में कटी हो तो मनुष्य


1- सरस्वती रेखा बहुत रेखाओं से युक्त हो तो शिल्प-विद्या में निपुण होने पर भी द्रब्य प्रासि की जेष्टा मनुष्यों की विफल हो जाती है। पृष्ठ श४० क्लोक ज।

ᄃ- यह तुरग रेखा जिसके हाय में हो वह अखण्ड राजलक्ष्मी का भोगनेवाला और पण्ड़तों में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ ? ३६ क्लोक ज।
€- यह वृषभ * रेखा जिस स्री के हाथ में हो वह वणिक्पत्नी होती है। मनुष्य के हाय में हो तो कृषि-कर्म में निपुणं होता है, पृष्ठ ७६-७६ क्लोक २६।

आनस्थक हूचना-साधारण मृग पुरुपों को पॉंच भाई, पाँच पुत्र, दो स्त्री इत्यादि फलों का वर्णन है परन्तु चित्रिजी ख्ती के साथ द्रनका सम्बन्ध होने से उक्त फल ययार्य कटते हैं, अन्यथा फल में अन्तर पड़ जाता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ प० में मेलापक विषार देखिये। अतः लक्षण तथा रेखा का मिलान करते हुए विसारपूर्वक फल कहना श्रेयस्कर होगा। लक्षण से रेखा प्रघान मानी जाती है।

* जित्र $६$ की टिप्पणी में देखिए।

१०- अपरा पितृरेखा होने से मनुष्य दूसरे की सम्पत्ति प्रतः करता है। पृष्ठ quq झ्लोक v।


१- मफिबन्ध की रेखा छिल्न-मिन्न छो और ऊर्ष्वरेखा इससे मिली हो तो मनुष्य पापी, दुष्टात्मा, मिय्यामाषी और अहंकारी होता है। पृष्ठ $? 4 \subset$ फ्रोक $\downarrow ।$

२- भाम्यरेषा तथा अनामिका उत्तम (सरल, सूक्ष्म, सुन्दर) हो

तो मनुष्य शिल्प शास्तों में अत्यन्त चतुर होता है। पृष्ठ १५० श्लोक ४।
३- पितृ रेखा।
४- मातृरेखा। यदि इस प्रकार चौड़ी और कृष्णवर्ण हो तो मनुष्य लोभी, उदररोग युक्त और आलसी होता है। पृष्ठ १ ४६ श्लोक २।

५- स्वास्थ्य रेखा। यह रेखा चन्द्रस्थान तक चली जाय तो मनुष्य अव्यवस्यित चित्त का और प्रमेह रोगवाला होता है। पृष्ठ १४ष श्नोक ४।

६- स्वान्त रेखा। इसकी दो शाखाओं में एक शनि और दूसरी गुरूस्थान तक जाय तो मनुष्य धर्मोन्मादी होता है, और उसका श्रम विफल होता है। पृष्ठ ₹ ४इ श्लोक है।

ज- पुण्यरेखा को $(+)$ घातािए स्व स्प करे तो मनुष्य निरन्तर धर्म में श्रद्वा रखता है। पृष्ठ 980 श्लोक 51

5 - कररेखा होने से मनुष्य कल्याण युक्त (सर्व सुख से युक्त) रहता है।
$E-$ घट रेखा। इस रेखा से मनुष्य अखण्ड राजलक्ष्मी का सुख भोगनेवाला और पण्डितों में श्रेष्ठ होता है। पृष्ठ ? ₹६ श्लोक ज। श०- भाम्यरेखा, त्रिकोणयुक्त हो तो मनुष्य को अनायास धन मिलता है। पृष्ठ १द्ज श्लोक ३०।

११- शुकस्थान से कोई रेखा उठकर पितृ-मातृ और स्वान्त रेखाओं को भेदन करे तो आत्मीयजन तथा माता-पित्ता का उसी वर्ष-प्रमाण में वियोग होता है। पृष्ठ १६७ ज्लोक १०-११।
चूर्मिका: ?- विनाशयुक्ताश्र कुतः फलानि ?।
२- कुषाग्ररेखाशश्य कुतो दरिद्रता ?।
३- मूलं निहत्याडन्र कुतः सुखी स्यात् ?।
8- विनाशयुक्त अर्यात् छिल्न-भिम्न रेखायें अपने शुभ फल को नहीं देती हैं।女- कुश के समान अग्र भागवाली सुन्दर रेखाओो के रहने से मनुप्य दरिद्र नहीं होते हैं।
\&- मूल (भाग्यादि च्रुभ) रेखाओ के न होने से मनुष्य सुखी नहीं रहते।

३- मततृरेखा पितृरेखा से युक्त न हो तो मतुष्य अनेक रूप धारण करता है और वक्ता, आत्माभिमानी, क्षणिक बुद्धिवाला, कार्यसक्त, पृथक् विचारवाला होता है। पृष्ठ १४६-१४७ श्लोक २-३।
$y-$ यह रेखा यदि गुरुस्थान तक न गई हो तो मनुष्य द्रव्य से रहित होता है। पृष्ठ १४₹ श्लोक ६।

५-- सरस्वती रेखा में यदि ग्रिकोण चिह्न हो तो मनुष्य निश्चय ही उत्तम कारीगर होता है। पृष्ठ १६७ श्लोक ३?

ह- सम्पूर्ण अछुलियों के तृतीय पर्य में यदाकार चिह्न हो तो मनुष्य दुराचारी होता है और जल में रूबकर मरता है। पृष्ठ १ ५० क्लोक २१।

勺- शैल*रेखा के होने से मनुष्य कुलानुसार मण्डलाधीश्वर होता है। पृष्ठ १३Ц श्लोक \&।
$\tau$ - स्वास्थ्य रेखा छोटी रेखाओं से युक्त हो तो मनुष्य की अन्नि मन्द रहती है। पृष्ठ १४६ श्लोक ₹े।
€- अनामिक़ा के प्रथम पर्व से तृतीय पर्यतक एक रेखा शुद्ध रूप से हो तो मनुष्य सर्वश्नेष्ठ पद लाभ करता है। पृष्ठ ?७? फ्लोक ६।

* "समा बहुबिन्दव; श्रीलरेखा:"।

एक ही स्थान में छोटी-छोटी बहुत रेखा होने से भी शैलरेखा कही जाती है।

> "अब्ज-रैल-हलभाग्यविहींने हाहेति महिलायै"।

कमल, जैल, हल और भाग्य रेखा के न होने से मनुष्य स्ती के लिये सर्वदा रुदन किया करते हैं।

पृष्ठ १६ऽ श्लोक ₹४ में भी महिलार्य रोदन योग प्रदर्शित है।

## विशेष द्वचना

ज्ञाफ- यत्र यन्नक्रिता रेखा प्रयुक्ताः सुन्दरम्टृतिः ।
तन्न तथावि विज्ञेया: पुक्र-दार-सहोदरा: It श ।।
भाष/- जिन स्थानों में सुन्दर आकृतिवाली रेबाएँ दृष्टिगोचर हों उन रेखायों से भी एत्री, पुत्र और भाई हत्यादि का फल कहा जाता है।

## ३२

चित्र नं: ? ३


नवीन रघना और सुन्दर लेख में निपुण होता है। पृष्ठ १४७ श्लोक ४। 8 - इस रेखा की शाखा घुधस्थान तक न गई हो तो मनुष्य निश्चय सन्तान-रहित होता है। पृष्ठ $? \% \%$ श्लोक $₹ 01$

६-ऊर्ध्व रेखा के समीप कोई खण्डित खड़ी रेखा का उदय हो तो मनुष्य पुत्र-पौग्र से रहित होकर पशुरृत्ति में रत रहता है। पृष्ठ १६४ घलोक $q \in 1$

६- आयु मातृ रेखा के बीच में गुणाख्य चिह्न $(t)$ हो अथवा
S- भाग्य रेखा के समीप ( + ) यही चिह्न हो तो मनुष्य की असामयिक मृत्यु होती है। पृष्ठ $₹ ज \varphi$ फ्लोक $₹$ १।
<- भृगुस्थान में जालं चिह्न, तर्जनी के तृतीय पर्व में तारका (*) चिन्न और मध्यमा के तृतीय पर्व में त्रिकोण $(V)$ हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है। पृष्ठ शै६ श्लोक २०।
$\in-$ परिणय रेखा स्थूल और कुत्तित हो तो विवाह कष्टप्रद होता है। पृष्ठ १७२-१७३ फ्लोक १२।

१०- गुरस्थान में नक्षत्र चिह्न हो तो पुरुष विवाह्ह से बहुत धन प्राप्त करे। पृष्ठ १७२ क्लोक ११।

११- चुक्रस्थान से छोटी-छोटी रेखा उठ कर पितृ रेखा और नोट- फज्वरेसानानम्य
" आयुुः कर्म ष वितें च विध्या निधनमेव च 1

आयु, कर्म, धन, विष्धा और मृत्यु- ये पौंय गर्भ में ही प्राणियों को विधाता रण्ष देतो है। यह्फ साक्य निश्चयात्मक क्षे।

इन्हीं बातों को सूचित करने वाली पॉँच रेखायें हैं, जसे-
२ - सर्वा आयु, २— अविधिक्न कर्म (मातृ-पित्ट), ₹— ऊर्वं; $y$ - सरस्ती, $£$ - निधनानन्त स्थानीय पष्य।

ऊर्ष्ध रेखा $x$ प्रकार की होती है।
१- ऊर्ध्व, २- मत्स्य, ३- मन्दिर, ४- ठल, छस रेखा पउ्वक के हारा प्राणियों का जन्म से मरण पर्यन्त शुभाश्रुभ निरूपण किया जासा है।

भाग्य रेखा को काटती हुई भौमस्थान तक जाय तो मनुष्य अपने हाय से द्रव्य समुदाय को नष्ट कर देता है। पृष्ठ १७२ फ्लोक १०। चिक्न नi. 98


P\%. बनि परचच
?- मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर बुधस्थान तक जाय तो मनुष्य अनायास धन पावे। पृष्ठ १द氏-१६० फ्लोक ज।

२- माग्य रेखा सीधी और शाखाओं से युक्त हो तो दरिद्र मतुष्य भी सम्पत्तिशाली होता है। पृष्ठ २५? क्लोक है।

३- मातृरेखा भग्न और शाखाओं से युक्त न हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, प्रभावशाली, बिचार में निपुण और मानसिक बल से युक्त होता है। पृष्ठ १े४६ इ्लोक ? ।

8- यह्ह रेखा सूर्यस्थान तक जाय और भाग्यरेखा कृश हो तो मनुष्य भाग्यहीन और उद्योग से रहित होता है। पृष्ठ १४४ क्लोक ?०। $\varphi$ - भाग्यरेखा के आदि में यह चिन्न हो तो मनुष्य को घोड़ी


६- शुक्रस्थान में जाल चिह्न और तर्जनी के तृतीय पर्व में नक्षअ्न चिह्न हो तो मनुष्य अनेक स्त्रियों के साथ रमेण करता है। पृष्ठ १७३ झ्लोक ? ३।

७- परिणय रेखा के ऊपर ? जार रेखा का चिह्न हो तो मनुष्य का अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। पृष्ठ १७₹ क्लोक १₹।
₹- घुक्र और औम स्यान में चतुष्कोण (口) चिन्न हो अथवा-
$€$ - हाय की किसी भी अंगुली में चार पर्व हो तो मनुष्य कारागार का सेवन करता है। पृष्ठ श७४ स्लोक १४।
$90-$ गुरु, बुंध और रवि का स्थान उच हो, पितृरेखा से उर्ष्वगामिनी कोई रेखा बृहस्थस्थान तक शुद्ध रूप से जाय तो मनुष्य विद्या में पारंगत होता है। पृष्ठ २७? म्लोक ₹।

संकिसिक सादुर्यिक-
१- हैकारास्यो ककाराश्यां कुत्तो ढु:बी च निर्धनः।
२- टकाराभ्यां चकाराथ्यां वृत्तिपायेन जीवति।
१- दो हकार अर्थात् हल औरे कर (उमए वा चिशूल) तथा दो ककार अंर्थात् कमल कीर करवस रेबा के क्षारा मनुष्य दु:बी और निर्धन नहीं रहता।

२- दो टकार अर्थात् मोरी (जाय सभी स्थूला रेखा) और कुठार रेखा तथा दो चकार, अर्यात् यो चक्र रेखा के होने से मनुष्य नौकरी के द्वारू जीविका करता है।

## ३६

 सामुद्रिकरष्धस्येचित्न नi. p\&


P4. निन करिचम
१- मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर रविस्थान तक जाय तो मनुष्य दूसरे की सहायता से द्रव्य प्रास कर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। पृष्ठ १५ष्दे? ई म्लोक ज।

२- भाग्य रेखा का प्रयम भाग टेढ़ा, घोषांश सीधा हो तो मतुष्य प्रथम दरिंद्र, पीछे धनी होता है। पृष्ठ $१ ५$ १फ्लोक ज।

३- मातृरेखा छोटी होकर शनिस्थान तक जाय तो अकालमृत्यु होती है। पृष्ठ १४६ श्लोक ? ।

8 - आयुरेखा ऊपर से कटी हो तो मनुष्य को पृष्ठ भाग में 干ष्टप्रद द्रण (फोड़ा) होता है। पृष्ठ १४४ क्लोक १०, १-२।

ц- भाग्य रेखा और मातृरेखा में यव चिह्न हो, भाग्य रेखा टेढ़ी भी हो तो मनुष्य का विवाह नहीं होता है। पृष्ठ १५₹ श्लोक ११।
(यदि केवल भाग्यरेखा के मध्य भाग में यव का चिन्न हो तो पुरुष के द्वारा स्त्री और स्त्री के द्वारा पुरुष मोहित होते हैं।) पृष्ठ १ द ₹ प्लोक १ २।
$\xi-$ भाग्यरेखा के आदि में त्रिकोण हो तो थोड़ी अवस्या में मातापिता का वियोग होता है। पृष्ठ ई७६ श्लोक १९।

ט- भाग्यरेखा मातृरेखा को $\bar{\nabla}$ काटकर शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य अल्पायुवाला होता है। पृष्ठ $₹ ज\}-१ ७$ है श्लोक १०।
¢- आयुरेखा के अन्त में यदि कमल का चिन्न हो तो तीर्थ में मृत्यु होती है या वृ巨स्पति और चन्द्रस्थान उत्ष हो तो भी यही फल

€-तीन अट़्ुलियोंमें नौ रेखायें हो और चक्र रेखा भी शोभती हो तो और रेखाओ के विना भी मनुष्यों के सब कार्य बिना प्रयास ही सिद्ध होते हैं। पृष्ठ १६२-१६₹ श्लोक ११)

१- लकाराभ्यां मकाराभ्यां घीलार्णवनरोत्तमः।
१- दो लकार अर्यात् लक्ष्मी (कमल) और लोहित (रक्त) यथा दों मकार मन्दिर और मत्स्य रेखा के होने से मनुष्य शीलसागर होकर नरों में श्रेष्ठ होता है।

## संकित्रिक सादुविक

चक्रहीना राजहीना रूपहीनाम्य सुन्द्सरे!। आत्मान केवलं ज्ञात्वा बहुपुना बहुस्त्रिय: II ₹।।
है सुन्दरि! चकरेखा, राज (भाम्यादि प्राशस्त) रेबा तथा रूप शुम लक्षणों से रद्वित मनुष्य एकाकी (दिगम्बर) होकर संसार मात्र को र्नी-पुत्रमय समझते हैं।

चित्ञ नi P ¢

९६. विन्न परिचय

१- मणिबन्ध में तीन से अधिक रेखायें हों तो मनुष्य दरिद्ध और भाग्यदी़ होता है। मणिबन्ध में समीपस्थ दो रेखाओं को एक समझना चाहिए। पृष्ठ ? ५५ म्लोक २।

२- ऊघ्दरखा मगिबन्च से मध्य के तीसरे प़र्व तक जाय तो मनुष्य त्रिकलन होता है। पृष्ठ १ज० क्लोक 81
₹-बुष और थन्द्यान उच हो वहीं जाल और गुणख्य चिह्न हो, मातृ रेखा शाख्बा किभिष्ट हो तो मतुष्य भक्त होता है। पृष्ठ ? ६ $\in$ स्लोक २।

8- * आयु रेखा के जिस वर्ष-प्रमाण में यव चिह्न हो तो मनुष्य को उस वर्ष में मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है। (पूर्वार्ध पृष्ठ ६५ श्लोक ₹६ से आयु का वर्षमान जानना) इस कष्टप्रद वर्ष के निकल जाने पर स्ती, पुत्र और धन से युक्त होता है।
\&- आयु रेखा में त्रिपत्राकार कमल रेखा का फल जत्तरार्द्ध पृष्ठ ₹₹६ श्लोक ६ में देखें।

६- इन चार अऊुलियों के १२ पर्व रेखाओं से मनुष्य धनधान्यादि सम्पूर्ण सुखों से युक्त होता है। पृष्ठ शः२ क्लोक 201
(यदि केवल कनिष्ठा अंगुली के प्रथम पर्व में एक सुन्द्र रेखा हो तो मनुष्य बुद्धिमान् होता है। यही रेखा यदि छिक्न-भिन्न तथा स्थूल होकर एक पोर से दूसरी पोर में मिल जाय तो उस मनुष्य की भयड़र मृत्यु होती है।)

७- छुक्र स्थान में इस प्रकार की हिंसा रेखा के होने से मनुष्य को स्नी के द्वारा कष्ट होता है, परनिन्द्रक और कुत्ते के समान तृत्तिवाला होता है। पृष्ठ १६६ फ्लोक २०।

૬- पुप्यादि रेखा छिन्न-भिन्न, या रक्त तथा कुत्सित हों तो शत्रु की वृद्धि होती है। पृष्ठ $\uparrow ६ \varphi-१$ ह६ क्लोक २४।
$६$ - मातृ-पित्र रेखा छोटी-बड़ी हो तो माता-पिता में एक की स्थिति जानना। पृष्ठ १६६ श्नोक २है।

## सकितिक सादुकिक

ज्रोक- घुभदा छ्रतुमद्नेखा शाखीपरि यद्धा भवेत् । दुर्गा- सरस्वती - काली देबीनामिष्ट-बोधिक 11911 भाषा- शुुभप्रदा हनुमत् (कपि) रेबा यदि शांखा के ऊपर अर्थात् मान्तृ, पित्र, आयु, ऊर्ष्व या सरस्वती خेखा के ऊर्ष्व भाग में ग्रिकोण होने से कपि रेखा कही जाती है। इसके द्वारां दुरा, सरस्वली, काली इत्यादि देवी सम्बन्धी दष्ट जानना।

- सोल- यदा सुक्षाड्युरेखायां यस्मिन्माने विराजते । तस्मिन्पृत्युसमो हु: खं निधनेन तत: सुख्या 11 p II

श०- आयु रेखा गुरू स्यान तक और उसकी एक शाखा शनिस्थान तक गई हो तो मनुष्य भत्रु-रहित और सम्पत्तिशाली हो सुख्वपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। पृष्ठ १५० क्लोक २४। चिन नि. ?

$P 6$ चित्र करिष्य
१-भाय्य रेबा सिनिस्यान में छोटी-छोटी रेबाओं से कही हो तो जीवन के शेष भाग में मनुष्य धन हरा कष्ट पाता है। पृष्ठ ?८२ घ्लोक है। २-पित्रेबा।

३- यदि कोई छोटी रेखा शुक्रस्थान से उठकर भाग्य रेखा और पितृरेखा का भेदन करे तो मनुष्य स्न्री खियोगी या स्त्री के द्वारा कष्ट पत्ता है। पृष्ठ १६२-१५₹, श्लोक १०1
(ललना रेखा-चित्र नं.र, रेखा $\epsilon$-में यदव का चिह्न हो तो वह मनुष्य सर्बदा स्त्री से पृथक् रहेगा, स्त्री-पुरुषों में कभी भी ذ्रेम न होगा।)

8 - भाम्य रेखा के प्रारम्भ में तारका चिह्न हो तो माता-पिता के रहते भी मनुष्य दुःखी रहता है। पृष्ठ १५२-१६३, श्लोक १०।

५- शुक्रस्थान में तारका चिह्न उत्त रेखा के साथ हो तो मनुष्य की बाल्यावस्था में ही उसके माता-पिता का विनाश होता है।पृष्ठ १५३, श्लोक ? ? ।

६- मातृ रेखा के निचले भाग में यव का चिह्न हो तो असवर्ण पुरुष से स्ती और असवर्ण स्त्री से पुरुष मोहित होते हैं। पृष्ठ १५ ३, श्लोक १२।

ง- मणिद्बन्ध रेखा के ऊपर गुणाख्य (+) चिह्न हो तथा भाग्य रेखा पुष्ट हो तो मनुष्य सौभाग्य्यशाली होता है। पृष्ठ १ ५०, श्लोक २२।

## नारदोक्तहानिंशल्लक्षणननिं

क्षतं तामरसं धनू रथवरो जम्भोउलि-कूर्मा- हुशाः
वापी- स्वस्तिक ~ तोरणानि चमरः पज्चाननः पाँदपः।
चक्तं शख्वा-गजौ समुद्र-कलशी प्रासाद-मत्स्यो यव:
यूप - सूप - कमण्डतून्यवनिभृत् सच्चामरो दर्पणः ॥ ११।
उक्ष पताका कमलाभिषेकम् ।
हुदाम - केकी - धनुपुप्य-भाज्जाम् ।। २।।
 ७ अह्डुश, $\varsigma$ वापी, $\in$ स्वस्तिक, १० तोरण, १ १ चामर, १२ सिह, १ ₹ तृक्ष, १४ चक्र, १५ शं, ₹६ हाथी, १७ समुद्र, १ ऽ कलश, १६ प्रासाद (ङ), २० मीन, २१ यव, २२ यूप, २₹ सतक्भ, २४ कमण्डलू, २Ц शैल, २今, चामर, २७ दर्पण, २ऽ वृषभ, २€ ध्वजा, ३० षट्कोण, ₹१ रद्रू, ३२ मंशूर। प्राय: द्वन रेखाओं के रूप, स्थान और फल ग्रन्य में दिये गये हैं जो अधिक पुण्यश्शाली मतुष्यों के हाय में होते हैं।
₹- दोनों हाथ की हृदय रेखा शनिस्थान में जाकर मातृरेखा से युक्त हो तो उस पुरुष का सहसा विनाश होता है। पृष्ठ १४५, श्लोक १ ₹।
$६-$ कोई रेखा हृदय रेखा से टेढ़ी होकर चन्द्र स्थान में जाय तो मनुष्य हिंसक होता है। पृष्ठ ? ४५ क्लोक ? \&।

१०- चन्द्रस्थान पुष्ट और छोटी-छोटी रेखाओ से कटा हो, चन्द्र और बुधस्थान सुन्दर हो तो मनुष्य भविष्यवक्ता होता है। पृष्ठ १६६१७०, श्लोक ३। चिन्न नं.? 5


योगी होता है। योग रेखा（परस्पर）सब रेखायें मिली हों तो भी फल समझना। २— शनि स्थान और मध्यमा के तीसरे पर्व में दो नक्षत्र चिह्न हों，या मातृ रेखा शनिस्थान में भग्न हो तो मनुष्य फॉसी पाता है। पृष्ठ \｛७४ झ्लोक ？ई।

३－भाम्य रेखा के आदि में नक्षत्र चिह्न और द्वितीय मंगल－स्मान में जाल और घात चिन्न हो तो मनुष्य आत्महत्या करता है। पृष्ठ ११७ फ्लोक १६।

8 －भाग्य रेखा से कई शाष्रा मणिबन्ध की ओर जाय तथा रवि स्थान में घात चिह्न हो तो मनुष्य दूसरे के धर्म को ग्रहण करता है। पृष्ठ १७६，क्लोक २१।
$\varepsilon-$ भम्य रेखा जिस वर्ष－प्रमाण में कटी या टेढ़ी हो तो उस घर्ष में मनुष्य को विपत्ति प्राप्त होती है। पृष्ठ १५२，क्लोक ह। भाग्य रेखा का वर्ष－प्रमाण पृष्ठ शरॅ，पंक्ति है में देखिए।

६－भाग्य रेखा जिस वर्ष में भग्न（कटी）और टेढ़ी हो तो पुरुष को उस दर्ष में विपत्ति प्राप्त होती है। केवल भग्न हो तो लौकिक कष्ट

आतपत्रं करे यस्य दष्डेन सहितो भवेत् ।
ध्वजो वा द्विचामरयुतं चक्रवर्ती स जायते ॥ ₹ ॥
भका－जिसके हांथ में दप्ड के सहित छत्र हो अथवा ध्चजा या चामर रेखा हो तो मनुष्य चकवर्ती होता है।।？

## 4 नलंख्याजन

शतं सहस्तं लक्षं वा कोटिर्दब्रुर्यक्रमम्।
मीनादय：करे स्पष्टा छिसा－भिमादयोडल्पद्व：। १ ।। मत्ये जात विजानीयात् मकरे तु सहसकम् ।
पद्ये लक्षेथरोति शः्बे कोटीधरो भवेत् I २ । शाष7 - मीन，मकर，कमल और श़⿱宀⿱⿰⿴⿰丿㇇⺀⿺乀乛⿱二小欠 हुणार，लक और करोड़ संख्यक घन，छिक－भिष्न हो तो अत्प धन देती है। नोट－ 8 और न．$f$ नव की रेखा को रवि स्थान में समझना।

होता है। पृष्ठ १६२, श्लोक ᄃ।
७- भाग्य रेखा-विहीन मनुष्य भाग्य और उद्योग-रहित होता है। पृष्ठ १६३, श्लोक १३।

ह- आयु रेखा जिसके हाथ में दो हो या दीर्घ और पुष्ट हो तो मनुष्य भगवदाराधन में तत्पर रहता है। पृष्ठ १ ६६, श्लोक १।
$€$ - पितृ रेखा से कोई रेखा उठकर शुद्ध रूप से रवि स्थान तक जाय तो मनुष्य सम्मान-पूर्वक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सज्ञनों से पूजित होता है। पृष्ठ १६७, प्लोक ११।१२। चित्र नं. P६


Courtesy Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri


जिन स्त्रियों के हाथ में एसी दुष्ट रेखायें हों तो उन्हें पति, पुत्र, भाई, माता, पिता, सास, सस़र आदि का कष्ट कहना चाहिए। पृष्ठ ७१, पंक्ति ? सें उत्तरार्ध शुभाशुभ प्रकारण में देखिए। उक्त समस्त फल लक्षण तथा रेखा के तारतम्यानुसार समझ्नकर कहना चाहिए।

## नारदोक्तकराडबलोकनप्रकार -

स्त्रियो वामकरं वामे स्वहसे न्यस्य वीक्ष्यते।.
यो नरः स्रोपकृतिकस्तत्करो वीक्ष्यते बुधैः 11 १।
दक्षिणाद् बलवान् वाम्म: पुंस: स्वीशीलशालिन:-1
नृश्शीलायाः स्त्रियो बगमाद् दक्षिणो बलबान् भवैत् 11 २।। भाषा- विद्वानों को उचित है कि स्त्रियों के तथा स्त्रीस्वभाव बाले पुरुषों के बायें हाथ को अपने बायें हाथ में रखकर रेखावलोकन करें।॥ १।।
(क्योंकि) स्त्री स्वभाब वाले पुरुष का बायों हाथ दाहिने हाय की अपेक्षा बली होता है और पुरुष स्वभाक बाली स्त्रीका दाहिना हाथ बायें हाथ की अपेक्षा अधिक है।। र।

नोट- स्त्रियों के इन दुछ्ट फलों को विचारकर शान्ति-पूर्वक कहना उचित है।
$१ १-$ दो शख्व तथा दुष्ट रेखाओं के द्वारा पुंश्रली का भी ज्ञान होता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ १?५, लक्षण पुंश्रली पंक्ति ५।

१२- अड्ढुष्ठमूल से निकलकर कनिष्ठिका-पर्यन्त एक रेखा जाय तो स्र्री पतिघातिनी होती है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ७६, फ्लोक २६।
(जिस स्री की सब अड्धुलियाँ टेढ़ी तथा चिपटी हों, रेखायें छिन्नभिन्न हो तो वह स्त्री विधवा होकर बहुत दु;ख भोगती है। यदि अद्धुलियाँ अत्यन्त छोटी, पतली, टेढ़ी, विरल तथा बहुत पर्वों से युक्त हों तो उस स्त्री का जीवन दु:बमय होता है। पूर्वार्द्ध पृष्ठ ७७, श्लोक ३३। चित्र नं: २०

## सधबा स्नी करतल चिन्न

१. मणिबन्ध शुद्ध रूप से।
२. भार्य रेखा शुद्ध और सरल मणिबन्ध से शनि स्थान पर्यन्त।
₹. पितृ रेखा शुद्ध रूप से।
8. आयुष्य रेखा गुरु स्थान तक।
६. कमलयुक्त आयुष्य रेखा।
६. यवसंयुक्त आयुष्य रेखा।
७. पुण्य रेखा शुद्ध।
५. मातृ रेखा शुद्ध।

Ł. अंगुष्ठमूल में यव।
१०. अंगुष्ठोदर में यव।
११. उन्चस्थान में सन्तान रेखा संख्यानुसार।
१२. करभप्रदेश में संख्यानुसार भ्रातृभगिनी रेखा।

१ ३. धनुरेखा। १४. कानन रेखा।
१५. त्रिशूल।

ใง. चक्र।
१६. मत्स्य।
१६. शंख।
१५. सीप।
२०. स्वस्तिक।

२?. जाल।
२२. पति।

उक्त समस्त घुद्ध रेखाओं में से जितनी शुद्ध रेखायें स्त्रियों के हाथ में दीख पड़ें, उनके द्वारा पति, पुत्र, भाई, माता, पिता, सास, ससुर, धन आद्धि का सम्पूर्ण शुभफल लक्षण तथा रेखा के अनुसार कहना चाहिए। उत्तरार्द्ध पृष्ठ १₹₹-१₹४, धुभाशुक्भ प्रकरण, पूर्वर्ध पृष्ठ ७१, ज्लोक ? से पृष्ठ ज७, क्लोक ३६, तक देखिए।

नोट— इन बीस चिस्रों में प्राय: ग्रन्थ के सभी रेखाओं का समावेश यथावकाभ करके उनके परिचय भी सर्व-साधारण के लाभार्थ दिये हैं।

इस ग्रन्थ को अहंकार तथा पक्षपात रहित होकर जो विचारपूर्वक आद्यन्त पढ़ेंगे उनको परमेश्वर के अद्दुत सृष्टिक्रम तथा मनुुष्यों के जीवन चरित्र का यथार्थ ज्ञान प्रास होगा। किमधिकम्। इति शम्।

ग्रह्र-प्रकरणम्
अथ नर-नारीणां शुभाडशुभवर्षावबोधरंक चक्रम्म

| वर्ग. | धुवा | ग्रह. | वर्ष | अशुभ | शुभ |
| :---: | :---: | :---: | :---: | :---: | :---: |
| अ. | 宀 | सूर्य. | १ | व्यथा, ऋण्वाद्यि, क्लेका | प्रयाण, लाभ, आरोग्य |
| क. | ¢. | चन्द्र. | २ | अपमान, लाञ्छन, द्वन्द्र, व्लेश | मानासि, सुख |
| च. | $\xi$ | मंगल. | z | मुत व्रण व्यथा, धनादि कष्ट | त्रिधन, सुख्ब |
| ट | y | बुध. | 8 | द्वन्ह, ऋण, क्लेश, चिन्तादि भय | महासुख लाभ |
| त, | $\cdots$ | गुरु. | \& | महाक्लेश, दृत्ति नाश | $\begin{gathered} \text { विद्या, सुत, धन } \\ \text { दारा सुख } \end{gathered}$ |
| प. | ? | घुक. | \& | स्त्री-पुत्र-धन-कष्ट | श्रेष्ठ सुख लाभ |
| य. | ₹ | शनि. | $\checkmark$ | महाक्लेश, हाहेति फ्दन | राज्यासि सर्वोनति |
| 95. | ₹ | राहु. | $\square$ | उदरपीड़ा, दाम्प्पत्य क्लेश | दम्पत्ति सुख |

रेखाओं के द्वारा प्रथम शुभाशुभ निर्णय कर इस चक्र से मनुष्यों के शेष सुख-दुःख की अवधि का विचार करना।

## प्रवसर।

बड़ी २ मुख्य रेखाओं की, वयोवर्ष की, प्रसिद्ध नाम के वर्गधुरा की संख्याओं का योग कर $\zeta$ से भाग देवे, अवशिष्ट ग्रह्र-संख्या

सम्बन्धी शुभाशुभ वर्ष की आधे से अधिक संख्या गत और उससे न्यून वर्ष शेष समझना चाहिए।

## जदाइरण

किसी के हाथ में पुष्य रेखा, आयुरेखा, मातृरेखा, पितृरेखा, भाग्य-रेखा- ये पाँच बड़ी रेखायें हैं और वयोवर्ष २ $\zeta$ है। प्रसिद्ध नाम देवदत्त है। रेखा $\xi$, वयोवर्ष २ $\xi$, नाम का ध्रुवावर्ग $\vartheta$, इनका योग ३७.होता है, ५ का भाग दिया तो $\zeta$ शेष बचता है। यहु गुरु का वर्ष है, इसका आधा २।। होता है, आधे से अधिक ₹ गत अर्थात् बीत चुका है। शेष २ न्यून वर्ष है, इतने दिन दुःख की अवधि जानना।

जैसे प्रथम रेखाओं से छिम्न-भिम्न होने से दुःख प्रत्तीत हुआ, अब इसकी अवधि हमको जाननी है कि दु:ख कब तक रहेगा। उपरोक्त हिसाब करने से २ शेष न्यून बचता है। गुरु के अशुभ में मढाक्लेश, वृत्तिनाश है तो जानना चाहिए कि यह कष्ट ₹ वर्ष और रहेगा। इसी क्षकार शुभ का ज्ञान करना हो तो गुरु के शुभ में विद्या, सुत, धन और दारा सुख लिखा है अत: दो वर्ष इन बातों का विशेष सुख्ख रहेगा, शेष ईश्वरेच्छा। इति शम्। शुरं शूयात्।
ग्रह्हों के द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभ का संक्षित्र विचार कर चित्रों में जो क्रहों के स्थान दिये गये हैं वे उन ग्रहों के क्षेत्र कहे जाते हैं, जो ग्रह जिस प्रकार बलवान् होते हैं उसी के अनुकूल उनके वे सद क्षेत्र भी मनोहर, उच्च, कोमल, कान्तिमान् तथा शुभ रेखाओं से युक्त होते हैं और ग्रहु निर्बल होते हैं उनके स्थान भी उसी प्रकार विपरीत होते हैं।

१- सूर्य के द्वारा राज, मान, प्रतिष्ठा, कलाकौशल, विद्या, बुद्धि, धर्म, कीर्ति और तीर्थ इत्यादि।

२- थन्द्र के द्वारा आन्तरिक पीड़ा, मन सम्बन्धी समस्त विचार, मातृ-सुख, कृषि, धन-धान्यादि।

३- भौम ग्रह द्वारा बल; पराक्रम, अग्निमांद्य, फोड़ा-फुंसी, रुधीर विकार और विवाद में जय इंत्यादि।

8- बुध के द्वारा विद्या, बुद्धि, वाणिज्य, काव्य, शिल्म तथा सौभाग्यादि अनेक शुभफल।

द- गुरु के द्रारा मान, प्रतिष्ठा, धर्म, विवाह, पुत्र, धनधान्यादि समस्त शुभफल।

६- घुक्र के द्वारा विवाह, स्लेह, प्रताप, सौन्दर्य, स्वीसुख, काव्यकलम, प्रमोक्ष छ्यादि ज्ञात।

७- शनि के द्रारा क्लेश, सुख, अनेक पीड़ा, व्यसन, घूत पराभव, मृत्यु इत्यादि विविघ कष्टों का विचार होता है।

ये सब ग्रह इन बातों के योगकारक कहे जाते हैं। अतः इन ग्रहुों के बलाबल के अनुकूल सुख-दुःः का विचार किया जाता है। जिसका मनन करने से अनुभव प्रास्त होता है, इन्हीं ग्रहों के द्वारा जन्मकाल के वर्ष, मास, पक्ष, तिथि, वार और समय का ज्ञान होता है। इस विषय की बहुत सी बातें "सामुद्रिक कुज्जिका" नामक ग्रत्ब में जो मुद्रित है, प्रकाशिति की गई है। यह्ह पुस्तक सामुद्रिक शास्त्र के गूढ़ विषयों की कुज्जी है। "सामुद्रिक सोपान", "सामुद्रिक दर्पण" तथा "सामुद्रिक-रहस्य" या अन्यान्य सामुद्रिक शास्न के जो प्रंथ उपलब्ब होते है वे सब अँगूरी हैं और यह्ट उनका बहुमूल्य नगीना (मणि) है। यदि पाठक शहें तो मेरे यहाँ से मँगाकर लाभ उठा सकतो हैं। बाजार में मी यह पुस्तक मिल सकती है। किमधिकम्।

सत्लाटस्बन्धीनिषार
ललाटे लिखितं धान्रा रेखा चित्दं शुभाडशुभम्। यद्व ज्ञात्त्वा पुरुषो लोके त्रिकालजो भवेद् ध्रुवय्म् $\|$ ? $\|$

१- ललाट में स्वच्छ, सरल, गम्भीर, पूर्ण तया स्पष्ट रेखा होने ते मनुष्य सुखी और दीर्षायु होता है। छिम्न-भिक्न रेखा से दु:खी और अल्पायु होता है।

२- ललाट में ऊर्ज्वरेखा, त्रिशूल, पट्टिशा, स्वस्तिक अदि शुम रेखाओं से 'घन, पुन्न, स्त्रीयुक्त होकर मनुष्य सुखमयं जीकन व्यतीत

करता है। अनेक रेखा से फल भी पृथक् अनेक होते हैं, जो स्थानाभाव से दिखलाये नहीं जा सके।
₹- भाल रेखा द्वारा भी आयु का निर्णय होता है। जिस घ्रह की रेखा पूर्ण और मनोहर होती है वह अपना पूर्ण फल देती है। जिस ग्रह की रेखा छिन्न-भिन्न हो वह अनिष्ट फल देती है।

8 -जिसके माथे में रेखा नहीं होती वह पुरूष धनी, दीर्घजीवी और सुखी होता है। प्रायः पूर्ण एक रेखा का मान २० वर्ष होता है। इसी अनुपात से अनुभव द्वारा आागे के आयु का निश्चय करना चाहिए।

५- जिनके ललाट गहरें हों वे प्राणी वध और बन्दी गृह के भोगी, कठोर कर्म करनेवाले और दुःखी रहते हैं। जिनके ललाट संकीर्ण हों वे कृपण और दुर्जन होते हैं।

ताम्र वर्ण और उम्रत ललाट सुख्यी मनुष्य का होता है, ऊँचे ललाट बाले राजा या योगी होते हैं। यदि ललाट में सीधी गम्भीर केश पर्यन्त बराबरी में ₹ रेखायें हों तो $९ 00$ वर्ष एवं 8 रेखाओं से पूर्णायु छोती है। परन्तु ये छिन्र-भिज्न न हों तो। रेबा-सहित ललाट दीर्षायु-सूचक होता है।

जो रेखा केशपर्यन्तन न हो ऐसी प्रायः ? रेखा का मान २० वर्ष का होता है। छसी अनुपात से अनुभव द्वारा आगे के आयु का निम्वय करना चाहिए।

जिस रमणी का ललाट उमत्र किरा और रोमरहित नेत्र, नील कमल के समान नासिका से कर्न-पर्यन्त भों द्वितीया के चन्द्र तुल्य टेढ़ी और चरेढ़ी तथा परस्पर मिली न हो तो स्री के लिये सुख और सौभाग्यवर्षक है।

इसका विशेष विवरण क्रन्यान्तरों में देखिये। इति शम्।
संकिस-पुरुष ललाट-लिख बर्णन
१- चनि रेला के नीचे ललाटे ₹ आयि, २ मष्ष्व या ३ अन्त में कलला तिल हो तो क्रमझः ? कृषि सम्बन्बी लाष, २ बिलास

से दुर्भाग्य और ३ कारागारफ्रद होता है। यदि यह तिल लाल हो तो सब प्रकार के अनिष्ट की निवृत्ति और विशेष शुभप्रद होता है। २- गुरु रेखा के नीचे उक्त क्रम से तिल हों तो क्रमशः ? विवाह से-भाग्योदय, २ उद्दण्ड, कठोर हृदय, श्रान्ति, चिन्ताकारक, ₹ से विलासी और अपव्ययी होता है। लाल होने से शुभ।

३- मड्नल रेखा के नीचे तिल हों तो क्रमशः १ लड़ाई. से भाग्योदय, २ हिंसक और ₹ झगड़ालू होता है। लाल हो तो स्त्रियों के कारण अशान्ति प्रात्त हो।

४- एवं रवि रेखा के नीचे हों तो क्रमशः $\uparrow$ उत्तराधिकारी, २ विलासी और ३े इन्द्रियलोलुप और दुर्भाग्यसूचक होता है। पूर्वोक्त दो स्थानों में लाल तिल शुभ, किन्तु अन्त में अशुभ है।

५- एवं शुक्र रेखा के नीचे क्रमशः \& विवाह से भाग्योदयं, २ कष्टसाध्य रोगी, ३ स्त्री द्वारा कष्ट। यहाँ लाल तिल शुभ और अन्तिम दो स्थानों में अशुभ है।

६- एवं बुध रेखा के नीचे क्रमशः ₹ उद्योग से भाग्योदय, ₹ अधिक दुःखी, ₹ मुकदमेबाजी। लाल तिल शुभ है।

19- एवं चन्द्र रेखा के नीचे क्रमश: १ व्यापार से उस्नति, ? व्यभिचारी, ₹ दु:ब्री होता है। लाल तिल हो तो श्रेष्ठ है।

नोट- परन्तु रेखासे इनका स्पर्श न होना चाहिए। कपोलमें तिल होने से शोभा-युक्त, अधरोष्ठ में लोभी, कण्ठ में भक्तिसूपक है, अन्य ग्रन्यों में तिल तथा क्लल्ला, मसा का बहुत विस्तार किया गया है। स्नी-ललाट-सिलन्दि वर्णन
१- घनि रेखा के नीचे ₹ अदि, ₹ मध्य या ₹ अन्त में तिल हो तो क्रमशः $?$ उत्तराधिकारिणी, २ गर्वयुक्ता विलासिनी, ₹ दो पति से युक्त और विदेशगमन करनेवाली होती है।

२- गुरू रेखा के नीचे कमशः $₹$ भाग्यश्गालिनी, २ मुखा, कर्कशा, आलस्ययुक्त और ३ व्यभिचारिणी, निर्लज्र, हठीली होती है।

३- मंगल रेखा के नीचे क्रमशः $₹$ भाग्यशालिनी, २ गर्वयुक्त, कठोर ह्टृदय और ३ कर्कशा तथा कुलटा होती है।

8 - रवि रेखा के नीचे क्रमशः $\%$ उत्तराधिकारिणी पति की आज्ञा माननेवाली, २ विलासिनी, व्यभिचारिणी, ₹ दरिद्रा और दु:खभोगिनी होती है।

५- शुक्र रेखा के नीचे क्रमशः ? भाग्यशालिनी, २ रोगयुंक्ता, ३ विषयशीला और दुर्भाग्यवाली होती है।

६- बुध रेखा के नीचे क्रमशः १ चतुर, दीर्षायुवाली, ₹ पितृष्वातिनी और ३ कुलटा होती है।

ט- चन्द्र रेखा के नीचे क्रमशः ? चिरकाल तक पति विद्देशनामन करे, ₹ हठ स्वभाव की और नीच, ₹ प्रसवकाल में दु:ख प्रतप्त होता है।

ᄃ- जिस स्र्री की नासिका के अग्र भाग में लाल मसा हो तो वह पटरानी होती है। काला हो तो व्यभिचारिणी होती है। कान, कपोल और कण्ठ में, वाम भाग में मसा ख़ा तिल का चिह्न हो तो प्रथम गर्भ में पुत्र होता है। ओंठ पर मसा हो तो सर्वस्व नष्ट करनेवाली तथा एक सन्तान दाली होती है। प्राय: काला तिल या मसा अशुभ और लाल प्रुभग्रद होता है। इति शम्।
चिक्न करिधय -?

१० शुक्र स्थान। १ १ बुधस्थान। १२ गुरुस्थान। १३ शनि स्थान। १४ मंगल स्थान। प्रत्येक मनुष्य के इन स्थानों में ग्रहों का निवास रहता है। इसी के द्वारा समस्त शभाशुभ फल कहा जाता है। चित्र परिचय नं. ? जिस पुरुष के भाल
 में ₹ रेखायें स्पष्ट, सुन्दर, बिना कटी एक छोर से दूसरी छोर तक इस ढंग की हों तो वह मनुष्य भाग्यवान्, भक्त, विद्या,धन, पुत्र, स्त्री से युक्त होकर सुखी होता है और उसकी आयु ६० वर्ष की या किसी के मतसे 900 वर्ष की होती है।


चित्र नं. ₹ जिसके मस्तक में इस प्रकार की रेखायें पाई जायँ तो वह पुरुष हत्या करने वाला, भयडूर, कठोर हृदय यथा क्रूंर स्वभाव का होता है। उसे देश-निर्वासन अथवा फाँसी का दण्ड मिलता है। चित्र परिचय-\&


चित्र नi. 8
जिस पुरुष के ललाट में इस तरह की रेखा स्पष्ट दीख पड़े तो वह भाग्यशाली, प्रतापी, धनी और मध्यम आयु को भोगने वाला होकर सुख-पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

चित्र परिचय-६


चित्र नं. 2 जिसके माथे में इस प्रकार चिह्न पाये जायँ तो उस मनुष्य को जल में डूबने का भय होता है। यदि ये रेखायें गहरी और स्पष्ट दीख पड़े तो वह जल में डूबकर मर जाता है।


चित्र नं. ६
जिसके उम्नत मस्तक में ऐसी रेखायें हों वह पुरुष बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर, शान्त प्रकृति, प्रत्युत्पन्न मतिवाला, अनेक गुणों से युक्त, धन-हीन और मध्यायु भोगवे वाला होता है।

चित्र परिचय-७


Courtesy Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

चित्र नं. $\omega$ जिसके कपाल में इस प्रकार की रेखा दिखायी पड़ें वह जुआड़ी; चोर, वेक्यागामी, कठोर हृदय, उद्पण्ड स्वभाव का और मनस्वी होता है तथा उसकी मृत्यु एकाएक होती है।

चित्र परिचय-५


Courtesy Dr. Narinder Sharma. Digitized by eGangotri

## चित्र नं. ह

जिस स्त्री के माथे में छिन्न-भिन्न रेखायें हों तथा नासिका के अग्र भाग में तिल या काला मसा हो तो वह स्त्री निश्चय ही विधवा होती है।
चित्र परिचय-? 0


जिस रमणी के माथे में रेखायें स्पष्ट, मनोहर और गम्भीर हों तथा वाम कपोल पर दाल के बराबर लाल तिल हो तो वह सौभाग्यवती, धन, पुत्र से सम्पन्न होकर आनन्दमय जीवन व्यतीत करती है। इत्यादि।


# सामुद्रिकरहस्यम् 

हिन्दीटीका-सहितम्
पूर्वार्धं प्रारभ्यते

बालार्काभतनुं द्विपेन्द्रवदनं विश्शेश - पज्वाननम् गुज्जत्वट्प्य-पुज्ज-मेदुरमद-श्रीमत्कटोद्रासितम् । राजद्ध्याल - विभूषणं सुरतरु भक्तार्थदाने सदा बन्दे तं हिमवत्तुताङ्भुजनुषं देवं गणेशं मुह्डः ॥श॥ बाल सूर्य के समान कान्ति वाले, गजराज के समान मुख वाले, विप्रूपी हसती के लिए सिंह समान, गूँजते हुए भौौों के समूह से धिरे, मद की कान्ति से युक्त, गण्डस्थल से मुशोभित, दीसिमान्, सर्पों के आभूषण को धारण करनेवाले तथा भक्तों के अभीष्ट को देने में निर्तर कल्पतह के समान, पार्वती जी के पुत्र प्रसिद्ध गोंशजी को बारम्बार प्रणाम करता हैं।। ? ।

क्री P 05 कासाख्याओ नम:
कामाक्षीं कामरूपे कनकमणिमये सिद्दपीठे वसन्तीम् वाक्सिब्दिं चारुबुद्धिं स्मरणमुपगता या प्रयच्छत्यजस्रम्। या मन्न्रं ब्याहतीद्धं निजह्टदि सततं ध्यायतां सिद्धिदान्री ब्रह्मोपेन्द्रेशमुख्यैर्मुत्रुरमरगण: सेवितां तां भजामः॥२॥

जो केवल स्मरणमात्र से निरन्तर जनों को वाक्सिद्धि और सुन्दर बुद्धि देती है, तथा सत्त व्याहृतियों से युक्त मन्न को अपपने हुदय में निरन्तर जप करनेवालों को सम्पूर्ण सिद्धियाँ देती है, ऐसे कामरूप देश में सुवर्ण के मणिमय सिद्धपीठ पर रहनेवाली, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि सम्पूर्ण देवताओं से सेवित उस प्रसिद्ध कामाक्षी भगवती को हम अनेक बार भजते हैं।। २।

## केश्र्णनिम्-

महाकुन्तलयुक्तो वै पण्डितो गुणवान् भवेत् । केशहीऩश्र यो देवि ! दरिद्रो वाडथ भूपतिः ॥ १॥
हे देवि ! अधिक केशों वाला मनुष्य पण्डित और गुणी होता है। केशहीन प्राणी दरिद्री अथवा राजा होता है।। १।।

दीर्घलोमश्रवां यस्तु दीर्घ-कर्णश्थ यो भवेत् ।
वक्षा हि निर्दयश्यैव दीर्घायुर्नृपसेवकः ॥२॥
बड़े-बड़े रोम जिसके कानों में हों और कान भी बड़े-बड़े हों तो वह वक्ता, निर्दयी, दीर्घायु और राजसेवक होता है।। रा।

ललाटनर्णनम्-
गम्भीरभाला: वध - बन्ध -भागिनः
क्रूरे रता: कर्मणि कृच्छ्र्भोगिन:।
वाइष्युक्ष-भाला: क्षितिपाश्र योगिनः
सड़ूर्णो - भाला: कृपणाश्व दुर्जना: ॥३।।
जिसके ललाट गहरे हों वे प्राणी वध और कारागार के भाषी होकर कठोर कर्म करते हैं और दु:ख भोगते हैं। ऊँचे ललाट वाले राजा अथवा योगी होते हैं। जिनके ललाट संकीर्ण हों वे कृपण अथवा दुर्जन होते हैं।३।

## भवर्णनम्-

भूयोगैक्यै तु दारिक्रयं भूहीनेऽपि च भामिनि । वक्रभूश्य नृपा मर्त्य: रसिका पण्डितोऽथवा ॥४॥

मनुष्य की दोनों भौंहें यदि मिल कर एक हो जाँय अथवा भौहें न हों तो वह दरिद्र होता है। और भौहें टेढ़ी हों तो मनुष्य राजा, पण्डित अथवा रसिक होता है।४।।

नेत्रनर्णनम-
असिते धनवान् नेत्रे पीते पितृविनाशन:
पाटले ह्रासवृद्धी च चित्रे तु तस्करो भवेत् ॥५॥
मनुष्य के नेत्र यदि काले हों तो धनी, पीले हों तो मातापिता के नाशक, पाटल (प्वेत रक्त) हों तो कभी हानि और कभी लाभ को देनेवाला, चिन्र (रङ्ञ-विरेंगे) हों तो चोर होता है।i६॥ उलूकाक्षाश्च काकाक्षा: मण्डूकाक्षाश्र ये नरा: । अल्प - रोम - कपोलाश्र ते सर्वे पापबुद्धद्धः ॥ ६॥
उल्लू, काक और मण्ट्रक (मेषा) के समान नेत्रवाले तथा जिनके कपोल में रोम कम हों तो वे मतुष्य पाप बुद्धिवाले होते हैं।ा ६।। नासिकावर्णनम्-
शुकनासा नरो राजा पङुनासाश्श निर्धनः। पत्रात्मिका यदा नासा ॠद्धि-सिद्धि-प्रदा सदा ॥ ज \| यदि मनुष्य की नासिका तोते के समान हो तो वह राजा और पद्. के समान हो तो दरिद्र, सुडौल और पतली नासिका हो तो अद्धि और सिद्धि को देती है।ज।।

नासायां कुटिलश्थैव कपोले बहुपुत्रक:। नासापार्श्र्व च मशक: वंशकष्टकर: सदा ॥ $\boldsymbol{\square} \|$

जिस पुरुष की नाक पर मसा का चिह्न हो तो वह कुटिल, गालपर हो तो अधिक सन्तान पैदा करनेवाला और नाक के अत्यन्त समीप हो तो सन्तान के द्वारा कष्ट होता है।। ट।।

स्नीमसूरिका-
नासायां कुटिला दीना कपोले दु;खभागिनी । अधरे शंखिनी चैच सर्वनाशकरी सदा \|f $\|$ एकवंशा भवेज्ञातु मानिनी कषिणोच्यते । सर्वत्र शुभदो शोण: कृष्गोऽशुभफलग्रद: \|q्०\| जिस स्री की नाक पर मसा हो तो वह कुटिला, गाल पर हो तो दुःख कोगनेवाली और ओठ पर यदि मसा हो तो सर्वस्व नष्ट करनेकाली होती है, कदाचित् एक सन्तानवाली भी होती है, मसा यदि रक्त हो तो श़ुभ और काला हो तो अशुभ फल को देनेवाली होती है, यह महर्षि का वचन है।।૬-१०।।

आननखर्णनम—
यदा भालाइडनने स्यातामिन्दुवत्तुषमायुते।
धर्मात्मोत्पलवक्त्रश्व धन - धान्यादिभाग् भवेत् \|११\|
जिस मनुष्य का ललाट और मुख यदि चन्द्रमा के समान अत्यन्त शोभायुक्त हो तो वह धर्मात्मा और कमल के समान कोमल मुख हो तो धन-धान्यादि से युक्त होता है।११।।

अहास्यवदनो मर्त्य: दुःख-दारिद्र्यवान् सदा ।
भृगाइड खुवदनभ्वापि हीनभाग्यो भवेद्ध्रुवम् ॥१२॥
जिसका मुख प्रसम्न न हो तो वह दु:ख और दारिद्रिय से व्यात होता है। मृग अथवा मूस के समान मुख हो तो वह मनुष्य निक्ष्वय ही भाग्य-रह्दिन होता है।१२।।

स्थूलाऽधरो नरो यस्तु गर्वी चैवाइतिनिर्धन:। ॠजुलिम्बोपमोष्ठाभ्यां भूपो भवति निश्चितम् ॥? ३॥ जिसके नीचे का ओष्ठ मोटा हो तो वह अभिमानी और धनरहित होता है। सीधे और पके हुए कुन्दरू के समान दोनों ओष्ठ हों तो वह निश्रय राजा होता है।?३॥

दन्तबर्णनम्-
विषमैर्धनहीनाश्व दन्ता: स्निग्धा घना: शुभा:। तीक्ष्णा दन्ता: समा: श्रेष्ठा जिए्व्वा रक्ता समा शुभा ॥९४।। श्लक्ष्णा दीर्घा च विजेया तालु: श्वेतो धनक्षयः। कराला विषमा दन्ता: क्लेशाय च भयाय च ॥१र॥ पीता: श्यामाश्र दशना: स्थूला दीर्घा द्विपङ्क्तय:। शुक्त्याकाराश्र विरला दु:ख - दौर्भाग्य - कारणम् ॥६६॥ अधस्तादधिकैर्दन्त्रैर्मातरं भक्षयेत् स्फुटम् । पतिहीना च विकटै: कुलटा विरलैभवित् $\|$ १़्ज $\|$ बिरला दन्ता द्विमहिलाः।
जिसके दॉँ बराबर न हों वह धन से रहित होता है। चिक्न, घने, तीक्ष्ण और समान दाँत हों तो श्रेष्ठ और शुभ जानना, जिह्वा लाल, सम, पतली और लम्बी हो तो घुभप्रद होती है। तालु यदि सफेद हो तो धन का नाश होता है। भयड़ुर और छोटे-बड़े दाँत क्लेश और भय को देते हैं॥१४-११ी। पीले, काले, मोटे, लम्बे, दो पंक्तिवाले, शुक्ति (सीप) के समान और बीड़र दाँत, दुःख और दौर्भाग्य को देते हैं॥१६६॥ नीच के दाँत अधिक हों तो माता की मृत्यु हो, विकट दॉतवाली स्री विधवा और बीड़र दॉँत वाली वेक्षा होती है।? ?७ विरल दॉँतदाले पुरुष दो स्त्रियों से युक्त होते हैं।

# करि-वृष-रथौष-मेरी-मृदङ्ग-सिंहाब्द-नि:स्वना: भूपाः। 

 गर्दभ - जर्जर - रुक्षस्वराथ्य धनसौख्यसन्त्यक्ता ११५।हुसी, बैल, रथों के समूह, नगाड़ा, यृदद्ध, सिंह और मेष के समान शब्दवाले मुण्ष राजा होते हैं। गदहा के समान खर वाले जर्जर (फटा हुआा) शब्द अथवा रूखे स्वरवाले धन और मुब से रहित होते हैं॥? cIl

आवालअभण्य-
स्सम्भग्रीवो यदा देवि! कम्बुकण्ठश्व यो नर:।
सर्वसंस्कारसम्मन्नो मन्त्रजो विजयी भवेत् $॥$ ६६॥
हे देवि ! जिसकी ग्रीवा लम्बी, शब्ब के समान तीन रेषाओ से युक्त हो तो वह सम्पूर्ण संख्कार से युक्त, मन्त्रशास्त्र का जानने बाला और विजयी होता है।? $\in$

## कृकाटिका-सकत्थ- हृद्यदर्णनस-

कृकाटिका सलोमा स्यात् पापी चैवाइतिद्यु:खित:। स्कन्धलोम्मडसुखी मर्त्य: लक्षणज्ञा: वदन्ति वै ॥२०॥ कक्षोवरक्षाड्पवंशः ह्दल्लोमा करुणायुतः । लोमहीनश्ध चाण्डालो दीर्घाकारत्तथैव च॥२१॥ जिसकी घाटी में रोम हो वह मनुष्य पापी और अत्यन्तदू:खी होता है। कस्बे पर रोम होने से दु:बी होता है, ऐसा लक्षणिकों का क्यन है। लिसका पेट भालू के समान हो वह अल्प सन्तान काला होता है। हृवय में रोमवाला दयालु होता है और रोम से रहित और दीर्धाकार हृदय अथया पेट हो तो मनुष्य चाप्डाल होता है।।२०-२१। वान्णुणनस-
समांसौ हैव भुग्नालो क्लिष्टी च विपुलौ शुभी। आजानुल्बित्बित बाहू घृतौ पीनौं नृपेश्धरे ॥२२॥
पूर्वार्द्ध नखशिखदर्णनम्। छ५

निमांसौ रोमशौ हस्वौ भुजौ दारिक्र्यदायकौ। अलोमशौ तु युखिनौ श्रेष्ठौ करिकरप्रभौ ॥२३॥ जिसके बाहु पुष्ट, कुछ टेढ़े, सुडौल और विशाल हों तो शुभुभायक होते हैं और जानुपर्यन्त लम्बे, गोल और मोटे हों तो मनुष्य सम्राट् होता है। मांसरहित और लोम सहित छोटे बाहु दरिद्रों के होते हैं। रोम से रहित हायी के सूँंड़ के सदृश हों तो मनुष्य सुखी और श्रेष्ठ होता है।।२マ-२३।।

हसतादुलिलæणम्
हस्ताड़ुलूलो दीर्घशिर्धिरायुषामबलिताक्ष सुभगानाम्। मेधाविनां च सूक्ष्माश्विपिटा: परकर्मनिरतानाम् ॥२४॥

जिन मनुष्यों के हाथ की अंगुलियाँ लम्बी हों वे दीर्घजीवी होते हैं, जिनकी अँगुलियाँ सीधी हों वे सौभाग्यश्राली होते हैं, सूक्ष्म अँगुलीवाले मनुष्य बुद्धिमान् और चिपटी अंगुली वाले प्रशणी परकार्य करनेवाले होते हैं।२४।
स्थूलाभिर्धनरहिता बहिर्नताभिभ्र शस्त्रनिर्याणा:। कपि-सदृशकरा धनिनो व्यां्रोपम-पाणयः पापाः ॥२५॥ मोटी अंगुली बाले मनुष्य दरिद्ध होते हैं, पृष्ठ भाग की ओर ध्रुकी अैँगुलीवाले शस्त्र के द्वारा मृत्यु पाते हैं। बन्दर के समान हाय वाले धनी और ब्याप्र के समान हाथ बाले पापी होते हैं।१२८। मणिबन्धनैर्निगूद्रैट्टीक्व सुश्लिष्ट-सन्धिभिर्भूपाः। हीनैईस्तच्छेद: श्लथैः सशब्दभ्ष निर्द्रब्या: ॥२६॥
जिन मनुष्यों के मणिबन्ध पुष्ट (मांस से छिपे), सुदृढ़ और जोड़ों से सुष्टित हों वे राजा होते हैं। यदि प्रमाण से न्यून हों तो हाय काटे जाते हैं, कीले कर शब्दसहित हों तो मनुष्य दरिद्र होते हैं।।२६॥

## 툰

पितृवित्तेन विहीना भवन्ति निम्नेन करतलेन नरा:। संवृतनिम्नैर्धनिनः प्रोत्तानकराश्व दातारः।२७। गहरे करतलवाले मनुष्य पैतृक सम्पत्ति से रहित, गोल और गहरे करलतवाले धनी, उम्नत करतल वाले दात्ता होते हैं।ा२७॥ नखवर्णनझ-
तुषसदृशनखा: क्लीबाश्चिपियै: स्फुटितैश्र वित्तसन्त्यक्ता:। कुनखविवर्ण्: परतर्ककाश्य तास्रैश्य भूपतयः॥२ए॥ भूसी के समान नखवाले नपुंसक, चिपटे और फटे नखवाले द्रब्य से हीन, विवर्ण और कुत्सित नखवाले परछिद्रान्वेषी और ताग्र नख दाले राजा होते हैं।२ए।।

अंगुष्ठाठुलिलक्षणम्-
अद्ञुष्ठयवैराढया: सुतवन्तोऽड़्तुष्ठमूलगैश्र यदै: ।
दीर्घाड़्ुलिपर्वाण: सुभगो दीर्घायुषश्बैव ॥२६॥
धनी मनुष्यों के अंगुष्ठ में यव चिह्न हो तो वे धनी होते हैं, और ऊँगुष्ठ मूल में यव हो तो पुत्रवान् होते हैं, अँगुलियों के पर्व्र लम्बे हों तो मनुष्य भाग्यशाली और दीर्षायु होते हैं।।२६। स्निग्धा निम्नां रेखा धनिनां व्यत्ययेन नि:स्वानाम्। विरलाहुल्लयो नि:स्वा धनसज्चययनो घनाह्तुलय: $\|३ ०\|$ धनी मनुष्यों के हाथ की रेखायें चिकनी और गहरी होती क्रे, दरिद्रों की इससे विपरीत होती हैं। बीड़र अंगुलीवाले प्राणी ध्रनहीन और घनी अंगुलीवाले प्राणी धनसंचय करते हैं।३०। तिर्रो रेखा मणिबन्धनोत्थिता करतलोपगा नृपतेः। मीनयुगाड्ड्तिपाणि: निस्यं सर्वप्रदा भदति॥ই१॥ तीन रेंबायें मणिबन्ध से उठकर हाथ के समीप पहुँषी

हों तो मनुष्य राजा होता है। दो मत्त्य रेखायें जिनके हाय में हों वह सर्वदा अभ्न, वस्त्रादि का दाता होता है।३ः॥ व习ाकारा धनिनां विद्याभाजां तु मीनपुच्छनिभा। शर्व्वाडऽतपत्र-शिबिका गजाडश्र-पद्मोपमा नृपतेः ॥३२॥ वज़्ररेखा जिनके हाथ में हो वे धनी और मछली के पुँछ-सी रेखा हो तो विद्वान्, शः्वृ, छत्र, पालकी, हायी, घोड़ा और कमल के चिह्न जिनके हाय में हों वे मतुष्य राजा होते हैं।३३।। कलश-मृणाल-पताकाइड़ुशोपमाभिर्भवन्ति निधिपाला:। दामनिभाभिश्वाढ्या: स्वस्तिकरूपाभिरैम्वर्य्यम् ॥इ ३।।

हाय में कलश, कमलनाल, पताका और अठुुुश का चिच्न हो तो मनुष्य द्रव्य के स्वामी होते हैं। दाम (रस्सी अथवा माला) का चिह्न्न हो तो वे धनी होते हैं और स्वस्तिक का चिह्न हो तो मनुष्य ऐझवर्य पाते हैं।३३॥
चक्राऽसि-परशु-तोमर-शक्ति-धनुः-कुन्तसन्निभा रेखाः। कुर्वन्ति चमूनाथं यज्वानमुलूखलाकारा: ॥३४॥

हाय में चक्र, तलवार, फरसा, तोमर, शक्ति, धनुष और भाले की सदृश रेखायें हों तो मनुष्य सेनापति होते हैं। ओखरी के समान रेबा हो तो मनुष्य विधिपूर्वक यज्ञ करनेवाले होते हैं।ः६। मकर-ध्वज-कोष्ठागार-सन्मिभाभिर्महाधनोषेताः । वेदीनिभेन चैवग्निहोत्रिणो बह्मतीर्थम् ॥३५॥
हाय में मकर, ध्वजा, कोष्ठ और मद्दिर के चिद्न्न-विशेष की रेखाये हों तो मनुष्य महाधनी और ब्रहंमतीर्य (अंगुष्ठमूल) में वेदी समान चिन्न हो तो अग्निहोत्री होते हैं।३द॥

वापी-देवगृहाद्यैर्धरं कुर्वन्ति च त्रिकोणाभि:। अङ्धुष्ठमूलरेखा: पुत्रा: स्युर्दारिका: सूक्ष्मा: ॥३६॥

यदि वापी (बावली), देवमन्दिर अथवा त्रिकोण का चिह्न दिख पड़े तो मनुष्य धर्मात्मा होते हैं और अड्णुष्ठ के मूल में मोटी जितनी रेखायें हो उतने ही पुत्र और सूक्ष्म जितनी रेखायें हों उतनी ही कन्यायें पैदा होती हैं।। ३।।

## आयुरेखावर्णनम-

रेखा: प्रदेशिनीगा: शतायुषां कल्पनीयमूनाभि:। छिन्नाभिर्द्रुमपतनं बहुरेखारेखिनो नि:स्वा: ॥३७॥ आयुरेखा यदि तर्जनी पर्यन्त गई हो तो मनुष्य सौ वर्ष तक जीता है। यदि कम हों तो उसकी कल्पना शास्त्रोक्त रीति से करना उचित है। और छिन्न-भिन्न (कटी-कुटी) हो तो प्राणी पेड़ या उच्च स्थान से गिरते हैं। बहुत रेखावाले दरिद्र होते हैं॥३७॥ एकवर्षेपि त्रिंशत्त्याद् द्विवर्षे द्विगुणं भवेत् ।
त्रिवर्षे चैव नवतिस्तूर्यवर्षे शताधिकम् ॥३६॥
एक वर्ष का मान ३०, दूसरे का छ०, तीसरे का $६ \circ$ और चौथे का $१ ० 0$, सौ से $? २ ०$ वर्ष तक होता है। प्रत्येक दो अडुलियों के मध्य की वर्ष संज्ञा है। शतायु मानने वालों के मत से २५ पचीस के 8 खण्डों में विभक्त करने से 900 वर्ष पूरा होगा। इस मत से \& वर्ष का मान २५ होगा।३द॥

यहाँ प्रसङ्ञवश कुछ रेखाओं का वर्णन कर दिया गया है, इनका विस्तार यथासाध्य रेखा प्रकरण में किया जायेगा।

वलिलक्षणम्-
शास्त्रान्तं स्त्रीभोगिनमाचार्य्य: बहुसुतं यथासंख्यम्। एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्ृृपं त्ववलितम् ॥३६॥

जिस मनुष्य के पेट में एक वलि हो वह शास्त्र का पारड़त हो, दो वलि हो तो स्वी का उपभोग करनेवाला, तीन वलि होने से आचार्य, चार-वलि हो तो अधिक पुत्रवाला होता है। राजा वलि से रहित होते हैं॥३६॥

नाभि: स्याद्कक्षिणावर्ता शुरुभा त्वपराऽशुभा । गम्भीरा सुखभोगाढ्या पूँगीनाभिस्तु मातृहा $1 ४ ० 1 ।$
दक्षिणावर्त नाभि श़ुभ है और वामावर्त अशुभ होती है। गहरी नाभि सुख और भोग से युक्त करती है और ऊँची नाभि माता का विनाश करती है।। $80 \|$

पृष्ठलक्षणम-
पृष्ठरोमा नरो राजा द्विभार्यः कोऽपि जायते ।
बहुलोम्नि शिराले च भुग्नपृष्ठे दरिद्रराट् ॥४१॥
पीठ में यदि रोम हों तो मनुष्य राजा होता है। कदाचित् किसीकिसी का दो विवाह भी होता है, यदि नसों से युक्त टेढ़ी अथवा बहुरोमयुक्त हो तो प्राणी महादरिद्द होता है॥४१॥ कटिलक्षणम-
कटिस्थूला सतिलका नांां दारिक्रच्यद्यदखा ।
कटिक्षीणो महाभोगी शोभनोडथ विचक्षण: ॥४२॥
जिनकी कमर मोटी और तिल युक्त हो, वे मनुष्य दरिद्र और दु:ची होते हैं। क्षीण कमरवाले पुरुष बड़े भोगी, सुन्दर और बुद्धिमान् होते हैं॥४२॥

लिक्ञलनक्षणस्-
कर्कशे कठिने पीने जारा अन्ये दरिट्रिण:।
ह्रस्वलिड़्े धनाध्याः स्युः सूक्ष्मे सन्ततिवर्जिता: ॥४३॥ जिनके लिद्न कर्कश; कठिन और मोटे हों के मनुष्य परस्त्रीगामी और इससे विपरीत हों तो दरिद्र होते हैं। छोटे लिद्र वाले धनी और सूक्ष लिद्न वाले प्राणी सन्ततिरहित होते हैं।४३।। स्फिक्नभण्गण्-
मण्डूकस्फिड्न्नरो राजा दरिव्र: स्थूलस्फिग् भवेत्। स्फिगधीनस्तु महादुःखी परद्वेषरतः सदा॥४४।।

जिस मनुष्य की कुल्ही (चूतड़ का पिछला भाग) मेढक के समान हो तो वह राजा, जिसका मोटा हो वह दरिद्र जिसे कुल्ही न हो वह अत्यन्त दु:बी और दूसरों के साथ निरन्तर द्वेष करता है॥४४॥ ऊरूवर्णनम्
रम्भोरू रोमहीनौ चेत् सर्पाकारौ सुशोभनौ।
महत्सौख्ययुतो मर्त्य: सुखी भवति निश्वितम् ॥४दू।
रोमत्रये दरिद्र: स्याद्रोगी निम्मांसजानुक:।
महुद्दारिद्रचजं दुःखं भुङ्क्ते रोमचतुर्थक ॥४६॥
जिसकी जंघा केले के खम्भे के समान, रोमरहित, सर्पा-कार और सुन्दर हो तो मनुष्य अल्यन्त शौकीन और निश्रय सुखी होता है। जिसकी जंघा के एक रोमकूप में तीन रोवें हों वे प्राणी दंरिद्र, चार रोवें हों तो अति दारिद्दिजजन्य दुःः भोगनेवाला और मांसरहित जानु हो तो मनुष्य रोगी होता है।४५-४६।।

## पदलक्षणम-

सूर्पाकारौ विरुक्षौ च वक्रौ पादौ शिरालकौ।
संश्रुष्कौ पाण्डुरनखौ नि:स्वस्य विरलाड़ुली ॥४७॥
अस्बेदितौ मृद्डतलौ कमलोदरसन्निभौ।
श्लिष्टांगुली ताप्रनखौ पादादुष्णौं शिरोज्झितौ।
कूर्मोन्मतौ गूढगुल्फौ सुपार्ष्णी नृपतेः स्मृतौ ॥४द॥
जिंस मनुष्य के पैर सूप के समान, अत्यन्त रूखे, टेढ़े नसयुक्त अत्यन्त्त सूखे हों, पीले नख तथा अंगुलियाँ बीड़र हों तो वह निर्धन होता है। जिसके पैर के तलवे पसीने से रहित, कोमल कमलोदर के समान हों, अंगुलियाँ सटी, नख लाल, पैर ऊष्ण, नखों से रहित कसुपे के समान उश्रत हो, गुल्फ (गुद्वियाँ) छिपी हों और एड़ी सुन्दर हो तो बह मनुष्य राजा होता है।४७-४と॥

क्षति नखगिख्र्णन्न्न।
पूर्वर्द्ध प्रमदालक्षणविश्रेष: ज़

## प्रमदनलक्षणनिशेषमाह-

पूर्णचन्द्रमुखी या च बालसूर्य - समप्रभा। विशालनेत्रा विम्बोष्ठी सा कन्या लभते सुखम् ॥१॥

जिस कन्या का मुख पूर्णचन्द्र के समान, श्रारीर की कान्ति उदयकालिक सूर्य के समान, नेत्र कर्णपर्यन्त लम्बे और ओष्ठ कुत्दरू के समान लाल हों तो वह कन्या सुख भोगने वाली होती है। १ ॥

या च काज्चनवर्णाभा रक्तपुष्पसरोरहा।
सहस्र्राणां तु नारीणां भवेत् साऽपि पतिव्रता ॥२॥
जिस स्त्री के ज़रीर की कान्ति सुवर्ण के समान हो और हाथ कमल के समान रक्त हों तो वह हुजारों पत्तिव्रताओं में प्रधान होती है॥२।
वक्रकेशा च या कन्या मण्डलाक्षी च या भवेत्। भर्ता च स्मियते तस्या नियतं दु:खभागिनी ॥३॥

जिसके बाल टेढ़े और नेत्र गोल हों तो वह कन्या विधवा और निरन्तर दुःख भोगने वाली होती है।ः।

नीलोत्पलनिभं चक्षुर्नासालग्नं शुभावहम् ।
केकरे पिङ्भ्ले नेत्रे श्यामे लोलेक्षणेडसती ॥४॥
जिसके नेत्र नील कमल कें समान सुन्दर और नासिका से मिले हों तो वह स्री सुलक्षणा होती है। कच्जे, पिद्भल, काले और चन्वल नेत्र वाली स्वी पुँभ्रली होती है॥४॥

ललनालोचने शस्ते रक्तन्ते कृष्णतारके। गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निम्धे कृष्णपक्ष्मणी ॥६॥ जिसके दोनों नेत्र-प्रान्त रक्तवर्ण, पुतल़ी काली, चारों ओर गोदुग्ध

के समान ख्वच्छ और सरस हों तथा बरौनी काली हो तो वह स्नी सुलक्षण्त होती है।५।

उन्नताक्षी न दीर्घायुः वृत्ताक्षी कुलटा भवेत्।
मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षा न शोभना \|६॥
ऊँचे नेत्र दाली स्ती अल्पायु और गोल नेत्र वाली पुंश्यली होती है, भेंड़ा, भैंसा के समान तथा कञ्ने नेत्रवाली दुष्टा होती है॥६॥ कामिनीनां तु नितरां गोपिड्गाक्षी सुद्युर्मदा। पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी \|७॥ गौ के समान पिंगल नेत्र वाली स्त्री सब स्त्रियों में अल्यन्त दर्पवाली होती है, कबूतर के समान नेत्रवाली दु:श्शीला और लाल नेत्र दाली पतिधातिनी होती हैसज।

कोटर्रानयना दुष्टा गजनेत्रा न शोभना। पुंध्रली वामकाणाक्षी बन्ध्या दक्षिणकाणिका $\|\varsigma\|$ खोढ़रे के समान नेत्र वाली दुष्टा और हाथी के सभान नेत्र वाली अशोभना होती है, जिसका वाम नेत्र काना हो तो वह पुंश्रती और दाहिना नेत्र काना हो तो वह स्री वन्ध्या होती है॥५॥ मधुपिंगाक्षी रमणी धनधान्यसमृद्धिभाक् । प्रलम्बमणिकं यस्याः देवरं हन्ति सा ध्रुवम् $\|€\|$ एहाद के समान पिड्ञल नयन वाली स्त्री धन-धान्य से पूर्ण होती है, और जिसके नेत्र की पुतली लम्बी हो वह स्त्री निश्चय देवर को मारने वाली होती है। 1 ॥

कृष्णा कपिलकेशी च मिलिताश्रुकुटिस्तथा।
गमनं सत्त्वरं चैव त्यक्तब्या स्यात् सदा बुधै: $\|\wp \circ\|$
जो स्री क्यामवर्ण हो, केश जिसके कपिल हों, दोनों भौंहैं मिली

हों और शीघ्र चलनेवाली हो तो वह स्त्री पण्डितों से त्याज्य है। १०।
विरलां दशना यस्या: कृष्णौष्ठी कृष्णजिह्विका । भर्तारं प्रथमं हन्ति द्वितीयं चैव विन्दति ॥११॥ जिसके दॉॉत विरल (बीड़र) हों, ओष्ठ और जिह्वा कृष्ण वर्ण हो तो वह स्री विवाहित पति को मार कर द्वितीय पति प्रास्त करती है। ११?।

त्रीणि यस्या: प्रलम्बानि ललाटमुदरं भगम्।
त्रीणि सा भक्षयेक्मारी श्वशुरं देवरं पतिम् ॥श२॥
जिसके ललाट, उदर और भग ये तीनों लम्बे हों वह स्त्री क्रमश:
फ्वसुर, देवर, पति इन तीनों को खा जाती है।।? ₹।।
कनिक्ठाऽनामिका यस्या: यदि मध्र्यमिका तथा।
भूमिं न स्पृशते सां स्त्री विजेया व्यभिचारिणी ॥ई 引॥ चलते समय जिस स्री के पैर की कनिष्टिका, अनामिका और मध्यमा भूमि को स्पर्श न करे तो वह व्यभिचारिणी होती है।१३।। पादे प्रदेशिनी यस्याः अद्रुष्ठषं समतिक्रमेत्। न सा अर्तृगृहे तिष्ठेत् स्वच्छन्दा कामचारिणी $\|? 8\|$ जिस स्त्री के पैर की प्रदेशिनी अँगुली अंगुष्ठ से बड़ी हो वह स्ती पतिगृह को त्यागकर स्वछन्दचारिणी होती है।१४। यस्या: गमनमात्रेण भूमौ कम्प: प्रजायते । बह्वाशिनीं प्रलोभाज्ज्व तां नारीं परिवर्जयत् \|९५\|
जिसके गमन काल में पृथ्थी कम्पायमान हो तथा अधिक भोजन करनेवाली और लोभ से युक्त हो तो उस स्त्री को त्याग देवे ॥१६॥ राजहंसगतिर्चाड

मतमातड्नगायिनि ।
सिंछशार्दूलमध्या च सा भबेत् सुख़भागिनी \|ई्६॥

जो स्र्री राजहंस तथा मतदाले हाधी के समान चलने－वाली हो और जिसकी कमर सिंह अथवा व्याघ्र के समान पतली हो तो वह स्त्री सुख भोगने वाली होती है ॥१ही। गौराड्गी वा तथा कृष्णा स्निग्धमङ्ञं मुखं तथा । दन्ता स्तनं शिरो यस्या：सा कन्या लभते सुखम् \｜१७\｜

जो स्त्री गौर अथवा कृष्णवर्ण हो，अद्जु，मुख，दन्त，स्तन और मिरो भाग स्निग्ध हो तो वह सुखभागिनी होती है।१ 911 यृदड़््री मृगनेत्राडपि मृगजानु मृगोदरी । दासीजाताऽपि सा कम्या राजानं पतिमाप्रुयात् \｜१़्य

जिस नारी के अह्र कोमल तथा नेत्र，जानु और उदर मृगा के समान हों तो वह स्त्री दासी के गर्भ से उत्पत्न होकर भी राजा के समान पति को प्रास्त करती है।१ट।।

प्रमदकरांपुष्ठरेखादिलक्षणनिशोषमाह－
अम्भोज：मुकुलाकारमड्षुष्ठांगुलि－सम्भुखम्
हस्तमयं मृगार्षीणां बहुभोगाय जायते \｜\＆६॥
सद⿸⿻一丿工二心．मध्योतूतं रकंत तलं पाण्योररन्ध्रकम् ।
प्रशत्तं शस्तरेखाष्यमल्परेखं शुभश्रियम् ॥२०\｜
चिन मृगनेर्ना रमणियों के दोनों हाथ，अङ्ट्रष्ठ और अंगुलियों सापने होकर कमल कलिका के समान सुन्दर हों तो उनके बहुभोग को उत्पक्ष करती है। चिसके करतल कोमल，रक्तवर्ण，द्विद्ररहित，मछ्य माग उसत，अच्छी रेखाओं से युक्त होकर थोड़ी रेखाओ से विभूषित हो वह सी सौभाम्य और लक्ष्मी से युक्त होती है। F －२०॥

विध्या बहुरेखे किरेखेण दरिक्रिणी।
भिद्युकी सुशिराढयेन नारी कतर लेन वे \｜२p\｜

जिस स्वी का करतल बहुत रेखाओ से युक्त हो तो वह स्त्री विधवा, रेखारहित हो तो दरिद्रिणी और अधिक नसों से युक्त हो तो भिद्गुकी होती है।२२ः

विरोमं विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ।
वैधन्यहेतुरोमाढ⿱㇒ं निर्मांसं र्नायुमत्यजेत् ॥२२॥
जिस रमणी का करपृष्ठ उन्नत होकर रोम और नसों से रहित हो तो शुभु है। रोमयुक्त होकर मांस रहित नसों से युक्त हो तो वैधब्य का कारण है। अतः उसको त्याग देवे।२२॥ रक्ता व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला। कररेखाङ्ऩनाया: स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः ॥र३॥

जिस ललना के हाय की रेखा लाल, स्पष्ट, गहरी, चिकनी, पूर्ण और गोलाकार हो तो उसके भाग्यानुसार श्रुभ होता है।२३।। मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन वसुप्रदा। पद्येन भूषते पत्नी जनयेद् भूपतिं सुतम् ॥२४।।
जिस अड्न्ना के करतल में मत्स्य का चिह्न हो तो वह सुन्दर भाग्यवाली और स्वस्तिक का चिह्न हो तो धन देनेवाली होती है। कमल का चिह्न हो तो राजपत्नी होकर भूमि का पालन करनेवाला पुत्र पैदा करती है॥२४।।

चक्रवर्तिस्त्रिया: पाणौ नद्यावर्तः प्रदक्षिण:।

## शः्ड्वगतपन्रकमठा नृपमातृत्वसूचकाः ॥२दी

जिस रमणी के पाणितल में दक्षिणावर्त मण्डल का चिद्न हो तो वह मानिनी, चक्रवर्ती राजा की पटरानी होती है। शक्ष्व, छत्र और कच्छप का चिह्न हो तो वह स्री राजमाता होती है॥२५॥ तुलामानाकृती रेखा वणिक्पलित्नहेतुका। गजबाज्तृषाकारा करे दामे मृभीदृशा ॥२६।।

जिन मृगनयनी स्त्वियों के वाम कर में तराजू, हाथी, घोड़े, और बैल के चिह्न-विशेष हों तो वे बनिये की स्त्री होती है॥रछा। रेखा प्रासादवज्राभा सूते तीर्थकरं सुतम् । कृषीबलस्य पत्नी स्याच्छकटेन मृगेण वा ॥२७॥
जिसके हाथ में बज्न और प्रासाद (कोठी) का चिह्न हो तो वह स्ती तीर्थ करनेवाले पुत्र को पैदा करती है। शकट और मृग का चिह्न हो तो खेतिहर (किसान) की स्ती होती है॥रज।

चामरांकुश-कोदण्डै: राजपत्नी भवेद् ध्रुवम् ।
अंगुष्ठमूलान्मिर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ॥२द॥।
यदि सा पतिहन्त्री स्याद् दूरतस्तां त्यजेदुधः।
जिस कामिनी के करतल में चमर, अड्दुश और धनुष के समान रेखा हो तो वह निश्वय राजपती होती है। यदि अड़ुष्ठ मूल से निकलकर कनिष्ठा पर्यन्त रेखा जाय तो वह स्त्री पति-घातिनी होती है। अतः पण्डित उसका परित्याग कर देवें॥२ए।।

त्रिशूलाइसगदार्शक - दुन्दुभ्याकृतिरेखया ॥२६॥
नितम्बिनी कीर्तिमती त्यागेन पृथिवीतले ।
जिस प्रश्चस नितम्बवाली रमणी के करतल में त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति और नगाड़े के आकार की रेखा हो तो वह दान के द्वारा कीर्ति प्राप्त करती है।।२छ।।

कङ्ण-जम्बूक - मण्डूक- वृक - वृश्विकभोगिनः ॥३०\| रासभोष्ट्रविडाला: स्यु: करस्था दु:खदा: स्त्रियः ।
घणुभ: सरलोऽड्षृष्ठो वृत्तो वृत्तनखो मृदु: ॥३१॥ जिन स्र्रियों के हाथ में सफेद चिह्न, शृगाल, मण्डूक, भेड़िया, बिच्हू, सर्प, गदहा, ऊँंट और बिडाल के चिद्न-विशेष हों तो के नु:ब्बकारी होती हैं। जिन सुन्दरियों के अंगुष्ठ सीधे, गोल तया नख गोल और कोमल हो तो घुभप्रद है 13 ३-३१।

अद्भुल्यक्य सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ता: शुभा: कृशा।
चिपिटा: स्थपुटा रूक्षा पृष्ठरोमयुजोऽशुभा: ॥३२॥
जिन सुन्दरियों की अंगुलियों लग्बी, गोल, सुन्दर पर्वों से विभूषित और क्रमशः पलती हों तो शुभफल को देती हैं। चिपटी, छोटी और रूखी तथा पृष्ठ भाग में रोम हों तो अशुभ है।।३२।

अतिह्नस्वा: कृशा वक्रा विरला रोगहेतुकाः।
दुःखायाऽड़्ुलय: स्त्रीणां बहुपर्वसमन्विताः ॥३३॥ स्त्रियों के हाथ की अँगुलियाँ यदि बहुत छोटी, पतली, टेढ़ी और विरल हों तो रोगों का कारण होती है। और अधिक पवों से युक्त हों तो दुःखप्रद होती हैं।।३।
अरुणा: सशिखास्तुङ्ञाः करजा: सुदृशां शुभा:। निम्ना विवर्णा शुक्त्याभा पीता दारिद्रयसूचका: ॥३४॥ नखेषु विन्दव: श्वेता: प्रायः स्यु: स्वैरिणीस्त्रिय:। पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिन: पुष्पितैर्नखै: ॥३६॥ सुन्दर नेत्रवाली स्तियों के नख्ब यदि लाल, शिखायुक्त और ऊँचे हों तो शुभ, गहिरे, विवर्ण, शुक्ति (सीप) के समान और पीलेपीले हों तो दारिद्द्य को सूचित करते हैं। नखों में यदि प्रेत बिन्दु हों तो स्त्रियाँ प्रायः पुँभ्र्यी होती हैं। पुरूष भी पुष्षयुक्त नखों से दुःखी होते हैं॥₹४-३६॥

## शरीरमानम्-

अष्टशतं षणणवति: परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसाम्। उत्तमसमहीनानामद्धुलसंख्या स्वमानेन ॥३६॥ अपने अंगुल-प्रभाण से १०२ अद्धुत्ल पर्यन्त ऊँचे मनुष्य उत्तम, ६६ अैंगुल पर्यन्त ऊँचे मध्यम और $\tau ४$ अैंगुल प्रमाण ऊँचे अध्रम होते हैं।३६।

## विशोषाइझ्णअवर्णनझ्-

विशेषाहुगन्यनिष्टानि शिर: पदकरोदरे।
नितम्बकटिगुह्याख्यैर्लिड्नेडप्यष्टानि तानि च ॥३७॥ मनुष्यों के शिर, पैर, हाथ और उदर में यदि कोई विशेष अड्न हो तो अत्यन्त्र हानि और नितम्ब, कमर, भग तथा लिड्ज में विशेषाह्न हो तो लाभप्रद है।३७।
कराङ्द्रुष्ठमूलेड्द्रुली घोरपापी भवेत्पूर्वपर्वे प्रभु: स्यान्नराणाम्। यदाड्ड़ुष्ठमध्ये नरो बंशघाती तथाड्नन्न देशे भंवेच्छोधकोडसौ।इए। यदि अड्डुष्ठमूल में ऊँगुली हो तो मनुष्य महापापी, अँगुष्ठ के प्रथम पर्व में हो तो राजा, अंगुष्ठ के मध्य में होने से वंश्र का नाशक तथा इसके अतिरिक्त और कहीं हो तो मनुष्य स्त्री-पुग्रादि से रहित होता है।३५।
दरिंद्रोडक्ड़तस्तर्जनीमूलदेशोड अनामांगुलावंगुलीत्राणक्त्ता कनिष्ठाह्युलीमूलदेशे नृपालः।इ६।

तर्जनी के मूल में यदि कोई अँगुली हो तो अद्दुत दरिद, तर्जनी के मध्य में कोई अँगुली हो तो अल्पायु, अनामिका में कोई अंगुली हो तो मनुष्यों का पालन करनेवाला और कनिष्ठिका के मूल में अँगुली होने से मनुष्य राजा होता है।३६।।

तिलवर्णन्-
 मध्यमापार्श्वभागे तुं जनः शान्तिप्रिय: सुखी। तिलस्त्वनामिका देशे रमा विद्यानिधिभवित् $\|४ १\|$

यदि हाथ के अँगूटे के बगल में तिल हो तो मनुष्य अधिक चलने वाला, तर्जनी अँगुली के बगल में तिल हो तो द्वेष करने वाला और धनी होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। मध्यमा के बगल में तिल हो तो शान्त और सुखी, अनामिका में तिल हो तो मनुष्य लक्ष्मी और विद्या से युक्त होता है।।०-४१॥।

तथा कनिष्ठिकापार्श्च सुतवित्तसमन्वितः।
तिलं करतले यस्य सततज्च धनागमः ॥४२॥
लालाटिको ललाटे च नेत्रे जारः प्रचक्षते।
श्वणे सर्वसिद्धि: स्यान्नासा दुष्टः फ्रीर्तितः ॥४३।।
यदि कनिष्किका के बगल में तिल हो तो मनुष्य धन, पुत्र से युक्त और करतल में तिल हो तो निरन्तर द्रव्य की प्राप्ति होती है। जिसके ललाट में तिल हो वह मनुष्य लालाटिक (स्वामी के कार्य में असमर्थ होकर उसके मुख्य का भाव देबने वाला) होता है। नेत्र में तिल हो तो परस्नीगारी, कानों में तिल हो तो सम्पूर्ण सिद्धियों को देनेवाला, नाक में तिल हो तो मनुष्य दुष्ट होता है।।४२-४३।। कपोले सुषमायुक: लोभी स्यादधरे तिलः। कण्डे भक्तो मनुष्यः स्याद् हृदि सौभाग्यकारणम् ॥४४।। कपोल में तिल होने से प्राणी सुषमा (अत्यन्त शोभा) से युक्त, अधरोष्ठ में तिल हो तो लोभी, कण्ठ में तिल हो तो भक्त और हृदय में तिल हो तो सीभाग्य का कारण होता है।।४४।।

बाहौ धनं विजानीयाल्लिङ़ु़े तु प्रमदारतः।
जन्ध्यो रसिको मर्त्य: पादे नृपतिवाहनम् ॥४६॥।
बाहु में तिल हो तो धनी, लिंग में हो तो स्त्री में आसक्त, जधा में होने से रसिक और पैर में तिल हो तो राजा की सवारी प्रात्त होती है।ा४द।

पृष्ठे कटौ नितम्बे च गुह्ये व्यर्थतिलो भवेत्। वामाङ़्भे च धुभ: स्र्रीणां प्राय: पुंसाज्च दक्षिणे ॥४छ।। पीठ, कमर, नितम्ब और गुम्न इन्द्रियों में तिल हो तो ब्रार्य होता है। प्रायः स्त्रियों के वाम और पुरुषों के दक्षिण अंग में तिलाद्विक शुकु होते हैं।८६्दा

इति नखझ्ञाख्वर्यनम।

*     *         * 

 गिरिजा, पए्ट्यर, कृष्ण, विष्णु, गुरू, गणेश, सरस्वती, दुर्गा और मनोरथ सिद्ध करनेवाली शावरी मन्त्र शक्ति को निरन्तर प्रणाम करता हूँ॥श

अथ शशकादिपुर्यपुरुषाणां जीवनचरित्राणि-

भवन्ति खलु प्राय: क्रमलकुन्तलविपुलेक्षणशान्तशान्तशासननिरतसूक्ष्मशरीरावयवाइतिपविस्नपूर्णन्द्युवदनस्निन्धसमाल्पदशना:, कराड्ध्रि-जानुजघनमीवोरुषु श्यामतां बिश्राणाः, सुरभिमदनस्पन्दा: सकृदतिविरता अदशनिऽपि योजनव्यादासुरभयो युगाद्यन्तप्रभवष्टत्रिंशद्वर्षावच्छिक्नावयवा अल्पात्मजप्रभावशालिनो देवपुरुषाः घशकाः।

> शशक, मृग, तुरग और दृषभ जाति के पुरुषों के जीवन चरित्र।

प्रथम शशक का वर्णन करते हैं, प्रायः इस जाति के पुरुषों के केग़ा कोमल, नेत्र विशाल होते हैं, ये शान्त और शान्तिपूर्वक पासन में

तत्पर रहते हैं, डनके शरीर के अंग सूक्ष्म, स्वयं अत्यन्त पविन्न और मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान आनन्ददायक, दॉँत चिकनें, बराबर और घोड़े होते हैं। इनके हाय, पैर, जानु, पेड्र, प्रीवा तथा जंघा में कुछ क्यामता होती है। वीर्य में सुग्धि होती है। ये थोड़ा विषय करनेवाले होते हैं, एक स्थान में रहने पर भी चार कोष्षा तक इनकी सुगन्धि फैली रहती है। ये चुग के आदि और अन्त में पैदा होते हैं और ३ॅ वर्ष तक जीते और प्रभावशाली होते हैं, सन्तान इन्हें थोड़ी होती है। कोई-कोई इन्हें देक्पुरुष भी कहते हैं।

साषारणमृगलक्षण्-
मृदुल-स्निग्ध-रक्ताधर-महासमान-विह्हार-विहसिताला-पाक्वान-समक्यल एन हृष्टिपातागमनोत्रुका:, खण्डा-खण्डत्रिकोणोपलक्षितपाणि तलमदेशा:, मजलुलेक्षणोत्पलशोभन-बदनारविन्द-सृद्धवाणि-पादाडनतिस्थूलकृशा, लधुररीरास्ति-लाड़्ति-ह्तिदयसुग्रीव-मध्यांशका़्षैञ्वलतमा अपि धीरबुद्ययो लज्रानतानना अनवरतनृत्यगानवादना-विग्रमोदे रतास्थिताकर्षक्मोहनमूर्तय: कुरहुजातय: पुरुषा भन्न्ति।

अन्यद्वपि-
प्रसमूर्ति: समुदारचेता: बंशाभिमानी शुभवाग्विलासः। अनीतिभीर्गुर्साधुनत्र: साझाज्यलक्षीं लभते मनुष्यः ।?।

अपरुण-
सदा विहारवार्तां है बार्तान्ते रसभुत्तमम् । पश्युं पक्षिणमालोक्य मृंगो मोवं लभेत च \| २ \| चृगजार्तीनं फलननि-
आयुष्यरेखाकनिष्ठा कुल्योर्मध्ये समुल्लसन्त्या ललनारेख्या भवदीयाधर्मज्ञा महिला सुखान्यनुभूय भेवतः पूर्यमेवाइमरलोकं गमिष्थति,

द्वितीयाप्येवम्। श्रीमता पज्चपुत्रा: सड़ुलने नवैकादश वेति तेष्बेकस्यात्मजस्य नृपलांक्छनलाअ्छितल्वेन नृपालयोग:, पूर्वप्रतिपाद्विपुत्रेषु दुर्हितरशश्राधिकगुणोपपत्नाः भविष्यन्ति। तास्वेका पूर्णचन्द्रानना बालसूर्य ्रभा विशालनेत्रा अभयकुलानन्ददायिनी कटिदरिद्रा हंसगमना चारुभाषिणी साक्षाद्रमैव सर्वगुणालंकृता भविष्यति। स्थास्यति च सूनुरेक:, द्वे कन्ये च स्थास्यतः। पज्चभ्रातरः सड्लूलने नैैकादशा वेति एको भ्रातैका भगिनी च स्थास्यति। एकत्रिंशद्धायनेडथवा बाल्ये मातृह्रा पितृह्रा वेति सूचयति। एकोनविंशद्रुपरि विद्याद्युर्शतिः। एकद्विन्नितूर्यपज्चनववयःसुसुतवित्तभवनारामभूप्रतिष्ठादिभिर्भागयोदयः। त्रिपज्चाशत्रिषष्टित्रिससतित्रयशीतिवर्षेषु कष्टादि शरीरपतनज्च निश्रेयम्। पित्रोरेकस्य स्थितौ द्वौ वासी स्वकीयोद्योगेन राजगृहाद्धनाद्यांति: भविष्पन्ति। महामारसंकेतिन्यो बन्ब्चः स्त्रियः। भुज़्रूपा बह्वर्यः श्रीमतोऽशितुं समागमिष्यन्ति, तग्र भवन्तो वैनतेयाः सर्वाक्छुग्रूष्नाशयिष्यंन्ति। चित्रिते प्रासादे चिरं निष्कण्टकं राज्यं करिष्यन्ति भवन्तः 1 तुरगगजाद्यलंकृतं भवन्तं प्रतिस्पर्धिनोडपि परिचर्यामाचरिष्युन्ति । वसन्तसङ़्ञेतिन्या काननोद्धवया अरविन्दरेखया पूर्वोक्तकष्टादिहायनेषूस्तरायणे सरित्तटेडल्पक्लेशेनापवर्गास्तिश्न। तुरगवृषभेतराणां दुर्लभं जन्मेति।

मृगजाति वाले पुरुषों के अधरोष्ठ कोमल, चिकने और लाल होते हैं। इस जाति के पुरुष श्रेष्ठ विहार शील, हैंसकर बोलने बाले, पुकारते ही लौट कर देखते और आगमनोत्पुक होते हैं। उनका करतल खण्ड वा पूर्ण त्रिकोण से युक्त होता है। सुन्दर कमल के समान नेत्रों से मुखारवविन्द अति मनोहर और हाथ-पैर कोमल होते है। उनका गरीर न बहुत मोटा और न पतला तथा छोटा भी नहीं होता। ह्टदय तिल से अंकित, ग्रीवा सुन्दर, कन्धे मध्यम होते हैं। वे चड्चल होकर भी धीर बुद्धिवाले होते हैं। उनका मुख लजा से नम्र होता है। वे निरन्तर नाच; गाना, बजाना अदि आनन्द

पूर्वार्द्ध
में मग्न, मोहन मूर्ति और चित्त अपनी ओर खींचने वाले होते हैं। और प्रसम्रता की मूर्ति, उदार चित्त, अपने कुल का अभिमान करनेवाले, उत्तम और प्रिय बोलते, अनीति से डरते, गुरू और साधु से नम्र होकर साम्राज्यलक्ष्मी (ऐश्वर्य) को प्राप्त करते हैं। मृग पुरुष सदा विहारविषयक वार्ता करते और उसके अन्त में उत्तम रस पाते और पशु-पक्षियों को देखकर शीघ्र प्रसन्न होते हैं।

## मग जनतिबालों के फल-

हाथ में आयु रेख़ा और कनिष्ठिका अड्जुली के बीच में शोभने वाली स्त्री-रेखा से विदित होता है कि आपकी धर्मपत्नी आपके पहिले ही सम्पूर्ण सुखों का अनुभव कर स्वर्गवासिनी होगी; इसी प्रकार दूसरी भी। आपको पाँच पुत्र होंगे, कन्या पुत्र मिलकर नौ या ग्यारह होंगे। उनमें से एक पुत्र को राजयोग पाया जाता है। लड़कों के साय कही हुई लड़कियाँ भी अधिक गुणवती होंगी। उनमें से एक पूर्ण चन्द्रमुखी, जिसकी शरीर-कान्ति उदयकालिक सूर्य के समान, ऑँखें बड़ी, कमर पतली, चाल हंस.की-सी और बोली मनोहर होगी, वह दोनों कुल को आनन्द देनेवाली, साक्षात् लक्ष्मी के समान, सब गुणों से अलङ्टृत्त होगी और रहेगी। एक पुत्र, दो कत्यायें ठहरेंगी। एवं पाँच भाई, सब (भाई-बह्हिन) मिलकर संख्या में नव या ग्यारह होंगे, उनमें एक भाई-बहिन रहेगी। ₹१ वर्ष अथवा, बाल्यावस्था में मत्ता-पिता में से एक का जीवित रहना (रेखानुसार) सूचित करता है। १६ वर्ष
 यथावकाश धन, पुन्त, गृष्ठ, वाटिका, भूमि और प्रतिष्ठाद्दिक से भाग्योदय, ५३-६३-け३ और ₹ ₹ इन वर्षों में श़रीए को कष्ट और मरणादि का निश्रय करना, माता-पिता में से एक के न रहने या दो स्थानों में रहना। अपने उद्योग द्वारा राजगृह से धनादि की प्रात्ति होती है। आपकी काम-कला में प्रवीण बहुत-सी स्त्रियों होंगी। सर्पतुल्य

बहुत्त से शत्रु आपका अपकार करने आवेंगे किन्तु गरूड़ के समान आप संबका विनाश करेंगे। चित्रों से सुसज्जित महल में बहुत काल तक अकण्टक सुख का अनुभव आप करेंगे। हाथी, घोड़े, इल्यादि वाहनों से युक्त होंगे, आपके शन्तु भी आपकी सेवा करेंगे। करतल में वसन्त काल का संकेत करनेवाली कमल रेखा से सूचित होता है कि पूर्वोक्त ६३ आदि कष्टप्रद चर्षों में सूर्य के उत्तरायण होने पर नदी के समीप अल्प क्लेश से परीर का पात होगा। तुरग और वृषभ के अतिरिक्त संसार में मृग पुरुषों का जन्म दुर्लभ होता है।

*     *         * 


## विशिष्टसृगभेदेष प्रथमो भेद:

भवति पूर्वोक्तमृगलक्ष्मविशिष्ट: सुशीलोऽतिमनोहरो बहुरूपधरो विचक्षणः प्रभावशाली च प्रथमो मृगपुरुषः।

## फलानि-

निबसति सरित्ति दुर्गाभक्तिपरायणोडतिधनी रूपवाज्छोभनोडतिमनीषी शुद्धो युक्तश्र दानधर्मक्रियादिभिर्महाकुलसमुख्धूतः सर्वविद्यारतो विह्हसितदद्नश्र भवति। न भवत्यस्य पित्गुपार्जितधनगृह्टौख्यादिकमधिकम्। किल्वंवुभवति सर्वख्वोषार्जितरम्यवाटिकागृहभूम्यादिसुखम्। प्रत्मक्षगोचराः कारणं विनापि बहुछाम्रवोडस्य कलहायन्ते। भवति प्रायो मानसी पीड़ा रोगग्रस्तश्र। बहुभार्योगल्पपुत्रः कन्याभिः समन्वितश्र, प्रथमद्वितीयाष्टह्शादएवर्षेषु प्रबलारिष्टभयं विज्ञेयम्, निवृत्तेषु बालारिष्टभयेषु पज्यदशर्बर्व समधिकं सौख्यम्, ख्वल्पं च पितृतुखुख्यम, विंश्रतिवर्षालिश्रिशार्षपर्यन्तं धनमानप्रतिष्ठादिभिर्महता सौख्येन कालं यापयति। उ्र्यस्विश्राद्धायनादारभ्व चत्वारिंशढ्षर्ष यावस्रुक्लेशादिभिर्युक्तो हाहेति कृत्वा रोधिति चिन्तयति च। अत ऊर्ष्व पूर्वोक्तक्लेशादिभिर्निवृत्तः सुखं

प्राप्स्यति, त्रिचत्वारिंशत्त्रिपक्चाशत्तिषष्टिवर्षेषु विशेषारिष्टभयम्, विशेषधर्माध्धनुष्ठानेन द्विसप्तत्यायुस्तीर्थ मृत्युश्यं। अरिष्टवर्षाणि विह्हाया-वशेषवर्षेषु धन-मान-यश-ग्राम-वाहनादिविविधसुखसाधनोपायैर्महत् सौख्यम् लोकपूजितो भूत्वा मेदिनीं वशमानेष्यतीति। मृग के निशेष 8 शेदों में से प्रथम मृगलक्षण-
मृग के पूर्वोक्त लक्षणों से युंक्त होकर सुप़ील, अत्यन्त सुन्दर, अनेक रूप धारण करनेवाला, विद्वान् और प्रभावशाली प्रथम मृगजाति का पुरुष होंता है।

इस जाति का मनुष्य श्रीभगवती दुर्गा के चरण-कमल का भक्त, अत्मन्त धनाब्य, सुन्दर, रूपदान्, बड़ा बुद्धिमान्, शुद्धाचरण वाला, दानधर्मादि क्रियाओं से युक्त, श्रेष्ठ कुल में जन्म, सम्पूर्ण विद्याओं में निरत और हैसमुख होता है। इसको पिता का उपार्जित धन, गृह, सौस्यादि अल्प होता है किन्तु स्वयं उपार्जन की हुई रमणीय वाटिका, गृह-भूमि इत्यादि से सुख का अनुभव करता है। बिना कारण प्रत्यक्ष बहुत से शत्रु झगड़ा करने को तैयार रहते और करते हैं। मानसिक पीड़ा और रोग से ग्रस्त रहता है। इसे स्नियों अधिक, पुत्र थोड़े, कम्यायें बहुत होती हैं। पहले, दूसरे, आठवें और घारहवें वर्षों में भयंकर बालारिष्ट का भय होता है। इसके निक्ल जाने पर पन्द्रहें वर्ष में अधिक सुख होता है। पिता का सुख धोड़ा होता है। बीस से तीस वर्ष पर्यन्त धन, मान, प्रतिष्ठादिकों से विपुल सुख होता है। ३३ वर्ष से लेकर 80 वर्ष तक अनेक प्रकार के क्लेशों से युक्त होता और हाहाकार कर रोता और चिन्ता करता है। इसके बाद पूर्वोक्त क्लेशादिकों से निवृत्त होकर सुख पावेगा। ४₹-६३-६₹ वर्षों में विशेष अरिष्ट का भय होता है। अतः विश्रेष धर्मादि अनुष्ठान के द्वारा अरिष्ट निषृत्त होकर ज२ वर्ष की आयु और तीर्थ में मृत्यु होती है। अरिष्ट वर्ष के निकल जाने पर ऐेष वर्षों में धन, मान, यंश, ग्राम, वाहनावि

सुख-साधन के अनेक उपायों से विपुल सुख और लोक में पूजनीय होकर पृर्थ्वी को वश्श में करेगा। इति।

## * * *

## द्वितीयमृगलक्षण्न

द्वितीयमृगस्त्वेलामसकतिललोमाधिकगात्रो>कारुणिकः पर्रब्बापहारी लम्बोदरो विवादी कृपणश्व भवति।

भवति च श्रेष्ठकुलप्रसूतोगधिकभातृमान् किन्त्वनुभवत्वेक-भातृभगिनी-सुखमधिकम्, निरतो बहुगोष्टां स्सेहबॉल्लोकपूजितश्थ, यमालयं गतानां सुन्दरवरणुत्रणामेकस्तिष्ठत्यन्ते कन्याश्धाउधिकाः। द्विभार्योडतिमनीषी क्षित्यादियुयुक्तश्र। चतुरेकादशन्नयोविशंशतिवर्षाण्यस्यागत्र शरीरे रोगादिक मृल्युसमकष्ट्रदं भविष्यति, एकविंशत्यब्दादारमैकोनपव्वाशद्धर्षावधिसम्मनधन संचयादियोगः। पज्वाश्वर्ष राजभयमनन्तरं राजयोगभोगादिसुषुं च भविष्थति। प्रायोड़्म रोगादिना शरीरकष्टं कुटुम्बसपलाभ्यां मानसीं व्यधाज्वाइन्नुभवति। क्वचित्तीर्थसेवी। सत्कर्माद्यनुष्ठानद्वारा सततिवर्वे तीर्थ निधनं भविष्यति।

## वितीय यृग्रुर्रे के सक्षण-

द्वितीय मृत पुख़ के शरीर में इल्ला, मसा, तिल और रोम अधिक होते हैं। यह बड़ा निर्दयी, दूसरों के द्रब्य को हरनेवाला, लम्बोदर विवादी और कृपण होता है।

इस जाति का मनुष्य उत्तम कुल में उत्पत्न होता है। इसे भाई अधिक होते हैं परन्तु एक भाई और बहन से अधिक जुख होता है। बह अधिक गोषी (समिति) में लवलीन, स्हे करनेवला और संसार में पूँ्नीय होता है। इसके कई सुन्दर और वीर पुत्र मर जाते हैं, अन्त में एक पुत्र तथा बहुत-सी-कन्यायें रह जाती हैं।

इसे दो स्त्रियाँ होती हैं। यह बड़ा बुद्धिमान्, पृथ्वी और धनादिकों से युक्त होता है। ४-११-१३-२३ वर्ष इसको अरिष्टप्रद होंगे। $२$ २ वर्ष से लेकर $४ ¢$ वर्ष तक सम्मान और धन-संचयादि का अच्छा योग है। 20 वर्ष में राजभय और इसके बाद राजयोग भोगादि का सुख होगा। प्रायः इसको रोगादि से शरीर कष्ट, कुटुम्ब और शत्रु के द्वारा मानसिक चिन्ता होगी। कभी-कभी तीर्थ करने वाला होगा। सत्क्मर्मादिक अनुष्ठान केद्वारा ७० वर्ष में तीर्थ-स्थान में मृत्यु होगी ॥इति।

## तृतीयमृगलक्षणम्

साधारणमृगन्यूनलक्ष्मोपलक्षितः शाखामृगस्वभावोडतिरुचिरालापी तृतीयो मृगः।

## फलानि-

एतज्ञातिविशिष्टो मर्त्यः धर्मात्माडतिपविन्रो विद्धानाढयो दक्षः सुशीलभूषणो वैक्यकार्यरतश्र, भवन्त्यस्य तीर्थप्रयाणसमये बहुविश्नानि। नाडयं कस्यचिन्मिम्रं द्वेषी वा। तिस्रो भार्याः समकन्यकाः पज्चपुग्राश्रास्य किंन्न्येकस्मात्पुत्रात् समधिकं सुखम्। पृथङ् निवासिनौ द्वौ श्रावेकस्त्वनुचरो विद्यया तृपगृहाद्धना़्तिः। मुह्डुर्मुछ्ड्: शरीरात्मनोः पीड्डा समुद्धवतीत्युद्विजते किं करोमि क्व गच्छामीति, पित्रोर्मातृसुखुखधिक त्रिंशद्वर्षात्पत्व्वाशद्वर्शपर्यन्तं राजयोगं, भवने द्रव्यसज्न्वयज्व स्वमर्जयति भूगृह्बहुमानादिकमन्ते सत्कमदिवपूजनयजनाद्यनुष्ठानद्वाराज्शीतिवर्षे पुण्यप्रदेशे मृत्युरिति।

अब पृतीय दृर लक्षण कहते हैं-
साधारण मृत के कुछ लक्षणों से युक्त चछ्वल और मनोहर वांणी बोलने बाला तृतीय मृग पुरुष होता है।

फल-
इस जाति का मनुष्य धर्मात्मा, अत्यन्त पवित्र, विद्वान, धनी, सतुर, मीलवान् और ख्यापारी होता है। इसे तीर्थयाग्रा के समय

अनेक विघ्न होते हैं। यह किसी का मित्र अथवा द्वेषी नहीं होता। इसे तीन स्त्रियों，कन्यायें सम और पॉँच पुत्र होते हैं परन्तु एक पुत्र से अधिक सुख होता है। इसके दो माई अलग रहते हैं，एक उसका सेवक होता है। विद्या के द्वारा राजगृह से द्रव्य की प्रासि होती है। इसके शरीर और आत्मा को बारम्बार कष्ट हुआ करता है，इस कारण क्या करूँ，कहाँ जाऊँ？इस प्रकार बहुत घबड़ाया करता है। पिता की अपेक्षा माता का सुख अधिक होता है। तीस से $\varphi \circ$ वर्ष पर्यन्त राजयोग और पर में द्रष्यसंचय होता है। पृर्यी，गृह्，अनेक प्रकार की मान－प्रतिष्ठा स्वयं उत्पन्न करता है। देवता की पूजा और यझादि सत्कर्म के द्वारा ५० वर्ष पर्यन्त जीवित रहकर तीर्थ में मृत्यु पाता है।事

## चतुर्थमृगलक्षणम्

स्वल्पसाधारणमृगलक्षणज्चितोरतिद्रुई्बलो रूपहीनो बहुसौख्य－ धनाम्बराध्यालस्ययुक्त：सर्वविद्यारतश्षतुर्थमृगः।

भबत्ययं सतुुुलप्रसूतो भाग्यवानलसगात्रो sध्ययनाध्यापना－ दिकार्यपरवशाद्विशेषदेवार्चनाद्यनुष्ठानाद्विरहित：सम्पन्निधानो बहुपुन्र＇्रातृयुतो रतथ्थ गोष्ठ्रां वाटिकदिकार्येष्चैक्यकर्मणि एकावलीयोगविशिष्टो मध्यमायुरिति।

प्रथमादिचतुर्थान्तमूगलक्ष्मणां विशेषलक्ष्मफलान्युक्तानि，शेषं साधारणमृगलक्ष्मवर्ज्नयम्। हति।।

अब चुर्षम्यृतलक्षण कहते हों－
साधारण मृग थोड़े लक्षणों से युक्त बहुत दुर्बल，कुरूप किन्तु सीकीन，धन－वस्त्रादि तथा आलस्य से युक्त सम्पूर्ण विद्या में रत चतुर्य मृं होता है।

चतुर्य मृंग जाति का पुरुष कुल्लीन，भाग्यवान्，आलसी，पठन－

पाठन आदि कार्य में लीन होने के कारण विशेष देवपूजन और अनुष्ठनादिसे रहित, अधिक सम्पत्ति, बहुत पुत्र और भाइयों से युक्त, गोष्ठी वाटिकादि तथा एकता प्रतिपादक (ऐक्य-स्थापन) कार्यों में लीन होता है। यह एकावली योग से युक्त और मध्यमा-युवाला होता है।

प्रथम से लेकर चतुर्थ मृग तक विशेष लक्षण और फल कहे भये हैं। शेष साधारण मृग के समान जानना चाहिए।

तुरग-टृषभ-प्रकृतिलक्षणचिह्नानि
शुचिस्निग्धशीलगुणरागविहाररहितौ मृगद्वेषस्त्र्रर्थरूपबहुशोकसम्पादितौ तुरगवृषभौ जगद्वहुलौ स्तः।

## तत्रादौ तुरगसामान्यभेद:

भचन्ति ते दर्पवदतिविवादिकुटिलपितृश्रतिकूलधर्मविरहितहिंसकाकारुणिकनिम्नोन्नतक्लेवरपरिश्रमिलोल्लुपनिर्भया: कामुक-हठशीलमल-दूष्ति-स्वभावकाथपोषकाधारपालविकटकबहुप्रजाथुक्ता: किज्च सूकरपालिता: काकभृगालसारमेयानना: गृब्दीकष्ठसोत्कम्ठचज्चलां दीर्घ-स्थूलदन्त-रड्गिविरड्नग्श्धोपलभन्ते। तुरग-वृषभप्रुरुषाः बाल्ये मातृहाः भविष्यमन्त्येषां प्राय: षट् पालका: जननीजनकोदारकहारिक: भातृ-भगिनीसवलिता: संकलनेन षोडश-सहजशावकाः। किन्नु जातवेदसि यजनहूतकायास्तेषामेकस्यावसाने स्थितिरिति।
अपरज्ञा-
धनवसुकृता सर्वे तुरंगा रूपसंस्थिताः।
सम्मानादरसंयुक्ता द्वाभ्यामेकस्य संस्थितिः $\|?\|$
वसुयुक्ते त्वेकपज्वाशज्जनन्याः वसुहीने त्वेकपञ्वाशर्वर्षे जनकस्य वियोगोऽ्यका द्विर्द्धादश-द्वाविंशति-द्वात्विंशद्द्विचत्वारिंश्द्धायने पितुः। 6

त्रित्रयोदश-त्रयोविंशति-त्रयस्त्रिंशत्त्रिचत्वारिंशच्छरस्तु यथासंभवम् भाग्योदय इति। षोडश-षट्विंशति-षट्त्रिंशत्-षट्चत्चारिंशत्-षट्पज्ञ्वाशत्-षटषष्टिवर्ष्षु पत्नीवियोगोच्चतस्वाह्नपतनकारागारवासराजशत्रुचौरभयहिंसाद्यनेक्दुर्योगरोगशोकधननाशशरीरपरिवर्तनादीनां प्रासि: संस्कारवशादिति।

## दुरग वृष्भ के ज्रतिलकृण और चिहा-

इस संसार में तुरग और वृषभ जाति के पुरुष अधिक होते हैं। ये पविन्रता, स्नेह, शील, गुण, राग और विहार से रहित, मृग से द्वेष और स्त्रियों के लिए अनेक रूप धारण करनेवाले तथा बहुत शोक से युक्त होते हें।

## तुरग का सामान्य शैद-

तुरग जाति के पुरुष धमण्डी, झगड़ालू, कुटिल, माता-पित्ता के प्रतिकूल, धर्म से रहित, हिंसक, निर्दर्यी, ऊँची नीची (बेडौल) शरीर वाले, परिश्रमी, लोभी, निडर, कामी, हठी, मलिन-स्वभाव, अपने शरीर का पालन करनेदाले, आश्रय के रक्षक, विकंटक, अधिक सन्तान से युक्त, किन्तु सूकर के समान कण्ठवाले, उत्साह युक्त, चंघल, लम्बे और मोटे दाँतों से युक्त और रंगं-विरंग के होते हैं। इनकी मातायें बाल्यकाल में मर जाती हैं, इनके रक्षक माता-पिता, लड़के-लड़कियों, भाई-बहिन प्राय: छः-छः होते हैं। सड़्लन से सब मिलकर ? ₹ भाई-बह्टिन और लड़के होते हैं। इनके पुत्रादि प्रायः मर जाते हैं या किसी प्रकार उनसे अरुचि हो जाती है। अतः एक भाई-बहिन और पुत्र से सुख ह्रोता है।

तुरग जाति के पुरुष प्रायः धनादि सम्पत्ति से युक्त, रूपवान्, सम्मान और आदर से खुक्त और पतीवियोगी होते हैं।

द्रब्य-युक्त होने पर $\& ?$ वर्ष में माता, द्रख्य-हीन होने पर $५ ?$ वर्ष में fि का वियोग या २-२२-२२-३२-४२ वर्षो में पिता का

वियोग होगा। ३-१३-३३-४३ वर्षो में यथासम्भव भाज्योदय होता है। $\uparrow ६-२ ६-३ ६-४ \xi-६ ६-६ ६ ~ व र ् ष ो ं ~ म े ं ~ स ् त ् र ी व ि य ो ग ज न ् य ~$ रदन, ऊँचे वृक्ष और वाहन से गिरना, कारागार, राजश्रु या चौरकर्म से भय, संख्कारवश हिंसा आदि अनेक दुष्टयोग, रोग, शेक, धन-नाश और मरण होंगे।

## वृषभसामान्यभेद:-

बृह्मनलिसाधारणेन निम्नभालप्रदेश-स्थूलकेशक्लिष्टप्रतिकायायासिसद्य:प्रतिकार्यप्रवृत्ताः विगतजात्यभिमानातिभोगाभिलाषुकश्रवणलोभविशालवक्षस्थलक्षपितदन्तस्थूल कर खेखाड्म्नयो गौरवर्णाश्व वृषभाः। उपार्जयन्ति, कुटुम्बाभरणाय सदसदुपायैवसूनि। निड्दिनवसुचिन्तानिमग्नाः बज्वकोचत्रभवाद्यधिकोदरदाम्पत्ययुतस्थूलमहिलास्वकायाः बहुुुपजसश्य संक्लने षट्द्वादशषोडशार्भका सुखन्तु ज्ञानिनापित्टभक्तेनैकेत्न सुतेन। भवत्येषां पितृवद्बहुपालकाः अशीत्यधिक मायुय्र्येति।

वृषभ का सामान्य शेद- वृषभ जातिवाले पुरुषों के मस्तक बड़े, नेत्र साधारण, माथा गम्भीर, बाल मोटे, प्रकृति कठोर होती है। ये शारीरिक परिश्रम करनेवाले, प्रत्येक कार्य में तुरन्त तैयार, जाति के अभिमान से रहित, अधिक भोग की इच्छावाले होते हैं। इनके कानों में बाल, छाती चौड़ी, दाँत छोटे, हाथ की रेखायें और पैर स्थूल, शरीर गौर होता है। कुटुम्ब के पालनार्थ ये अचित-अनुचित सब प्रकार के कर्मों से द्रव्योपार्जन कर लेते हैं। रात-दिन द्रव्य की चित्ता में डूबे रहते हैं। ये वञ्कक (ऊपरी मेल करनेवाले), उच्च स्वर से बोलने और बड़े पेटवाले; सदा स्त्री से युक्त होते हैं। इनकी स्त्रियाँ और ये प्राय: मोटे होते हैं, इनकी सन्तानें ६,१२ या १६ होती हैं किन्तु ज्ञानी, पंडित, पितृभक्त एक पुत्र से सुख होता है। पिता के समान के रक्षक इन्हें कई एक होते हैं। 50 वर्ष से अधिक आयु होती है। शेंष इष्टनिष्ट तुरग के समान जानना।

## प्रथमतुरगभेद:-

प्रथमतुरगास्त्वाढयकुलोत्पन्न-पूर्वजन्मे देवार्चन-विरहितत्वाद्भूरिक्लेशश्धिताः कुष्ठादिव्यवधियुताश्र्व भविष्यन्ति। नाइधिका मतिरेषां धर्मेषु दाम्पत्य-स्नेहविहीनाश्र। प्रथम-तृतीय-नवम-द्धादशषोडशवर्षाण्यरिष्टकराण्येषामेषु भौतिकक्लेशाग्नेभयोर्ध्वपतन्लि्लिहिकाव्रणाद्यनेकव्याध्यो मृत्यु-समकष्टकरा: भविष्यन्ति। पित्रोरेकस्य स्थितिश्र। द्वाविंशतिवर्षे तु बन्धनमपमानं का निश्चितम्, त्रिशद्व-र्षाच्चत्वारिंशद्वर्षपर्यन्तमृगपुत्रार्थ-दारनिवासक्षितिक्लहादिभिर्दु:खं भविष्यत्यत ऊर्ध्वं पुर्षार्थ प्रवृत्तिश्र्व। यमालयप्रस्थितां बहुपुत्रदारकाणां द्बयो: पुत्रयोरेकात्मजायाश्व स्थिति:। त्रिचत्वारिंशद्धायने नैरुज्यबलपुष्टिपुन्रदारजनादिसर्वसौख्यानि च। एभ्य: पूर्वमेवैषां गृहिण्योडमरलोकं प्रयास्यन्ति। द्वौौ श्रातरावेषां तयोरेक: सुखान्वितोऽपरस्तु प्रायः क्लेशाकुलितः। प्रथमतुरगाणां परमायु: सप्ततिवर्षाणि। शेषं सामान्यतुरगवदिति।

## तुरग का प्रथमभेद-

प्रथम तुरग जाति का मनुष्य धनी कुल में उत्पम्न, पूर्व जन्म से देवार्चमादि न करने के कारण बहुत क्लेशित और कुष्ठादि अनेक ब्याधियों से युक्त होते हैं। इनकी मति धर्म में अधिक नहीं होती और ये दाम्पत्य-प्रेम से रहित होते हैं। २-३-६-१२-१६ वर्ष इनके प्राय: अनिष्ट करनेवाले होते हैं। इन वर्षों में भौतिक कस, अन्निभय, उत्च-स्थान से पतन, पिलही और व्रण इत्यादि अनेक व्याधियों मृत्यु समान कृष्ट्रायक होती हैं। इनके माता और पितां में से एक का वियोग बाल्यावस्था में ही होता है। २२ वर्ष में बन्धन या अपमान अवश्य ह्नेता है। ३० से 80 वर्ष पर्यन्त $\mathrm{F}^{\circ} ण$, पुक्र, प्रष्य, स्ती, वासस्थान, पृष्वी और कहह आदि द्वारा दु:ख होगा। अनन्तर पुरुषार्श में प्रवृत्ति होगी। इनके बहुत पुत्र तथा

कन्यायें मर जायेंगी, किन्तु दो पुत्र और एक कन्या जीवित रहेगी। ४३ वें वर्ष में आरोग्य, बल, पुष्टि, पुत्र, स्त्री, धनादिकों से सुख होगा। इससे पहले ही इनकी स्त्रियाँ मर जाती हैं। इनके दो भाई होते हैं, उनमें एक सुखी और दूसरा दुःखी होता है। प्रथम तुरग पुरुषों की परमायु ७० वर्ष तक होती है। शेष सामान्य तुरग के समान जानना। नुरगद्वितीयक्षेद:-
भवन्ति धनाढ्याहडूारिविवादिनः स्वदातितोड्नादृताः परतोउप्पमानिताश्व, द्वितीयतुरगजातयः पुरुषाः। रजकान्तिके वासिनस्तत्संसर्गिणश्रात एव न गच्छन्ति, केचिदपि तदछ्रुणे न भाषन्ते च। लाभस्तु नैषां दृश्यन्ते किन्तु यत्र तत्र धनक्षतिरेव। स्वजनैः सह कलहातिरेकात् पलायनमिच्छन्ति किं कुर्म:;क्ष गच्छाम इति व्यथन्ते च। त्रिषट्द्वादशविंशतिपज्चविंशतिषट्विंशतिवर्षेषु शीतलानेत्रार्ति ज्वरमहाक्लेशाइ्गनाक्लेशादयो भविष्यन्ति। सत्तविंशतिवर्षे सुखसन्तानादियोगः द्विचत्वारिंशद्धायने पुत्रद्वारा धनमानाद्यासिश्र। चत्वारः पुत्रा: कन्या: वा सुशीला महिलः करिष्यन्ति च द्विन्चिस्थाने तीर्थ वा वासः भवन्ति सम्पत्तियुक्ताःः त्रिपज्चाशद्वर्षे दण्डधरो भूत्वा देशान्तरे ब्रजन्तीति केचित्। सामान्यतुरगोक्तारिष्टवर्षष वातच्छर्द्रिकासरोगाद़यो भविष्यन्ति। एकोनाशीतिवर्ष स-सुखं मृत्युरिति। शेषं सामान्यतुरगवत्।

## दुरग का द्वितीय शेद-

द्वितीय तुरग जाति के पुरुष धनी, अहड़ुरी, अगड़ालू, अपने जातिवालों से अनादर पाते और दूसरों से अपमानित होते हैं। ये प्राय: धोबी के निकट बसते और उनके संसर्गी होते हैं। अतः उनके अद्भने में न कोई जाते, न उनसे बा़त करते हैं। इनको लाभ बहुत कम, किन्तु धन की हानि इतस्ततः होती है। ये अपने कुटुम्ब

के लोगों से झगड़ा होने पर भागने की इच्छा करते हैं और क्या करें? कहाँ जांयें? इस प्रकार की चिन्ता करते हैं। ३-६-१२-२०-२५-२६ वर्षों में शीतला, नेत्रपीड़ा, ज्वरादि भारी क्लेश, स्त्रीक्लेशादि की पीड़ा होगी। २७ वर्ष में सुख और सन्तान आदि का योग होगा। ४२ वर्ष में पुत्र द्वारा धन, मान की प्राप्ति होगी। इन्हें चार पुत्र वा कन्यायें होंगी। पत्नी सुशीला होगी। इस जाति के पुरुष दो-तीन स्थान अथवा तीर्थ में वास करते हैं और सम्पत्ति युक्त भी होते हैं। कोई व्यक्ति $\varsigma ३$ वर्ष में दण्ड धारण कर देशान्तर गमन करते हैं। सामान्य तुरग के कहे हुए अरिष्ट वर्षों में वायु, सर्दी और कास-रोगादि होंगे। ज६ वर्ष में सुखपूर्वक मृत्यु होगी। शेष सामान्य तुरग के समान जानना।

## gुरगृतीयअेद:

भवन्ति श्रेष्ठकुलोत्पन्नधनाढ्य-सुन्दरपुण्यक्षेत्रान्तिकनिवासिराजसेवका: द्यूतदौत्यबन्धकीगृह-मद्यपानरतास्तृत्तीयतुरगपुरुषा: बन्धकीभ्यो पित्रर्जितधनवसनाभरणादीनि प्रदायान्ते वराटकाः महादुःखग्रभोक्तारो हाहेति स्दन्तः सर्वतस्तिरस्कृताः स्वैरिणीसङ्नदोषणव्रणार्तिवातकिनः पुन्नदारादितः क्लेशिताश्र 1 बहुनाशात् किं कुर्म: क गच्छाम इति मुहुर्मुहुश्चिन्तयन्ति। त्रिवासरतूर्यवासी वा पित्रोरेकस्य चिरकालस्थितिः, पज्चपुत्राणाज्च तच्तुल्याः भ्रातृभगिन्यः। बहुभार्या: दीर्घायुषोडवसाने देवपदपव्षरतास्तीर्थ निधनं लप्स्यन्ते। शेषं सामान्यतुरगवत्।

## दुरंग का वृतीय शेद

तृतीय तुरम जाति के पुरुष अच्छे कुल में उत्पम्न, धनी, सुन्दर: पुण्य क्षेत्र के समीप रहनेवाले, राजसेवक, द्यूत (जूआ), दूत के कर्म तथा वेश्याओं के घर में मदिरा-पान करने में निरत होते हैं। पिता के पैदा किये हुए धन, वस्व और आभूषणों को वेक्ष्याओं को द्वेकर

अन्त में दरिद्र होकर अत्यन्त दुःख भोग़ने से हाहाकार कर रोते और सबसे तिरस्कृत होते हैं। पुंश्रली स्त्रियों के संसर्ग दोष से व्रण तथा वात ण्येगी और स्त्री-पुत्रादिकों से पीड़ित होते हैं। अधिक नाश होने से क्या करें? कहाँ जायँ ? इस प्रकार बारम्बार चिन्ता करते हैं। ये तीन-चार स्थानों में रहते हैं। इनके पिता और माता में से एक बहुत काल तक जीते हैं और पाँच पुत्रों में से एक चिरज्जीवी होता है। संख्या में पुँ्र के बराबर भाई और बहिन होते हैं। इन्हें स्त्रियाँ अधिक होती हैं। ये दीर्घायु होते और अन्त में देवभक होकर तीर्थ में मरते हैं। शेष सामान्य तुरग के समान जानना।

## दुरग च्ुर्य शेद:-

जायन्ते सरित्तटनिवासिनो ज्ञानकीर्तिमन्तोऽतिलोभिन: सत्कुलप्रसूताश्य चतुर्थतुरगा:। नापितसखित्वादुचितानुचितकर्मकरा बहूद्योगलब्धधना एकावलीयोगयुक्ताश्र। (यथैक-दारक-दारिका-दारभातू-भगिनीसहित:,क्वचिदेकाकी चेत्येकावलियोग:) शेषं सामान्यतुरगवत्।

एवं सन्धिवशात् प्रथमद्वितीयचतुर्थवृषभपुरुषाणामपि तुरगवत्फलानि झेयानीति।

## तुरग का चुुर्थ श्षेद—

चतुर्थ तुरग जाति के पुरुष नदी तट के निषासी, ज्ञानी, कीर्तिमान्, लोभी और सत्कुल में उत्पन्न होते हैं। नापित के साय मैन्री होने से उचित-अनुचित कर्म करते और बहुत उद्योग से द्रव्योपार्जन करते हैं। एकाबली योग से युक्त होते हैं। (एक पुत्र, कन्या, स्त्री, भाई, बहिन अथवा अकेले रहने को भी एकावली योग कहते हैं)।

इसी प्रकार प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ वृषभ पुकुषों के भी लक्षण और फल जानना।

पम्मिन्यादित्रु्यमहिलानां जीवनचरित्रणणि तत्राइडदौ पद्मिन्या:
विश्राजतेऽतिसुशीला धर्मपरायणा पितृसेविनी सुन्दरसुतृत्तारबिन्दसुरभितायतशरीरा कोमलकुन्तला मधुरभाषिणी द्रुतमाकर्षिणी देवरूपा विशालनयना परिपूर्णचन्द्रानना पतिभक्तिपरायणा सूक्ष्म्मासाकर्णाधरोष्छकराड्गुलिशालिनी कम्बुकप्ठी प्रसन्नानना सत्यप्रियेश्वराराधनतत्परा स्वल्पभोगेच्छावती लज्जाचती मानिनी श्यामा प्रतिक्षणं कायतत्परा हंसनधूगमना पद्मिनीति।

## गन्धान्तरे च-

निद्रा चाइल्पसुबुद्धिचन्द्रवदना छन्नामरालश्वना। तन्वी हंसवधूगति: सुललितं वेषं सदा विभती ।। मध्यन्वापि बलिन्रयाड्ड़ितमसौ रक्ताम्बराकांक्षिणी । सुग्रीवा जुभनासिकेति गदिता नार्युत्तमा पम्मिनी॥११।

क्रमात् पश्यतीयमधिकसमाल्पवयस्कान् पितृभ्रतृपुन्र्रत्ं। भवति च देवता-गत्धर्व-नर-मोहिनी सधवाल्पात्मजा साध्वी सुपुत्रजननी कनकणालिका रत्ताम्बराकांक्षिणी नरलोकेऽपि लीलया सुरभिदानार्थमेवागता युगाद्यन्नप्रभवा पद्यिनी दुर्लभैकैकाल्प्यस्थितिमती भवतीति।

अब पपिनी इत्यादि चार प्रकार की स्स्नियों का जीवन चरित्र कहते है।

## प्रथम पध्यिनी का-

पब्मिनी जाति की स्त्री बड़ी सुशील, धर्मपरायणा, पितां, माता की सेवा करनेवाली, अति सुन्दरी होती है। इसके साँचे से ढले सुडौल शरीर से कमल के समान सुगन्धि निकलती है। यह लम्बे कद की और कोमल केशवाली होती है। इसका भाषण अति मधुर होता है, दृष्टि पड़ते ही चित्त आकर्षित कर लेती और देवता के समान होती है। इसकी बड़ी-बड़ी आँखें और मुख पूर्णिमा के चन्द्रमा-सा होता है, अपने पति में अत्यन्त भक्ति रखती है। इसके नाक, कान, अधरोष्ठ और हाथ की अड्जुलियाँ सूक्ष्म होती हैं, ग्रीवा शः्न्न-सा और मुख सर्वदा प्रसक्न रहता है। इसे सत्य प्रिय और ईभ्यर में प्रेम होता है। अतएव भोग की इच्छा, काम, लड्ञा और मान अधिक होता है। यह श्यामा (सर्वदा उन्नत यौवनवाली,) निरन्तर कार्य में लवलीन रहती है। इसकी चाल हंसाड़ना के समान शेभायमान होती है। प्रथम प्लोक का भाव स्पष्ट और गतार्थ हो चुका है। पद्मिनी प्रत्येक बड़े मनुष्य को पितातुल्य, समवयख्कों को भाई तथा छोटों को पुत्र के समान समझती है, यह देवता, गन्धर्व, मनुष्य सबको मोह लेती है, यह सदा सौभाग्यवती और घोड़ी सन्तानवाली, पतिव्रताओ में श्रेष्ठ, अच्छे पुत्र को पैदा करती और आश्रितों का पालन करनेवाली होती है। लालवस्त्र इसे अधिक ग्रिय होता है। यह मृत्यु लोक में अपनी लीला से सुगन्धित देने के लिए युग के आदि तथा अन्त में अकेले उत्पन्न होकर थोड़े काल तक रहनेवाली पय्भिनी दुर्लभ होती है।

चित्रिषी-सामान्यभेव:-
जायन्ते हि पतिव्रता: प्रणयवत्यो भोजने शीघ्रकारिण्योडल्पभोगेच्छावत्यो हावभावादि-शृङ्राराङ्जेषु निमग्ना:, क्षित्रं कार्यकारिण्योडल्पश्रमवत्यो धुद्विमत्यो विदुष्या संगीते चित्र-

कर्मणि च रता: शृड़गारानक्सरे तीर्थव्रतसाधुसेनिन्योऽपि सुरूपनृत्तभालचत्यस्तन्नंग्यक्ष्वपलेक्षणा: नातिदीर्घहुख्वांगा: गजगममिन्यो मयूरस्वना: पीनओणि-पयोधरा: भृड्रीक्यामलकुन्तलाचारृकृशजन्धुन्विता: बहुरूपभारिण्यस्त्रफान्चिता: सुकुमारांग्यस्दित्रिणी-सीमन्तिन्य : ।

सथोक्तं चन्सन्तने-
तन्वंगी गजगामिनी चपलद्दक्क संगीत-शिल्फान्विता नो हुस्वा न पृथूत्तरा च सुकृशा मध्ये मयूरस्वरा। पीनश्रोणिपयोधरे सुललिते जंधे वहन्ती कृशे कामाम्भोमधुगन्ध्यथौष्ठमपि सा तुच्छोन्नतं वत्सलाओ१॥ फलननि-
चित्रचित्रकारिण्यम्दित्रिण्य: षड्रसस्वाद्ड: स्वजनपदकार्यज्ञा: शुचिश्शुचिस्मिता: बालिका: साधुसधबाल्पतरा: जगद्दुर्लभा: भवन्ति च सुगूढकूटवार्ताविज्ञाननिरता: अजातम्रसवेच्छा: स्तनमण्डलगोपिका: पतिस्वजनस्नेहाधिका: नृत्योत्सवादिदशनिच्छावत्यो बराटकसंस्त्यायेइपि खतु महिष्यो भवेयु:। बहुसंख्युुक्तानां शानकानां ₹यस्तिष्ठस्त्येकस्य च नृपालयोगः। सर्ततिसमा: सोदरा: न जीवन्ति प्रायभ्थिन्रयुकाश्रिंत्रिण्यो जीचल्ति चेत्तदाइष्टचत्वारिंशद्वर्षपरमायुः। अपौ षोडषचतुर्विशतिद्धान्तिंशक्धत्वारिंशद्धर्ष्वन्निव्यथा द्रणज्वरशोकाष्टभयम्। सप्तचतुर्₹ैकबिंशत्तिबर्षे शतृ शर्त्रपुत्रवसुपतिलब्धप्रत्तिषाबनेकराजतुल्यसुखानि च भबन्तीतिं।

## चित्रिणी

चित्रिणी जाति की स्त्रियाँ पतिव्रता, स्वजनों पर स्नेह करने दाली होती हैं। ये भोजन में शीघ्रता करती हैं। भोग की इच्छा इनमें कम होती है। हाव-भाव शृद्ञारादि में इनका मन अधिक लगता है। प्रत्येक कार्य को शीप्र कर लेती है। अधिक श्रम इनसे नहीं हो सकता, परन्तु बुद्धिमती और विदुषी होती हैं, गाना बजाना और चित्रकर्म इन्हें अधिक प्रिय है। ये तीर्थ, द्रत और साधु-सेवा करती हैं किन्तु श्रृंयार-समय में इनकी चिन्ता भी नहीं करती और बड़ी सुन्दर होती हैं, इनका मस्तक गोलाकार, अंग कृश और नेत्र चक्वल होते हैं। चाल मतवाली, हाथी और स्वर मयूर के समान होता है, कमर और स्तन भी पीन (मोटे) होते हैं। बाल भौरों-सा काला, जंषे सुन्दर और कृश होते हैं। ये अनेक रूप को धारण करनेवाली कोमलाड्गी और लज्ञा से युक्त होती हैं, क्लोकार्य गतार्थ हो चुका है।

## कलन-

अद्दुत चित्रों का निर्माण करनेवाली चित्रिणी स्त्रियाँ मधुरादि षड्रसों के स्वाद का अनुभव करनेवाली तथा अपने देग्र की रीति जानने वाली साध्र्वी और सौभाग्यवती बालिका संसार में दुर्लभ, थोड़ी मिलती हैं। ये गूढ़ और कूट वार्ता, किलास तथा विज्ञान में निपुण होती हैं। अपने स्तन-मप्डल की रक्षा भली प्रकार करती हैं, अतएव प्रायः इनको प्रस्र की इच्छा कम होती है। अपने पति और सेयकों पर अधिक स्नेह करती हैं। इन्हें नृत्य और उत्सवादि देखने की इच्छा बहुत होती है। ये दरिद्र के घर में उत्पन्र होकर भी पटरानी होती हैं, अधिक सत्तति होने पर भी प्रायः तीन सन्तान जीवित रहती हैं, उनमें एक को राजयोग होता है, संख्या में सन्तान के बराकर भाई भी होते हैं। चित्रिणी जाति की

स्त्रियाँ प्राय: जीवित नहीं रहतीं। यदि जीती हैं तो $४ \zeta$ वर्ष तक इनकी परमायु है। ५-१६-२४-३२-४० इन वर्षों में अग्नि भय, द्रण, बंवर, शोकादि अनेक कष्ट होते हैं। ७,१४,२? और २₹ वर्षों में भाई, पति, पुत्र और धन की प्रात्ति होती हैं तथा पति को प्रतिष्ठ-प्राप्ति इत्यादि अनेक राज्यतुल्य सुख होता है। इति। प्रथमा चित्रिणी-
पूर्वोक्ता 1 खिलसामान्यचित्रिणीलक्षणाड्ड्तिता: सुशीला: अतिमनोहराः प्रभावचत्यो विचक्षणा अनेकरूपधराः प्रथम-चित्रिणीसीमन्तिन्य:। सत्कुलोत्पन्ना इमाः सामान्यपितृगृहाच्छ़ेष्ठतिगृहमान्नुवन्ति। एवं पिन्रोरेकस्य घतिन्योडत एव परतः पोषिताः विवाहिताश्व भवन्त्यासाम्पतय: सौन्दर्य ${ }^{\text {णयविद्यादिसद्डुणविशिए्टा: }}$ भाग्यवन्तः। कन्याद्वयैक्पुत्रस्य च सुखमासाम्। विवाहोत्तरं प्रति सप्तवर्षे पत्युर्भाग्योदयः। प्रत्यष्टवर्षेषु पतिशरीरकष्टधनरिपुकष्टादिभयज्च भवति। सद्दर्मानुष्ठानेनाररिष्टशान्तिः। अष्टचत्वारिंशत्वष्टिवर्ष का याबत् परमायुः। सुतीर्थ पत्यु: पुरतो मृत्युश्येति। प्रश्म चित्रिणी
पूर्वोक्त सामान्य चित्रिणी के सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त सुन्दर शीलवाली सुन्दरी, प्रभावशालिनी, विदुषी, अनेकरूप धारण करनेवाली प्रयम चिश्रिणी जाति की स्त्रियाँ होती हैं।

ये अच्छे कुल में उत्पन्न होती हैं, सामान्य पितृगृह से श्रेष्ठ पतिगृष्ठ में जाती हैं, इनकी बाल्यावस्या में ही मात्ता-पिता में से एक की मृत्यु हो जाती है। इसलिए दूसरों (सम्बन्धियों) के द्वारा इनका पालन-पोषण और विवाहादि किया जगता है। इनके पति सुन्दरता, प्रेम, विद्या इत्यादि अच्छे गुणों से युक्त और भाग्यवान् होते हैं, इनको दो कन्या और एक पुत्र से सुख होता है। विवाह के

बाद हर सातवें वर्षों में पति का भाग्योदय और हर आठवें दर्षों में पति को शारीरिक कष्ट होता है तथा धन और शत्रुओं के द्वारा कष्ट होता है। इनकी शान्ति के लिए उत्तमोत्तम धर्मादि अनुष्ठान करना उचित है। $8 \varsigma$ या ६० वर्ष तक इनकी परमायु है। पति के सामने किसी अच्छे तीर्थ में इनकी मृत्यु होती है।

## द्वितीया चित्रिणी

द्वितीयाश्वित्रिण्यश्चैलामसकतिलादियुक्ता: यत्किज्चित्सामान्यचित्रिणीलक्षणाञ्चिता: दानत्रतशीलाः सुशीलास्तीर्थकारिण्य: देव-भक्तिरता: दाम्पत्यप्रेमयुत्तां: सधदाश्काढया: सत्त्वण्णभूषणा: सद्धर्मपरायणा: कीर्तिमत्यः स्वश्रुस्वसुराल्पसुखज्ञा: भवन्ति, गच्छति पितृतृहापेक्षया विशिष्टपतिभवनेषु, भवन्ति च पित्रो: प्रिया: सश्रातृभगिन्य: प्राग्जन्मनि देवार्चनादि सद्धर्मविरहितत्वद्वन्ध्र्या मृतवत्सायोगयुक्तः वाड्त एव पुत्रार्थ मुहुर्मुछ्ड: हाहेति रुदन्ति। जामातृ-दौहित्रदुहितृपां संज्ञाडपि न ज्ञायते पतिभाग्योदयारिष्टं स्वक्रीयक्ष सामान्यचित्रिणीवदित्यसारोऽयं खलु संसार:, दृश्यन्ते च प्राय: बसुमती गुणनती लोक्वतिपालिनी धर्म-परायणा सुशीला ललना: पुत्रहीना: सुन्द्यो रमफ्य: पतिसैखविहीना: अशुचि-धर्मपराह्तुख्यः प्रमदा: पुग्रादि-युक्ता: भवन्तीति वैनी विचिन्रा गतिः।

वृतीया चिन्चिषी-
तृतीयाभ्रज्वलस्वभावा: रुचिरालापिन्बो वार्तान्ते ह्युत्तमरसदायिन्यो भवर्तीति शेषं द्वितीया चित्रिणीयदिति।

## हितीय नित्रिणी-

द्वितीया चिश्रिंणी इल्ला, मसा और तिलादि तथा सामान्य

चिश्रिणी के कुछ लक्षणों से युक्त होती हैं। ये दान, व्रत और तीर्थ करने वाली सुश्रीला और देवताओं में भक्ति करनेवाली होती हैं। पति और पत्नी में परस्पर प्रेम भी रहता है। ये सधवा और धन-धान्य से परिपूर्ण होती हैं। अच्छे-अच्छे सुवर्ण के आभूषणों से युक्त सद्धर्मपरायणा और यर्शस्विनी होती हैं, सास और ससुर का सुख इनको कम होता है। ये भी साधारण पितृ गृह की अपेक्षा श्रेष्ठ पति के घर में जाती हैं। माता-पिता को अतिग्रिय और भाई तथा बहिन से युक्त होती हैं, पूर्वजन्म में देवार्चनादि सद्धर्म से विमुख होने के कारण बन्ध्या या मृतवत्सा योगवाली होती हैं, अतएव पुत्र के लिए बार-घार रुदन किया करती हैं। दामाद (जामाता), नाती और दुहिता का नाम तक नहीं जानतीं-अर्यात् इच्छा रहते भी इनको उक्त बातों की प्राष्ति नहीं होती है। पति का भाग्योदय, अरिष्टि तथा अपना भाग्योदय, अरिष्ट सामान्य चित्रिणी के समान होता है। खेद की बात यह है कि संसार वस्तुतः असार ही है। प्राय: देखा जाता है कि धनवती, गुणवती, परोपकारिणी, धर्मपरायणा, सुशीला स्त्रियाँ पुत्रहीन, सुन्दरी रमणी पति के सुख से वन्षित, मलिना और धर्म से रहित स्त्रियाँ पतिपुत्रादि से युक्त होती हैं। यही ईश्थर की लीला है।इति।

## दृर्तीय-चिन्रियी-

तृतीया चिस्रिणी स्वभाव की चंचल, सुन्दर वाणीवाली, वार्ताविलास में उत्तम आनन्द देनेवाली होती हैं। शेष द्वितीया चिस्रिणी के समान जानना। इति।

चनुर्थ-चित्रिणी-
चठुर्थ-चित्रिज्यस्त्व लक्षणे तृतीयातोऽपि न्यूनतरलक्षणा: अतिदु़्बलखिन्नाबयवाः अनुकूल रूपगुणाद्युग्रेपतित्वात्रायसत्रतितूकूलाः भबन्ति। सतुकुलग्रसूताः सूपकार्ये कोषकार्ये च
पूर्वार्द्ध हस्तिनीलक्षणम् $१ \circ ३$

निपुणा: सधना:, किन्तु समुद्विग्नमनस अत एव नीचमहिलासंगप्रभावाद्यन्न्नादिषु ब्यर्थ क्षीणबहुधनाः दिफलग्रयासे विदितवृत्तान्ता अतिदु:खिताभ्धिन्तिताश्ध भवन्ति। भातरस्तु पज्च भगिन्यश्ष समा जायन्ते। विवाहसमये पित्रोरेकस्य स्थितिरासाम्। प्रसववन्ध्यादोषेण मुहुर्मुहु: रुदन्ति। कन्याश्र समाः भवन्ति। शान्तितः पुत्रैकस्य स्थितिः। पतिपुरतः सुतीर्थ मरणज्चेति।

## हुर्थ चित्रिणी

चतुर्थ भेदवाली चित्रिणी लक्षण में तृतीय विश्रिणी से न्यून होती हैं। ये बहुत दुर्बल और खिन्न अङ्ञावाली होती हैं, इनके अनुकूल पति का रूप और गुण न होने से प्रायः उसके प्रतिकूल रहती हैं और अच्छे कुल में पैदा होती हैं। पापकर्म तथा द्रव्यादि के हिसाब-किताब में निपुण होती हैं। सधवा होती हुई भी उद्विग्न चित्तवाली होती हैं। इस कारण नीच स्त्रियों के संग से यन्त्र में ब्यर्थ बहुत धन नष्ट करती हैं, उद्योग विफल होने पर यथार्थ बात जानकर दु:खित हो चिन्ता करती हैं। इनको भाई पाँच तथा बहिन सम होती हैं। विवाह समय इनकी माता और पिता में एक रहते हैं। ये प्रसव वन्ध्या (सन्तान पैदा होते ही मर जाना) दोष के कारण बहुत विलाप करती हैं। कन्यायें सम होती हैं और शागत्ति के द्वारा एक पुत्र जीवित रह सक्ता है। अन्त में पति के सामने अच्छे तीर्थ में मृत्यु होती है।

बस्तिन्या: प्रथमो भेद:
छस्तिनी-प्रमदास्तु क्षण्भंगुरस्वभावा: प्रति-पुरुषानुरूपा: हासप्रिया: बहुभोगेच्छावत्योडतिभोक्र्र: स्थूलायतशरीरा: झ्लथांग्यस्त्रपासद्धर्मविरहिता पीनोरोजकपोलघ्राणकर्ण-

प्रीवाधरा: हस्बपिंगेक्षणा: स्थूलग्रलम्बौष्ठ्य-उन्मतभाल प्रदेशा: गजग्मना: गौरांग्यो महाचण्डच्य: क्रूरा: गम्भीरस्वना: बहुप्रजावत्यः कुटिलाङ्दुलीचरणा: दुःसाध्यसुता: रोगाभादेडपि रूग्णाः सन्तानविभीषिका: जगछ्य्यापिका: भर्चन्ति। अपि च-
स्थूला पिंगलकुन्तला च बहुभुकू क्रूरा त्रया वर्जिता गौरांगी कुटिलांगुलीकचरणा ह्रस्वा नमत्कन्धरा । विश्रत्यैभमदाम्बुगन्धिरतिजं तोयं भृशं मन्दगा दु;साध्या सुरतेडतिगद्गद्रवा स्थूलौष्किका हस्तिनी \|१\| समासादर्यन्ति च पितृगृहापेक्ष्या श्रेष्ठं पतिगृहं, मन्यन्ते च देवार्चनं मिभ्या, प्राप्नुर्ति च हुपयुणविशिएं पतिं, किन्तु बहुद्रव्याम्बरादिश्रदानेनापि पत्यौ न् तुष्यन्ति, भोगाबरोधप्रतिक्ष्रणं विवादतः कुट्रम्बं, कुर्चन्ति स कलहावसरे करमुखशब्दप्रयोगम्। तेनोद्विग्ना: 'नाश्नीम एतत्पाणिना नाश्शयिष्यामश्र्य तत्पार्श्वें इत्यवधार्य सुहुर्मुह्ह; दिगन्तम्ययाणमिच्छन्त्यासां पतय:। हा विधात: नेच्छाम ईदृशीं दु:खरूपां बह्वाशिनीं पिशाचिनीं भार्यामिंति प्रार्थयन्ते च। तास्तु सेच्छछाया सुखादिकमनुभवन्त्यन्क्रिरं तिष्ठन्ति। नेच्छन्ति प्रायो धर्ममिच्छन्ति खलु स्वादुभक्ष्यपदार्थात् सुतताडिन्यम्ब अर्वन्ति। प्रजायन्ते च केचिदंगहीना अनेकरूपधराः दशद्धादशषोडशसन्ततय: यह्सादिना चाडन्ते दीर्घायु: पुत्रयोगः। कन्यक्षस्तु बहतुः। प्रतिवशः (90-20-30-80) वर्षेषु

स्वशरीर-पुत्रभर्तृ- भ्रातृ-धनादिकष्टम्। अष्टचत्वारिंशदष्टपज्चाशद्वर्षभ्यन्तरे वा मृतिश्वेत् सधबा, अन्यथा विधवा: भवन्ति, परमायु: त्रिसप्तति:७३ वर्षणणि यावत्। बहुभ्रातृ-भगिनीनामेकभातृ-भगिनी-द्वयसुखम्। उक्तग्रतिदशवर्षेषु महन्भ्दयम्, शान्त्या सुखम्। विवाहोत्तरं ४-५-१२-१६ वर्षे पत्युर्भग्योदय:, प्राय: दुःखमयं जीवनमासामिति। मूर्तिपूजने कथाश्रवणे च महती व्यथा भवत्यतः हस्तिनीशः्च्विन्नीर्तपक्रूर कामिनीसमागमाद्राजतुल्यमपि सुखं न्पर्थं चित्रिणीसमागमाद् दुःखमयमपि जीवनं सुखमयं प्रतिभातीति हस्तिनी - चित्रिण्यो: जातवेदोडम्बुवन्महदन्तरम्, हस्तिनी-शर्द्विन्योर्मृदम्बुवत्पूर्वसन्धिरिति विजैरनुभूतम्। हस्तिनी का गयम शेद-
इस जाति की स्तियों का स्वभाव क्षणभंगुर होता है। ये प्रत्येक पुरुषों के अनुकूल होती हैं। भोग की इच्छा अधिक रहती है और हैंसमुख होती हैं, भोजन अधिक करती हैं। शरीर से मोटी और बड़ी होती हैं, अद्भ शियिल रहता है। इनमें लज्ञा और सद्धर्म का नाम तक नहीं रहता है। इनके स्तन, कपोल, नासिका, कान और लम्बे मस्तक ऊँचा, चाल हायी के समान और रंग गोरा होता है। इनको कोध अधिक, स्वभाव क्रूर, शब्द गम्भीर और लड़के अधिक होते हैं। इनके चरणों की अंगुलियाँ टेढ़ी होती हैं। ये रति में दुुसाध्य होती हैं। बिना रोग के रोगी बनी रहती हैं, सन्तान को त्रास दिया करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ संसार में व्याप्त हैं। श्लोकार्थ प्राय: गतार्थ हो गया है। ये भी पिता की अपेक्षा पति के श्रेष्ठ गृह में ᄃ

जाती हैं। देवपूजन को मिय्या ममझती हैं। पति सुन्दर और गुणवान् पाती हैं, परन्तु बहुत द्रव्य और वस्त्र देने पर भी पति से सन्तुष्ट नहीं होतीं। भोग-विलास के लिए सन्तानोत्पत्ति को विन्नरूप समझ्शती हें।, प्रतिक्षण झ्ञगड़े से कुटुम्ब को नाकोंदम कर देती हैं। कलह के समय हथेली बजा-बजा कर कट-कटाती हैं। इससे घबड़ाकर इनके पति इनके ह्वाथ से न खायेंगे, न साथ•शयन करेंगे, ऐसा विचार कर बारंबार विदेश जाने की इच्छा करते हैं और ईप्वर से प्रार्थना करते हैं कि हा विधाता ऐसी दु:खरूपा अधिक खानेवाली पिशाचिनी स्री ह्रम नहीं चाहते हैं और ये अपनी इच्छा से बहुत काल तक सुखादि का अनुमव किया करती हैं। इनको धर्म की इच्छा तक नहीं होती किन्तु सुस्वादु मक्ष्य पदार्थ की चाह अधिक होती है। सन्तान को मारा करती हैं। इनके खण्डित गर्भ तथा अंगहीन सब मिलकर १०-१२ तथा १६ लड़के होते हैं। यत्नादि के द्वारा अन्त में दीर्घायु पुन्र का योग होता है और कन्यायें बहुत होती हैं। १०-२०-₹० और ४० वर्षों में अपने एरीर अथवा पति, पुन्त्र, भाई और धनादि के द्वारा काष्ट होता है। $४ \varsigma$ या $५ \zeta$ वर्ष में मृत्यु हो तो सधवा, नहीं तो विषवा होकर मरती हैं। परमायु ज३ वर्ष तक होती हैं, कई भाई, बहिनों में एक भाई और दो बहिन का सुख होगा। उक्त प्रति दश वर्षों में अधिक भय का योग होता है। शान्ति इत्यादि यतों से सुख हो सकता है, बिवाह के बाद ४-६-१२ और १६ वर्षों में पति का भाग्योदय होता है। इनका जीवन प्रायः दु:बमय होता है। मूर्तिपूजन और कथा-श्रवण में इन्हें अतिकष्ट होता है, अतएव हस्तिनी, शंखिनी जाति की दुष्ट स्र्रियों के समागम से दु:समय जीवन भी स्युखमय विवित छोता है। अतः हस्तिनी और चित्रिणी में अन्नि और जल के समान बहुत अन्तर है तथा हस्तिनी, शंखिनी में मिट्टी और जल के समान मेल हो जाता है। ऐसा विद्वानों से अनुभूत है।

हस्तिन्मन: द्वितीया शैनः
द्वितीयह्टस्तिन्यस्तु प्रथमातो न्यूनलक्षणलक्षिता: भौतिकबाधाविशिष्टा: कर्कशा: दुःखरूपा: भवन्ति।

साधारण-पितृग्टात् सामान्यपतिगृहं समागच्छन्ति। पश्वादनेक-रोगपीडिता: स्वामिना निषिद्धा अपि भौतिकचरणयुक्ता: औतिकीं चार्तां मुह्र्मुह्ह: प्रलपन्ति, प्रेयन्ति च स्वामिनं मन्त्रयन्त्रादिकर्मणि। तदाज्ञयोक्तोपचारौषधादिना नैरुज्यमवाप्य कालं यापयन्ति। पुण्य-तीर्थव्रतार्चनादिधु नाधिका मतिरिति। भवन्ति नवाधिका: सन्ततय: कित्त्चक्षरज्ञानपर्यन्तं सुखदाः, शान्त्यादियत्नेन षट्सन्तानसुखं तेषु विदेशस्थायिनो द्वौ शेषं कन्ये बालको चैकत्र स्थायिनो भवतः। भवन्ति च स्वयं देवरविहीनास्तथा भगिन्य: घट् भ्रातरौं च द्वौ निधनसमये त्वेकस्य स्थितिः, वातद्रणमहारोगादियुक्तः:६० वर्षगते गृह एव पञ्वत्वमवाप्तुचन्ति अष्टचत्वारिंशद्वर्वा- $\delta \mathrm{c}$-दारभ्य $\mathcal{\circ} \circ$ पञ्चाशद्वर्वाभ्यन्तरे पत्यु: शरीरेऽपि मृत्युतुल्यं कष्टं बोध्यम्। शेषं हस्तिनीवदिति। हल्तिनी का दूपरा शेद-
इस जाति की स्त्री लक्षण में प्रथम हस्तिनी से न्यून होती हैं, किन्तु भूतबाधा से युक्त कर्कशा और दुःखरूपा होती हैं। ये साधारण पिता के घर से साधारण ही पति के घर में जाती हैं और कुछ दिन के बाद अनेक रोग से पीड़ित होती हैं। पत्ति के मना करने पर भी भूत-प्रेत के आचरण से युक्त हो उसी की बात बार-बार कहती हैं। पति को मन्त्र-यन्त्र करने के लिए कहा करती हैं।

जनकी आज़ा से मन्त्र-यन्त्र और औषधी के द्वारा आरोग्य लाभ कर दिन बिताती हैं। किन्तु पुण्यकर्म, तीर्थ, व्रत, देवार्चनादि में इनका मन नहीं लगता। इन्हें नव से अधिक सन्तान होते हैं। उनका सुख इन्हें तभी तक्र होता है जब तक कि वे अक्षर नहीं सीख लेते। शान्ति आदि उपाय से छ: सन्तान के सुख का योग होता है, उनमें भी दो लड़के परदेशा में, चार अर्थात् दो लड़कियोँ और दो लड़के एक साथ रहते हैं, परन्तु मरण समय में समीप एक ही सन्तान रहता है, ये देवर से रहित होती है, इन्हें बहिन छ: और भाई दो होते हैं, वातरोग तथा व्रण (फोड़ाफुन्सी) आदि भारी रोग से पीड़ित रहती हैं, ६० वर्ष की अवस्था में घर में ही मृत्यु पाती हैं। $8 \subset$ से $ц \circ$ वर्ष के भीतद पति के शरीर में भी मृत्यु समान कष्ट होता है। शेष प्रथम हस्तिनी के समान जानना। हनत्तिन्यन्हृतीयो मंद:-
द्वितीयातोऽपि न्यूनलक्षणा: किन्तु चज्वला: देवपूजनादिकर्मनिरता: छुन्दर्ष्य: स्थूलबुब्दयस्त्र पाविरहिता: स्वोदरपोषिण्यो भर्वन्ति तृतीया हस्तिन्यः।

स्थास्यतम्धासां स्वसारौ श्रातरौ च, परिणयनं तु १३98 वर्वाज्यन्तरे भवति। सन्ततयस्तु द्वादशे तेषु पञ्वसन्तानस्थयियोगस्तत्रापि क्षाभ्यां विशेषहुख्यम्। गृहे स्वश्रू-क्षसुरदेवरादिभिर्नित्यं क्लहं कुर्वन्त्यनुभव्वन्ति चात्मकायिकों पीडां पतिशरीरपीड्डाश्क, द्रव्यर्य चिन्तर्यन्ति क्रन्दति च। शान्त्या पूर्वोकसर्बारिष्टनिदृत्तिरनेकसुसादिलाभश्रं। शेषं प्रथमहस्तिनीवदिति।

हन्तिनी का नीसरत शेद
तीसरे भेदवाली हस्तिनी लक्षण में दूसरी हस्तिनी से कुछ्ठ न्यून किन्तु चक्वल होती हैं। से देवताओं की पूजा इत्यादि मी

करती हैं, सुन्दर, स्थूल बुद्धिदाली, लंख्रा से रहित और पेट पालने वाली होती हैं। इनकी दो बहिन और दो भाई होते हैं, इनका विवाह १₹-१.४ वर्ष की अवस्था में होता है। १२ सन्तानों में $\zeta$ सन्तान स्थायी रहते हैं, उनमें भी दो सन्तानों से विशेष सुख होता है। घर में सास, ससुर और देवरादिकों से नित्य लड़ा करती हैं। अपने तथा पति के शारीरिक पीड़ा में दुःखी रहती हैं। द्रव्य के लिए रोया और सोचा करती हैं परन्तु शान्ति करने से ऊपर कहे सब अरिष्ट निकल जाते हैं और अनेक सुख होते हैं। पोष प्रयम हस्तिनी के समान जानना।

हस्तिन्याभ्रुर्थी शेद:-
चतुर्थहस्तिन्यस्तु तृतीयातोऽपि न्यूनतरलक्षणलक्षिता: किलक्षणरूपाश्ष (रूपहीना:) भवन्ति। सत्कुलप्रसूता: धनपुत्रविशिष्टा: सधबा: किन्त्वेकावलीयोगयुक्ताश्र। एकावलीयोगश्रैकश्रात्रा भगिन्या वा युक्ता, क्वचिदेकाकी छेति पितुगृहि पतिगृहे तैकपुत्री पुत्रो वेति। शेषं प्रथमहस्तिनीबदिति। हस्त्निनी का चुपर्थ शेद-
चतुर्थ हस्तिनी लक्षण में तृतीय हस्तिनी से कम और सुन्दरता से रहित होती है। अच्छे कुल में वैदा होकर धन तथा पुत्र से युक्त, सधवा और एकावली योग से युक्त होती है। एकावली उसे कहते हैं जो पिता के घर में एक भाई या बहिन से युक्त हो अथवा कहीं-कहीं वह अकेले ही रहे, पति के घर में जाने पर जिसे एक पुत्र या कन्या होकर ही रह जाय। शेष प्रथम हस्तिनी कें संमान जानना। शस्दिन्या: नीमनचरित्राणि-
दीर्घान्भायतशरीरा: महाशब्दोत्पादितगमनाः पृथुं कृशं वा

कायं बहन्त्योऽद्भुतगमनाः पृथुनासिकाग्रा: कुटिलगम्भीरे-क्षणा: निम्नोन्नतशरीरा सततमत्रसन्नवदना: क्रोधसन्तप्तविग्रहा अहोरात्रमविचार्यैव प्रतिक्षणं भोगतत्परा: पत्यु-र्मानिन्य: स्वातन्न्यमभिलष्यमाणा: परानविचिन्त्य स्वोदरपोषणाभिप्राया: विगतानुकम्पा: दुष्टचेतस: घर्घरस्वरा: प्रीतिं सहिष्गुताञ्वातिक्रम्याऽखिलमादकपदार्थानुमोदिन्य: ईश्वरपूजनसदाराधन्म्तुतिपाठादीन् व्यर्थ मन्यमाना: शंखिनीप्रमदाः जगद्रयापिका: भवन्तिः दूश्यते चा 55 सां कर-क्मलेषु कम्बुचिह्नं छिन्न-भिन्नंख़ाश्व। भवन्ति च रत्तस्रजाम्बरप्रिया: प्रायोडलड़्र्वर्वन्त्येवंविधएव बनिता: पष्य-वीथिकाम्।

## यसोलं गन्थनन्तरे-

दीर्घस्कन्धशिर: कृशं पृथुमयो देहं बहन्ती तथा पादौ दीर्घकरौ कटि च बृहती स्वल्पस्तनी कोपिनी। गुह्यं क्षारविगन्धिनीस्मर जले नाल्पेन सान्द्रै: कचैरानिम्नं कुटिलेक्षणाद्धुतगति: सन्तप्तगात्रा भृशम् ॥१॥

जायन्ते च पित्तला: पिशुना अत्तिमुखरा शिशुताडिन्य:, वार्तान्ते रैद्ररूपा: धर्मान्ते सखिविग्रहकारिण्य:, सुरतान्ते भोजनस्पृह्ह; भवन्ति, दीर्घजीविन्य: प्राय: विधवाश्र। कुल्लद्वये चाइडसां पुरत: बहुप्राणिनाशो भवति, अनुभवन्ति चाडनेकक्लेशमभिलषन्ति, डु:खावसरे क्षणिकमृत्युं किन्तु न म्रियन्ते, भबन्ति चासां भातरो भगिन्य: दारिका: दारकाश्र्व बहवः किन्त्वेको भ्राता, भगिनी, दारिका, दारकाश्व तिष्ठति, म्रियन्ते चाडन्ये तत्पुरतः शेषमरिष्टदिकं प्रथमहस्तिनीवत् ।

एवं द्वितीय-तृतीय-चतुर्थशंखिनीनामपि जीवनचरित्राणि क्रमश: एकैकशा न्यूनतया द्वितीयतृतीयचतुर्थहस्तिनीवद्स्बुधैरनुभूयत इति।

शस्दिनी स्त्रियों के लक्षण फल
शंखिनी स्त्रियाँ सब स्त्रियों से लम्बी होती हैं, इनके चलते समय पृथ्वी में धम-धम शब्द होता है। शरीर से अति मोटी या दुर्बल होती है, इनकी चाल अजब होती है अर्थात् कुल्हे हिलाकर चलती हैं। इनके नासिकाग्र (नयुने) मोटे, आँखें टेढ़ी और गम्भीर ज़रीर नीची ऊँची (बेंडौल) होती हैं। ये मर्वदा अप्रसन्न रहती हैं और क्रोध से जला कग्ती हैं। दिन-रात का विचार न कर प्रतिक्षण भोग के लिए तैयार रहती हैं। पति से रूठी रहती हैं, स्वाधीनता की इच्छा उन्हे बहुत रहती है, दूसरों की अपेक्षा न कर अपना पेट पालन की उच्छा रखती हैं. दया से रहित होती हैं, इनका मन दुष्ट और स्वर घर्घर होता है। प्रीति-सहिष्णुता का इनमें नाम तक नहीं रहता, सम्पूर्ण मादक द्रव्यों को उचित समझती हैं। ईश्वर-पूजन, साधु-सेवन, स्तुति पाठादि को व्यर्थ समझती हैं। ऐसी स्त्रियाँ संसार में अधिक होती हैं। इनके हाथ में शंख का चिन्ह और रेखायें छिन्न-भिन्न होती है रक्त वस्त्र और लाल माला इन्हें अधिक रुचती है। ऐसी ही स्त्रियाँ प्राय: बाजार को सुशोभित करती हैं। ग्लोकार्थ गतार्थ हो गया है।

इनका स्वभाव पैत्तिक होता है, ये कर्णमूचकी करने (इधर का उधर लगाने) में तेज और वाँचाल (अधिक बोलने वाली) होती हैं। सखियों से कलह करने वाली होती हैं। इन्हें मैथुन के बाद भोजन की इच्छा होती है। ये बहुत दिनों नक जीवित रहती हैं और प्रायः विधवा होती हैं। इनके सामने ही दानों (पिता पति) कुल मे बहुत प्राणियों का विनाप्र हो जाता है, और बहुत द्वुख भोगती हैं उस समय मरने की


बारेंबार इच्छा करती हैं, परन्तु मरती नहीं। इन्हें भाई्-बहिन, लड़के और लड़कियाँ बहुत होती हैं। किन्तु एक भाई और लड़कालड़की के अतिरिक्त शेष इन्हीं के सामने मर जाते हैं। शेष अरिष्टादिक प्रथम हस्तिनी के समान जानें।

इसी म्रकार- द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ शंखिनी स्तियों के जीवन चरित, क्रमशः एक से न्यून द्वितीय, तृतीय, चतुर्य हस्तिनी के समान होते हैं, ऐसा पण्डितों से अनुभूत होना चाहिए।

## चित्रिणी विरला देवि ! पग्यिनी चाइतिदुर्लभा। <br> रोमवद्ध्तिती जेया विश्वरूपा च शंखिनी ॥ई॥

 शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे देवि ! चित्रिणी स्त्रियाँ संसार में विरल (कहीं-कहीं) होती हैं और पम्मिनी तो अत्यन्त दुर्लभ हैं। हस्तिनी शरीर में रोयें के समान बहुत और शंखिनी संसार भर में व्याप्त हैं। उद्धाहे मेलापकविचार:पद्मिनी-शशयोर्योगश्रित्रिणीमृगयो: शुभः । हस्तिन्या: वृषभस्यैवं शंखिनीवाजिनोरपि ॥?॥ चित्रिणीनां चतसूणां चतुर्भिस्तु मृं: सह। सड़्यम: क्रमशो बोध्य: सुधीभि: परमोत्तम: ॥२॥ दम्पत्योरुक्तशङ्कृत्स्नं क्रमभेदे च मध्यमम्। हस्तिनी-शः्खिन्नीनाज्च वृषभैस्तुरगै: सह ॥३।। पूर्ववत् सुखसन्तानधनधान्यादिकं भवेत्। जातिसम्बन्धभिन्नत्चे नेष्टो योगो बुधै: स्मृतः ॥8॥ अब विकाह के लिए मेलापक (गणना) का विचार कहते हैपडिनी और शशक, चित्रिणी और मृग, हस्तिनी और वृषभ, शंखिनी और अश्ब के योग (सम्बन्ध) को उत्तम कहते हैं।।? ।।

चार प्रकार की चित्रिणी स्त्रियों के साथ चार प्रकार के मृग पुरुषों के सम्बन्ध क्रमशः अर्थात् प्रथम जातिवाली चित्रिणी का प्रथम जाति के मृग पुरुष, ऐसे ही दूसरी का दूसरे, तीसरी का तीसरे, चौथी का चौथे भेद वाले मृग पुरुष के साथ योग को पण्डित लोग परमोत्तम कहते हैं।१२।इस प्रकार के सम्बन्ध से दम्पति (स्त्रीपुरुख) को उनके लक्षण में उक्त सम्पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं। क्रम के भेद से अर्थात् प्रथम को द्वितीयादि, द्वितीय को प्रथमादि भेद से मध्यम योग और तदनुसार फल भी होता है। ऐसे ही चारों प्रकार की हस्तिनी स्त्रियों को क्रमश: चार प्रकार के तृष्भ पुरुषों के तथा चार प्रकार की शह्विनी स्त्रियों का, चार प्रकार के तुरग पुरुषों के साथ क्रमशः योग को भी उत्तम कहते हैं।ः३। इसी के द्वारा मनुष्य पूर्वोक्त सुख, सन्तान, धन, धान्यादि से युक्त होते हैं और पूर्ववत् क्रमभेद से मध्यम होते हैं। और जाति सम्बन्ध भेद से अर्यात् पधिनी शभक के स्थान में पधिनी वृषभ तथा हस्सिनी शशक इत्यादि योग अति नीच और नेष्ट (अनुचित) हैं। ऐसा लाक्षणिक विद्वानों का मत है। सन्धिवश प्राय: वृष्भ का योग शह्विनी और तुरग का योग हस्तिनी से भी हो जाता है।

इति शभकाद्विव्वयुरुषाणां पथिन्यदिन्विव्यमहिलानाज्न जीबनचरित्रुुले समाप्तम्।

श्रेयस्करदुष्कराणां बालकानां सायुत्रिकचिह्लनिनि
अपतनाताड़नार्तिरहित-दिनभाषणकारणारोदनपरा: प्रबो-धाबोधबालकास्तथा डमरूलूखल-दण्डमन्दिरसमाः मन्दा-मलयुक्ता: पतनशीलश्लेष्मनासाभरणा: समक्षिका: बालका: दराटका भवन्ति।

पतनताडनार्तिदर्शनावक्राननहुसितिहसिता अगलितश्लेष्मनिर्मलाननस्वरकण्ठभूषणप्रविष्टबाहुलतिका मधुराधरगन्धर्वभाषणाश्र बालका: शारदापालका: वसुमन्तो भवन्ति।

पीतदुर्ग मनाधिकाड़ुलीयास्थिलक्षितसारमेयसमाना: संशोधका:। चञ्चलचपलाव्नक्रांगसरलहास्यनासिका:। ललालक्षरमालिकेन्दुकान्तिकान्ता: सम्पालका: पितृसन्धिसमशीलहितपटुतराः झटिति सोदरोत्पादकाः। दुःखपितृसमशीलमन्तराबालकाडसोदरोत्पादका: भवन्ति।

बालकों के श्रुभाशुभ होताक चिल्न-
जो बालक बिना गिरे, बिना मारे, किसी दुःख से दीन भाषण और अकारण रुदन करे, प्रबोध करने पर भी न माने ऐसा बालक और जिनंके रूप डमरू? ओबली ${ }^{2}$, द्डः, और मन्दिर ${ }^{*}$ के समान हों, जो मन्द और मल से युक्त हो, बारम्बार गिरा करें, जिनकी नाक से क्लेष्मा (कफ) गिरा करे और जो मक्षियों से घिरे हों। ऐसे बालक दरिद्री होते हैं। और जो गिरने, मारने और भय दिखलाने से हँसते हैं, जिनका मुख टेढ़ा नहीं होता, नाक नहीं बहती हो, मुख, स्वर और कण्ठ निर्मल हो, बाहु भूषणयुक्त हो या जिनकी बाहुलता कण्ठ में भूषण के समान सुशोभित हो, और मनोहर हो और जो गत्धर्व के समान बोलने वाले हों के बालक विद्वान् और धनी होते हैं। जो लड़के पीले, दु:ख से चलने वाले हों, जिनें अँगुलियाँ पाँच से अधिक हों, हठ्ड्रियाँ जिनकी दिख पड़ती हों, मुख कुत्तों के समान हों तो वे संभोधक अथवा माता-पित्त का नाश करने वाले होते हैं। जो बालक चज्वल हों और अड़ग जिनके

१-जिसक् पेट, चूतड निक्ता हो, २-जिसका पेट निक्ल कर पीठ घँस गयी हो। ३-जो दप्डे के सदृश लम्बा हो। ४- जो बेडील याने ऊँचा खाला हो।

सरल हँसी स्वाभाविक मृदु, नासिका सीधी और ललाट चन्द्रमा के समान चमकनेवाला और मनोहर हो तो वे पालक होते हैं। जो बालक पिता की गोद में उसी के समान स्वभाव और स्नेह में अति पटु हो तो वह शीघ्र भाई को पैदा करता है। और जो दुःखी, पितृशील से रहित हो तो वह भाई पैदा करानेवाला नहीं होता है।

## बालन्रियविचार:

पूर्वमायु: परीक्षेत पश्राल्लक्षणमादिशेत् ।
निरायुष: कुमारस्य लक्षणै: किं प्रयोजनम्? ॥? ॥
इति लाक्षणिकबचनप्रामाण्याद् बालानां जन्मतस्तुयमितब्दं यावन्माठृरेखाकृतं ततोऽष्टवर्ष यावत्पितृरेखाजनितं तदूर्ध्र्ं स्वरेखाकृतारिष्टादिकं विद्वद्भिर्विवेचनीयमिति तत्र्रकारं निरूपयति-पित्रोर्भाग्यरेखा सन्ततिरेखाश्व छिन्ना: लघुप्रमाणाश्येत् स्वल्पायुष: शिश्न इति। ययोदम्पत्यो: सन्ततिरेखा कुस्सितास्तयोरपत्यानां प्रथम-चतुर्था-डष्टम-नवम-द्वादशवर्षषु मतान्तरेण पज्चसप्तपज्वदशवर्षष बालारिष्टमिति। मृतवत्साया: यया रुजा यस्थामवस्थायां बालका म्रियन्ते प्रायस्तैनैव रोगेण तस्यामेवाइवस्थायामपरे बालका: पुन: म्रियन्ते। शान्त्या सर्वत्र शुभः। पूर्वोक्तं नर-नारीणां कृत्त्नं फलं बालारिष्टनिवृत्तौ जेयमिति। बालकों के आरिए का विचार
पहिले आयु की परीक्षा कर तब बालकों के लक्षणादि का विजार करना उचित है। आयुरहित बालक के लक्षण से प्रयोजन क्या है? अर्यात् कुछ भी नहीं। ऐमा लाक्षणिक विद्वानों ने कहा है, तदनुसार बालकों के जन्म से लेकर चार वर्ष तक माता की रेखा से और पाँच से

आठ वर्ष तक पिता की रेखा से अनन्तर स्वयं बालक की रेखा से अनिष्टादि का विचार करना चाह्टिये। उसका प्रकार दिखलांते हैं। माता-पिता की भाग्य रेखा और सन्तति रेखा यदि छिन्न-भिम्न और छोटी हो तो बालक अल्पायु होते हैं। जिनकी सन्तान रेखा कुत्सित अर्थात् अच्छी न हो तो बालक के जन्म से १-४-६-६-१२ वर्षों में किसी के मत से $\mathcal{L}-\mathfrak{Q}\}$ वर्षों में बालारिष्ट कहना चाहिये। मृतवत्सा स्त्री के पुत्र जिस रोग और जिस अवस्था में मरते हैं, प्राय: उनके दूसरे लड़के भी उसी रोग और उसी अवस्था में मरते हैं, प्राय: शान्त्यादि यत्न से सर्वत्र शुभ होता है, बालारिष्ट निकल जाने के बाद स्त्री-पुरुषों का पूर्वोक्त समस्त फल जानना चाहिये।

सधमाल्कक्षणम्य
यस्या: कमलमुकुलाकारौ लधु-सान्द्र-पुष्टा़ुलीकौ कोमलौ रुचिरोत्तमाल्परेखन्दितावह्गुष्ठाड़्रुलिसम्मुखौ कहौ तथा रत्रक्राम्बोरहौ रत्तरेखाविलासिनौ स्यातामपि च श्लक्ष्णव्यक्त-गम्मीरपूर्ण-स्भिन्पषर्तुल-रेखामनोहरौ मत्स्य-पद्म-काननजयन्ती, रस्तिकभिस्दिमशोभनभाग्यरेखायुक्तौ यवाज्चितावश्ष च करमध्यं समुल्नतं समभ्रयबमरन्ध्रकख्खाड़्लीयकं स्वयर्णवत् पाणिपादम्, केश्शाख्र्ता सूक्ष्मा: भ्रुवौ च संगते दन्ताभ्वाविरला अरोमके वृत्ते च जहें वृत्तास्निग्धनखानि विशिराइरोमकज्च पाणिपृषं स्यात्सा सधवावस्थायामेव निधनं प्रयातीति।

सधवा स्चियों के लकण
जब स्ती के दोनों छाय कमल-मुकुल के समान, अंगुलियाँ छोटी, घनी और पुष्ट हों, कोमल करकमल, सुन्दर उत्तम और योड़ी रेखाओं से युक्त हों, अँगूठे और अँगुलियाँ सीधी हों और जिसके रक्तवर्ण करकमल में रक्तर्ण ही रेखा शोभती हो तथा जिसके हाथ की

रेखायें सूक्ष्म परन्तु साफ और गम्भीर, पूरी-पूरी चिकनी और गोलाकार हो और जिसके हाथ में मत्स्य और पद्य रेखा, कानन, जयन्ती तथा स्वस्तिक रेखा हों, भाग्यरेखा सुन्दर तथा बिना कटी-कुटी हो, सब रेषा भी विराजती हों और जिसके हाय का मध्यभाग ऊँचा हो, यव रेखा पूर्ण हो, जिसके अँुलियों के मिलने पर छिद्र न दीख पड़े, हाधपैर अपने शरीर के वर्ण के समान हों, केश सूक्ष्म हों, भृकुटी (भौं) मिली न हों, दाँत घने हों, बिना रोम के गोल जंछे हों, नख चिकने वृत्ताकार हों, शिरा और रोम से रहित हाथ का पृष्ठ भाग हो तो वह स्न्री सधवा होती है, अथवा पति के समान ही वैकुण्ठ वास करती है।

विधवालक्षणम्
यस्याः बामपाणौ तिस्न: षड् बा रेखाः स्युस्तथा रक्तास्थूला त्रिकोणान्तरापररेखा विस्तृता सिताइसिता विरलाडशोभनाभूरिरेखा छिन्ना भाग्यरेखा दण्डरेखान्विता वा तथा पीतकेशमुखी पीनकर्णा प्रलम्बानना वृषस्कन्धा स्थूलकण्ठा दुर्बला पण्डिता प्रलम्बोदरपयोधरा शब्दोत्पन्नगमना कर्कशा चिपिटविवर्णनखा बहुपर्घाड्तुलियुक्ता सरोमनिम्नपाणिपृष्ठा पुकिशवपुरेखाभष्णिणी स्थूलावयवा छिन्नभिन्नरेखाड़्रिता प्रमदा विधवेति।

## विधना के लक्षण

जिस स्वी के बायें हाथ में तीन या छः रेखायें हों तथा लाल रेखायें हों, त्रिकोण रेखा के मध्य में कोई रेखा हो अथवा मोटी चौड़ी सफेद या काली विरल भही और बहुत सी रेखायें हों, भाग्यरेखा छित्नमिन्न हो या दण्ड रेखा से युक्त हो तो वह स्त्री तथा जिसके बाल पीले रेग के और कान मोटे और मुँह लम्बा हो जिसके कन्चे बैल के समान और कण्ठ मोटा हो, जो स्री दुर्बल पण्डिता हो, जिसका पेट और

सासुद्विकरहस्ये
स्तन लम्बा हो या पेट तक लंबे स्तन हों, जिसके चलने में पृथ्वी से शब्द हो, जो स्री कर्कशा तथा जिसके नख चिपटे और फांके हों, अँगुलियाँ बहुत पर्वों से युक्तहों, हाय का पृष्ठ भाग गहिरा और रोम रहित हो, पुरुष के समान जिसके बाल, शरीर रेखा और भाषण हों, जिसका अंग स्थूल हो और रेखायें छिन्न-भिन्न हों तो वह स्त्री विधवा होती है।

## தुध्रलीलक्षणम

यस्या भाले प्रकृष्टोडपि बिन्दुः मलिनः प्रतिभाति या ह्वानभावकटाक्षरता ज्रपाविरहिता सिन्दूराड्क्तितायया श्रीफलकपोला शुभर्णर्णाडतिद्रीर्घा सूर्यचिन्हाड्क्तिता मिलितविस्तृत ड्रूयुगाडवृत्ता ङ्न यव्दुताह्भी प्रसिद्धाह्न्हीना स्थूलावयवा विशालेक्षणा ह्नस्वकरचरणा तीव्रस्वरा विवादिनी नयरेस्ञिका सिब्दरेखाविहीना रक्तरेखान्विता ऋक्षोदरी भवति, अपि च यस्या: करे पुण्यरेखा छ्छिन्रा भवेत् समीपमत्त्या वा तथा छिना भाग्यरेका दण्डरेखायुता वा मातृपितृसमीपमत्स्या वा शंखचिह्नहयं, नासिका च तिलयुक्ता स्यात्, या च द्वादशवर्षाभ्यन्तरे यौवनचिन्हाड्क्ति 5 नुरूपसुन्दरी पूर्णचन्द्रानना बाला भचेत् सा सद्धर्मपरायणा शतोपनासनिरताडपि पराङुशायिनी पुंभ्षली भवति। या शोभनरेखान्विता चेदेकपतिकाडशोभनरेखायुका चेद्य बहुपतिकेति विज्बेरियेख्या। 'एकादशाडन्दे समाप्ते या त्रपाभूषणा भचेत्।
 लाक्षणिकोकरीत्या त्रपव भूषण्ण स्रीणामिति। या खलु मानिनी क्षणे रूष्टा तुष्टा चाल्पकोधिनी पराशनयत्न-
पूर्वार्द्ध पुँश्थलीलक्षणम् श१६

कारिणी प्रत्यूषजागरणशीला देवभक्तिरता सा देवरूपा, त्रफाविरहिता पुरुषान्तरसंलापिनी प्रमदाइवश्यं पांशुलेति।

स्त्रीणां षोडशवर्ष यावद्वाला संज्ञा ततस्त्रिंशद्वर्षावधि तरुणी पज्ञ्वाशद्वर्षपर्यन्तं ज्रौढाइत ऊर्ध्षं वृद्धेति दिक्।

## पुंधती स्ती का लक्षण

जिस सुन्दरी के मस्तक का चमकीला बिन्दु भी मलीन प्रतीत हो, जो हाव, भाव, कटाक्ष, करनेवाली लड्रा से रहित हो, जिसके अड्ग सिन्दूर के समान रक्त वर्ण हों, गाल बेल के समान निकले हों, वर्ण सुप्र हो, जो लम्बी हो, जिसे सूर्य (सेहुँआआ) भया हो, जिसकी भौहें मिली हों, और चौड़ी हों, अद्ग प्रायः सुले रहते हों और विलक्षण हों, नेत्रादि प्रसिद्ध अंग से जो रहित हो और जिसके अंग मोटे हों, आँखें बड़ी हों, हाय-पैर छोटे हों, स्वर तीखा हो और जो विवाद करती हो, जिसेके हाथ में मव रेखायें हों, जो सिद्ध (पुण्य प्य), स्वस्तिकादि उत्तम रेखा से रहित हो तथा जिसकी रेखायें रक्त वर्ण हों, पेट मालू के समान हो, जिसकी पुष्यरेखा छिन्न हो या मत्स्यरेखा से युक्त हो एवं भाग्यरेखा छिन्त या दप्ड्डरेखा से युक्त हो अथवा मातृपितृ रेखा के समीप मत्य रेखा 'हो अयवा जिसके हाथ में दो फंख रेखायें हों या नाक पर तिल हो अथवा १२ वर्ष के भीतर ही जिसे युवावस्था के (स्तनादि) सब चिह्न दिख्ब पड़े, जो सुन्दरी और पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखवाली बाला हो वह सद्धर्म और सैकड़ों उपवास करनेवाली हो तो भी परपुरुष के गोद में ायन करनेवाली पुंश्रली होती है। जिसकी रेखायें अष्ठी हों वह स्ती एक पति वालीं तथा जिसकी रेखायें बराब हों तो वह बहुत पतिवाली स्री होती है।

म्यारह वर्ष की अवस्था तक जिस स्नी ने लकाएलपी भूषण को धारण कर लिया वही गृहिणी कहलाती है। छसके प्रतिकूल डाकिनी

कहलती है, क्योंकि स्तियों का भूषण केवल लज्ञा ही है। जो स्ती शीप्न ही प्रसन्न और रुष्ट हो, क्रोध थोड़ा करे, दूसरे को खाने के लिए यन करे, प्रातःकाल ही जग जाया करे, देवता की भक्ति करे तो वह स्त्री देवता के समान होती है। लझ्ञाशून्य दूसरे पुरु से वार्तालाप करने वाली निश्चित पुंश्रली होती है।

१६ सोलह वर्ष तक की स्त्रियों बाला, १ज से ३० वर्ष तक की तरुणी, इसके बाद पू० वर्ष तक प्रौढ़ा, अनन्तर वृद्धा कहलाती हैं।
नर-नारीणनं पैसाचिकणिह्नानि

भयसम्श्रेषिता: मलिनमनीषा: जागृतस्वप्नेऽपि पश्यन्ति मानवान् न तु प्रत्यक्षभूता पिशचिका सन्धिकारिणी भवेतु, व्विताज़ूता: गजपदा: प्रभञजनमेलकाः। समलवासहत्कारफ्ट्यदौर्गश्ध्यभूतिका: भवेयुर्नरनार्य:। स्मरसुतघातिन्ग्रो 5 मार्जितकुन्तला अर्घर्षितदन्ता: निस्यैकवासात्रोगुक्ता: सन्ध्ययोश्शयनशीला: निर्दया: पुरुषास्तु महिला पार्श्वशायिनश्चेति विशेषः। दण्ड-खण्ड-रक्त-कुणार-दीर्शत्रिरेखायुकाश्ष ते स्त्रीपुरुषा: भूतयोगिन्याद्याविष्टास्तत्परबशा अनेकोत्पातकौतूहलनिरता: कष्टादियुका: मूढ़ा: भवन्ति। मोचनोपायस्तु योगिनीतन्न्रे द्रप्टब्य इति।

स्नी-पुरुकों के पेशाचिक च्निल को दशति है
जिन स्री-पुरुषों की बुद्धि भय से युक्त और मलिन हो, जों जायृत और स्वप्नावस्था में मनुष्यादिकों को देखते रहते हैं क्योंकि पिशाचादि प्रत्यक्ष आकर संयोग नही करते। अंग जिनके विकारयुक्त हो, चर्म हायी के समान, वेग वायु के समान, ह्रुदय तथा वस्त्र मलिन, फटे तथा दुर्गन्धि से युक्त हों, प्राय: रज-वीर्य स्वप्न में नष्ट होते हों,

जो लड़कों को मारती हों, जिनके सिर के बाल संस्काररहित इधरउघर बिखरे, दाँत मलिन हों, जो सर्वदा एक ही वस्त्र धारण करते हों, दोनों सन्ध्याओ में सोते हों, दयारहित हों, विशेषकर पुरुष स्वप्त में स्तियों के साथ सोनेवाले हों, जिनके हाथ में दण्ड, खड्ग, रक्त, कुठार, दीर्ष (बड़ी) और तीन रेखायें हों वे (स्ती-पुरुष) भूतादिकों से युक़ होते हैं। अर्षात् उनपर भूत और योगिनी आदि की छाया समझनी चाहिये और उन्हीं (भूतादिकों) के द्वारा अनेक प्रकार के उत्पात और कौतुकादिक में लवलीन रहते है, दुःखी और विमूढ़ होते हैं। भूतादिकों के छूटने का उपाय योगिनी तन्त्र से देखना चाहिये। देवचिस्निनि
ये सुरभिसड्डेतना: विगतच्छाया भूकम्पाड़रोमरहिता अचलितणिज्जूषा: भाल-मोदप्रद-पीनप्रभञ्जनाकार रेखायुत्ता: ने च्रकुन्तलाऽपतनावकोकना: नीलनीरदसान्द्रहृष्टहुद्यहिमकरकरानुकम्पर्वृचेतस: दानशीलाल्पकोपनपरोपकारिसद्धुणविशिष्टा प्रभावशालिनः करारविन्दोल्लासित-जकार-प्रधान-जाह्नव्यादि-पज्वरेखायुक्तस्ते देवा: पुऩन्तु मामिति।
देबी-चिष्हानि

या अबद्धकुन्तला: शकीडनपरा बत्लिका: टिभुजा 5 प्यष्टभुजासंरक्षिका सुरेखिका: सततप्रयत्योल्तुका: भूस््डल्डस्यापि
 क्षिका: हृदथानन्क्राश्थिन्यो देवच्छाययविशिष्द्श: देन्यो मंभ पुरन्न्विति। साम्बसदर्शिवार्पणमस्तु।


सामुद्रिकरह स्ये

## देब पुरुषों के लक्षण-

जिनके शरीर से सुगन्धि निकलती हो, जो छाया से रहित हों, जिनके चलने से पृथ्वी में झब्द तथा अढ़्गों में रोम न हों और कर्णादि से मल न निकले, मस्तक पर हर्ष देनेवाली चोटी के आकार की वायु के समान दौड़नेवाली रेखा (फिरा) हो, अवलोकन समय जिनकी पलकें न गिरती हों, दृष्टि नीली और धनी हो, हृदय सन्द्रमा के समान गीतल हो, जो दानशील, अल्प कोध करनेवाले, परोपकारी, सदृगुणी और प्रभावराली हों, जिनके करकमल में जाकर पज्दक अर्यात् जाह्नयी, यती, यव, जयन्ती और योग की पाँच रेखायें हों वे देवपुरुष कहलाते हैं सो मुझ्षे पवित्र करें। सद्केत में जकार और यकार में भेद नहीं माना है।

## देखी का लक्षण-

जिनके बाल बैंदे न हों, जो बालिकायें अनेक प्रकार की कीड़ाओ में तत्पर रहती हों, जो द्विभुजा होकर भी अध्भुजा के समान रक्षणादि सब कार्य सिद्ध कर लेती हों जिनके हाथ में अच्छीअच्छी रेखायें हों, जो निरन्तर यात्रा के लिये उत्कण्छित रका करें वे पृथ्वी पर रह कर भी तीनों लोकों की स्वामिनी होती है, अभ्युस्य तो मानो इनके हाय ही में रहता है। ये अपने मृत्यु समय को भी जानती हैं और ह्र्रदय को आनन्द देनेवाली होती है। इनमें देखियों की छाया और पूर्वोक्त देवताओं के समान परोपकारादि सद्गुण की विद्यमान रहते हैं, ऐसी देवियाँ मुक्षे पविक्र करें।

शीसम्बसकभिषार्षण्मत्रु

औरस्तु, णुभ्भ्भूयाव।

## भी मझत्लूलय नम:

## अथ सामुद्रिकरहस्ये

 उत्तराक्ष ग्राश्यदेबत्मा यत्पद्लग्नपांशुबलजाखण्डभभाव: कृती विभोत्पादनचातुरीषु दिनपो यन्जादिपु स्वोदयात्। शाम्बुश्रीहरिचण्डिकागणपर्तिर्ताष्गादिदेवा: भृशम् यन्मायावशगा: शिबं दिश्नु नो रामाभिधानो हरिः ॥१॥

ब्रक्षा जिसके चरण की धूलि के बल से जायमान पूर्ण भाव से संसार-रचना-विषय-चातुर्य से कृतकार्य हुए और सूर्य निज उदय से यज्ञादिकों में सफल हुए और चह्रार, श्रीविष्णु, दुर्गा, गणेश, ब्रह्मादि सब देवता बारम्बार जिसकी माया के अर्धीन हुए वही रामाभिधान विष्णु हमारे मनोरथ में मङ्लुप्रद हों।१।। रेखाध्याये परिभाषाप्रकरणम्-
तत्राइदी रेखानां, रूप-राशि-मष्थस्थनादिविचार:क्फलण, वलय, परिधानस्थानं मणिबन्धः। तन्रैब, सर्पाकारवेष्टनम्रयवती रेखा मणिबन्धाख्या। त्ुपर्शूध्जरखाइध: सिन्धुस्थानं तत्रैंव मत्याड़्तिता मत्सरेखा मणिखन्धादारभ्यतेराभिरविच्छिन्ना मध्यमा मूलगामिनी पूर्णोध्रेखा।

## सा वक्रा चेद्धलरेखा।

पताकारूपा केतुरेखा।
सैच घक्राडध: स्थूला मध्ये पीनतरा कुशाग्रा चेत् करवालरेखा। उपरि पित्रोरन्तरवर्तिनी चापाकाराडपर रेखासंयोगात् प्रत्यज्चरूपोध्ध्वा चाप-(धनु;)-रेखा।

सौण्ड-शृणि-(अङ्धेश)-पद्युरा सा गजाख्या।
सैवापरा वा दण्डरूपा दण्डाख्या।
छत्रिकारूपा छत्ररेखा।
सदण्डा तौलिक-तुलाभ्यां युक्ता तुलाख्या।
तुरगाभा तुरड़ुख्या।
तृषभाभा दृषरेखा।
त्रिकोणाड्डित्ता त्रिकोणरेखा।
इयमेव मन्दिरक्षितिसंशिकेत्युच्यते।
लघुचतुष्कोणा वासुरेखा।
बृहत्वतुष्कोणा पुष्करिणीरेखा।
आदर्शाभा आदर्शरखा।
आलवालसूपा दरिद्राख्या।
चतुष्कोणा मध्ये बह्टुतिर्य वृक्षाभा तरुरसालनाम्नोच्येते।
समा: बहुबिन्दय: औलरेखा।
त्रिपत्रत्मिका समृड्डाला कफ्टकीब्बिन्द्युयुक्ता ब्यु कर्छरेखा। अडुकार्तपा कृष्णिखा। सर्पाकाराडहिखा।

त्रिकोणभृणिमध्यगोर्ध्जसमदण्डाक्यां 'क' रेखा ब्रह्मरेखा दा। ऊर्ध्धाध:रेखयोर्मध्यगा चण्डरूपा स्तम्भरेखा।
घटाड़्रित्ता घटरेखा।
वीणाभा वीणारेखा।
ऊध्र्वरेखां परित्यज्योक्ता: समस्ता: पित्रोरन्तरवर्तिजलावरोधस्थानाभ्यन्तरगता एव वक्ष्यमाणशुभाइशुरफललग्रदा: भवन्ति। अङ़्ुष्ठाध: उन्चस्थानम्!
तदधो मणिबन्धादारभ्य तर्जन्यंगुष्ठयोर्मध्ये तिर्य्यग्गामिन्नी मातृरेखासंलग्ना पितृरेखा।

सैबाणवे आयुर्दययसामुद्रिके कमरेखा मतान्तरेण मातृरेखा चोच्यते।
पित्रायुष्ययोर्मध्ये पित्रा संलग्ना मातृरेखा शिरोरेखा वा तदुपरि कलिष्ठिकामूलादारभ्य तर्जनीमध्यमान्तरालगामिनी तीर्यगायुष्य-रेखा सैव हृदय-स्वान्त-मन-आदिपर्यायाइनेकरूपा भवति। यथा-

१ हीना २ यवाड्ड़ुता ३ द्विभागा $४$ निधानान्तरस्थानीयपव्मयुक्ता $\mathcal{\zeta}$ रूरूपा ६ शृंखला 5 नुकारिणी ६ जाह्रवीरूपा।

आयुष्य-मातृरेखयोर्मध्ये ऊध्राडध:कोणयुक्र त्रिकोणद्वयक्क्तिता डमरुरेखा।
आयुष्यरेखोपरि अश्सताडनामिका मूलगतोर्ध्वा पुण्या। सैँ सरस्तती कीर्ति-रधिनाम्ना च प्रसिद्धा। आयुष्यकनिष्ठिकाऽ ङ्रुल्योर्मध्ये कुशाप्र-तिर्यप्रूपाललनारेखा

## १ २६

तदुपर्यूध्धग्मगमिन्यो जार रेखाः।
तदन्तिके तिर्यगगगामिनो कुठाराभा कुठारेखा।
आयुष्धरखाधो मणिबन्धादुपरि करभगदेशे तिर्यगा भ्राृगिनीबोधिका सोदराख्या।

अङ्भुष्ठाध: उत्वस्थाने तिर्यगा सन्तानवोधिका।
उत्ञस्थानान्किके पिवृतीर्थ ऊर्ज्वगा: हिंसारेखा।
अंगुष्ठूूले मध्र्पर्वणि च घधाकमरा यवरेखा:।
अंगुष्ठूल एव तिप्रिखमस्ममधबिन्द्धः मकररेखा।
उचस्थानेडसिद्युव्राभिस्तिक्भिखाभि: काननरेखा।
अंगुलीनां पूर्वमूर्द्वगामिन्य: पर्वजालाह्वा।
अंगुल्लियमपर्वसु नागोपकेशानाकारा चक्ररेखा।
तदभावे तत्रैव सीपाभा सीपरेखा शर्जाकारा शंखरेखा त्रा सरस्वत्यायुर्भातृपिन्चूर्ध्वादि समस्ता: परस्परं मिलिताश्रोद्योग्रेखा 1 शेषाश्वन्द्रसूर्यतोमरबाणपक्षिनदीकूर्मोपवीताद्यनेकरेखा: यआयोग्यात्मएपाभहुक्त: प्राय: करतले भव-न्तीति तत्फलं लक्षणज्च कुरपरम्परया निजे ष्टदे बताफ्रसादाद्वा बुधैरवगन्तन्यमिति। यदि सरस्वत्याय्युष्यकातृभाग्यस्वास्थ्य• पितृरेखान्तिके $प र ा ~ त त ् स द ृ श ं ~ र े ख ा ~ स ् य ा त ् त द ा ~ त त ् त द प र ा ~ स र स ् व-~$ त्यायुर्मतृथाग्यस्वास्ष्यपितरं नामतो ज्ञातव्या।

मणिबन्धादारभ्य पितृरेखासंलग्नकनिष्ठिकामूलपर्यन्तं किश्नित्तिर्यग्गाभिन्यूध्ध्वरेखा स्वास्थ्या विदेशात्वा वेत्युच्यते। करतले दिग्रुन्म-
पूर्वाशा करशाखासु मणिबन्ध्र पथ्विमा करभप्रदेशे दक्षिणा-

उत्तरार्वे परिभाषाप्रकर
ड्্दुष्ठान्तिकं चोत्तरा दिग्भवतीति।

## गहस्थानजानम-

कनिष्ठाऽनामिकामध्यमातर्जनीमूलेषु क्रमाद्बुध-रवि-शनिगुर्स्थानान्यङ्गुष्ठमूलोस्घस्थाने भृगो: स्थानं भौमस्य स्थाने हे प्रथमं गुरुशुक्तयोरन्तराले द्वितीयं त्वायुर्मातृरेखायोर्मध्रे चन्द्रस्थाने च करभप्रदेशस्थमातृरेखामारभ्य मणिबन्धपर्यन्तं भवतीति।

## राशिस्थानजानम्-

तर्जनीप्रथमे पर्वणि मेष:, द्वितीये वृषस्तृतीये मियुनं एवं मध्यमाया: प्रथमे मकर:, द्वितीये कुम्भ:, वृतीये मीन:, अनामिकायं क्रमशः पर्वसु कर्कसिंहकन्या:, कनिषापर्वसु तुलानृध्धिकधनस्थानानीति राशिस्थानानि।
रेखावर्ण-मुखज्ञानम्-

उक्तानुक्रसमस्तरेखा: श्वेतरक्तपीतकृष्णा: स्थूला: कुशात्रा: छिन्नभिन्नाद्यनेकरूपा: मवन्ति तत्फलन्तु फलप्रसड्त्रे वक्ष्याम:। सामान्यं मणिसन्धमुबे विझेयमिति। रेखापरिमाणम्-
पत्चनवयदा 'पुण्या' श्रेष्ठतरा स्मृता।
त्रिदशषड्यवा 'पुण्या' मध्यमा स्यूलप्रज्ञाबोधिका। त्र्योदशाधिकयवप्रमाणा सर्बदा शोभनमनीषाबोधिका। चड्यवन्यूनतया पुण्यरेखया देवानां प्रियः।
द्वादशयवप्रमाणिकोर्धार्व श्रेष्ठा नृपालयोगबोधिका। ततो न्यूनतया खण्डाभिधेति।

द्वियवप्रमाणिक्या यवरेखया कुलभूषणता।
श२६ सामुद्विकरहस्ये

ऊर्ध्वरेखाबद्धरेखा55युष्कर्मरेखेव।
कुण्डलत्रिकोणगजमत्स्यम्निरादयः षड्यवाधिका: श्रेषा: भवन्ति।

प्रलम्बा सर्वा रेखा द्वादशयवा परिवेषा षड्यवा लघुतरा सर्वा त्रियवा श्रेष्ठतरा।

एकस्य यवस्य मानं दशवर्षप्रमाणं ज्ञातव्यम्। तत्राडयं भेद: प्रलम्बासु रेखासु प्रलम्बै: (दीर्चै:) यचै: तृत्ताकारासु ह्रस्वासु विस्तृतिः (परिणाहयुक्त़:) यनैर्मानं कर्तव्यम्। प्रकारान्तरेण भाग्यरेखामानजानम्-
भाग्यरेखा यदि मातृरेकासंलग्ना स्याच्छुभा तन्मानं ३३ वर्षपरिमाणं तदधोडनुमानाद्वर्षप्रमाणं ज्ञेयम्। यस्या एव मातृरेखामारभ्याडड्यूरेखान्तं यावत् $५ ५$ वर्षपरिमाणमाखुरेखामारभ्य मध्यमा मूलपर्यन्तं शतवर्षपरिमाणं भवतीति।

यत्र-यत्र सा छिन्ना तत्र २ वर्षेषु कष्टादिकं कुशलपुरुषेरनुमाय वक्तब्यम्।

आयुरेखावर्षपरिमाणं पूवर्धि 'एकवर्षेडपि त्रिंशत्स्यावि'त्यादिना पृष्ठ ?० श्लोक ३६ प्रागेव निगदितम्।

## मुचना-

रेखा नामादि परिभाषाओं की टीका इस कारण नहीं की गई कि हनके स्थान, नाम, ग्रह और राशि के स्थानादि २० चित्रों तथा उनकी सूचियों से स्पष्ट विदित हो जायेंगे।

रेखायरिमाण भाषा-
१४यव के बराबर यदि पुष्य रेखा हो तो श्रेष्ठ कही जाती है।

से १₹ यव तक मध्यम और स्यूल बुद्धि का द्योतक है। ६ यव से न्यून हो तो मन्द बुद्धि की बोधिका होती है।
? २यव के बराबर ऊर्ष्व रेखा हो तो उत्तम और राजयोग का बोध कराती है। इससे न्यून हो तो उसका नाम खंडरेखा है। ₹ यव के बराबर यदि यव रेखा हो तो कुलभूषणता को सिद्ध करती है।

हल रेखा, आयु रेखा और मातृ-पितृ रेखायें ऊर्ष्व रेखा के समान होती हैं। कुष्डल त्रिकोण गज मत्स्य मन्दिरादि रेखायें ६ यव से अधिक श्रेष्ठ होती हैं। लम्बी सब रेखायें ?२ यव वृत्ताकार ६ यव छोटी सब तीन यव के बराबर श्रेष्ठ हैं।

एक यव का मान $१ ०$ दर्ष के बराबर है। अतः लम्बी रेखाओं का मान (नाप) लम्बे (खड़े) यव से वृत्ताकार और छोटी रेखाओ का नाप चौड़े यव से करना चाहिए। पुण्यरेखा की गणना छोटी रेखाओं में है, अतः इसे भी चौड़े यव से नापना चाहिए।
भान्यरेखा का वर्णन-

भाग्येखा यदि मातृ रेखा से मिली हो तो उसका मान ३द वर्ष का होता है, उसके नीचे का हिसाब उसी क्रम से अनुमान द्वारा जानना। मातृ रेखा से आयु रेखा तक भाग्य रेखा का प्रमाण फ५ वर्ष और आयु पूर्वा से मध्यमा मूल तक 900 वर्ष का मान होता है।

जहॉं २ यह रेखा कटी हो उन वर्षों में अनुमान द्वारा कष्टादि जानना चाहिए।

आयु रेखा का वर्षप्रमाण पूर्वार्द्ध नख शिख वर्णन के अवसर पर प्रसह्भवक्ष कर-रेखा वर्णन पृष्ठ ?० झ्लोक ३० में हो चुका है। रेबन्मनि लिखार:-
तत्रादौ गणेशं शारदां दुर्गां कामाख्यां स्वेष्टदेबतां गुर्ज्ज चत्नारं छृदि संस्मृत्य सभेदशशकपक्रिन्यादितूर्यस्त्रीपुरुषाणां लक्षणं विशाय 'नेत्रदन्तेन नारी स्यातुरुषो भाषणेन च'

इत्यादि लाक्षणिकवचनान्नखशिक्षलक्षणं च ह्वदि निधाय रेखावलोकनं कर्त्त्यम् $\mid$ रेखादिभिर्लक्षणौश्र्ज तारतम्येन शुभाशुभफलं चिचार्य वक्तव्यमन्यथोपहासायोक्तं फलं भविष्यति।

## नियमान्तरण्ञ

महाप्यूषे, सन्ध्यायां, निशीथे, मध्याह्ते, हास्यसदसि, प्रयाणरथे, मार्गे, लिपिमन्तरा फलपुष्पमुद्राग्रहणं विना रेखादलोकन्न न कर्तन्यम्।

देवानां प्रियसन्तिधौ पण्डितशौण्डकन्तिके बराटकानां समीपे च रेखादलोफनं निषिद्धम्।

## सुदर्शना: स्निग्धशोभनदशना: युवानो विहसितवदनश्षे-

 चर्हि सुकेन रेखा द्रष्टब्येति।
## फलकसनक्रका:

शुद्वयुवपुरुषाणामायुः कर्म (माता-पिता) सुखद्धःखविद्याविचाहलाभाऽलाभयशो मित्राऽमित्रपापपुण्यस्थानजन्य-सुख-पुत्री-पुत्रश्रातृभगिनीसंखन्या तज्ञनितस्टुखादय: जीवनादिंक चृत्तिकीर्तयक्य वक्तथ्या इति।

अबलास्वर्मं विशेष:-
पत्तितुत्योस्तद्धाग्योदयवर्षाणां तज्ञन्यसुखद्यु:खानां प्रणयादीनां सपत्नीध्धशुरादीनाज्द वर्णन्नं कार्यमिति। तृद्धानामायुस्सद्वर्मदयादाक्ष्रिण्यादिदाम्पत्य-सुख्दुःख-पुत्री-पौत्रादि-निर्णयस्तत्परिणयनं सुखादिकख्च बक्तच्यम्। शुन्द्वर्तर (वर्णशझ़्ूर) पुरुषाणामायुर्वित्तं विद्यासुखदु:ख-

निधनादिकं यथासम्भवं वाच्यं किन्तुरु तद्भ्रातृभगिनीसर्द्व ्यादिकं न चक्रव्यमिति।

बालानां बालारिष्टं विद्यां पित्रो: सोदराणाज्च सुखादिकं विवेचनीयमिति।

अब रेखा-दर्शन के समय विचारणीय बातों को कहते हैं- प्रथम गफेक, सरस्वती, दुर्गा, कामाख्या, निजेष्टदेवता और गुरु का स्मरण ज बार हृदय में करके भेदसहित शाशक, भृग, पषिनी, चिश्रिणी आदि स्री-पुरुपों के लकण और नख-शिखोक्त नेत्र और दौँत से स्त्वियों के भाष्पण से पुरुषों के लक्षण को हुदय में रखकर रेखा देखना। सबको तारतम्बानुसार मिलाते हुए शुभाडघुभ फल कहना चाहिये। ऐसा नहीं कहने से कथित फल नहीं घटता-प्रत्युत उपहास होता है।

## अन्य नियम-

बड़े प्रातःकाल, सायंकाल, रान्रि में, मक्याह्न में, जहों हैंसी होती हो, यात्रा समय, रय पर, रास्ते में, बिना लिखे, फल-फूल और द्रष्य के बिना रेखा नहीं देखना चाहिये।

मूर्ब, धूर्त, पण्कित और दरिदों की सभा में रेखा देख्खा निषिब्ब है। सुन्दर सिग्ध द्वौतत और विहसित मुख्यवाले सुन्दर युबा पुरुों की रेखा देखना उचित है।
फल कहन्ने की रीति-

घुद्ध और युवा पुरुषों की आयु उनके माता-पिता सुख-दु: विस्या-विवाह-लाभ-हानि - यक-अयश-मित्र-शत्रु-पाप-पुण्य-स्थान-जनित-सुख-दु:ख तथा पुत्र, कन्या, भार्क-बहिन की संख्या तअनित सुख-दु:ब, उनका जीवन-मरण-जीविका-तीर्य और कीर्ति इत्यादि का बर्णन करना चाहिये।

स्थियों में पति-पुत्र इनका भाग्योदय वर्ष ₹नके द्वारा होने बाले

सुख-दुःख पति में प्रेमादिक सवत और ससुर-सास इत्यादि का वर्णन विशेष होना चाहिए।

बृद्ध पुरुषों के आयु श्रेष्ठ धर्म दया चातुर्यादि स्ती-पुरुषों को एक दूसरे के द्वारा सुख-दुःख उनके पुत्र-पौत्रादि का निर्णय और वियाहादि का वर्णन करना चाहिए।

वर्णशंकर पुरुषों के आयु-धन-विद्या-सुख-दुःख-मृत्यु का वर्णन यथा सम्भव करना परन्तु उनके भाई बहिन की संख्या नहीं कहनी चाहिये।

बालकों के बालारिष्ट विद्या माता-पिता और बहिन-भाई से सुख्य इत्यादि का विचार करना चाहिए।

रेखाल马़न्नविचार:-
समानरेखा खलु समाना लह्धिंता न भवति। यथा पुण्यया लष्धिते अप्यायुष्यमातृरेखे छिन्ने नोच्येते। तथैव भाग्यया मात्रायुष्यरेखे अपि छिन्ने नोच्यते, इत्यादि ज्ञातव्यमिति। अनिष्टफलक्यनक्रिया-
टुप्टरेखादिभि: क्षितिहीनतावराटकत्वापमानमहाचिन्ता 5 दारश्रमणमूर्खतानीरसताद्दन्द्दनिष्कासनादिभि: 'किं करोमि क्न गच्छामि पतितो दुःखसागरे। हा दैवेति महाचिन्ता सामुक्रिकवचो यथे' -ल्याद्यनिष्टफलं यथासम्भवमूहनीयमिति कूटखण्ड, कुठार-कूर्मान्यतमरेखया नितान्तदु:खी। तदितरशुरुरेखादिभिस्त्रिधनपौर्रादिसुखं यथासम्भवं गृहभूमिवाटिकासन्मानाद्यनेकशुभफलकथनीयमित्यलम्।

भाप广-अब एक रेबा से दूसरी रेखा के कटने का विचार करेंगे। समान रेखा से यदि समान रेखा काटी गयी हो तो वहु काटी नहीं
उत्तरार्द्ध शुभाशुभविचार:। १ ₹ ₹

कही जा सकती। जैसे पुण्यरेखा से छिन्न आयु और मातृरेखा कटी नहीं कही जा सकती। जैसे पुण्य रेखा से छिन्न आयु और मातृ रेका कटी नहीं कहलाती, उसी प्रकार पुफ्यरेखा से भी मातृ और भागयरेखा कटी नहीं कहला सकेती है।

अब अनिष्ट फल में क्या २ कहना चाहिये, उसका प्रकार दर्शाति हैं-
दुष्ट रेखा तथा लक्षणों से अनिष्ट फल कहना हो तो पृथ्वी की हीनता, दरिद्रता, अपमान, कोई भारी चिन्ता, स्ती-वियोग, व्यर्थ भ्रमण, मूर्ख्वता, निरसता, कलह, स्थान या पद से हटाया जाना इत्यादि अनेक कारणों से क्या कहै, कहॉँ जाऊँ इत्यादि लाक्षणिक के कथनानुसार यथासम्भव अनिष्ट फल विचार कर कहना चाहिये। कूट, खण्ड, कुठार और कूर्म इनमें से कोई भी एक रेखा हो तो मनुष्य को अत्यन्त दुःखी कहना।

इनसे इतर शुभ रेखाओ से स्निधन अर्थात् स्त्री-पुत्र-धन और पौत्रादि सुख तथा यथासम्भव गृह, भूमि, वाटिका सर्वम्र सम्मान इत्यादि अनेक शुभफल विचार कर कह्ना चाहिये।

इति वरिभाषम्रकरणम्।
समतननरनारीणां समान्यक्तथाश भफलद्
तन्रादौ पुंसां पाणौ आयुष्य, मत्य, न्निकोण, पुण्य, हल, शर्यं, चक्रोध्रपण * पक्षक्रतुकाननादिश्रशस्तरेखा: घद्यन्यरेखया छिन्भा: स्युरथवा तत्पार्श्ये खण्डा भम्ना रेखोदिता स्यात्तर्ल क्राणिकाशुचिद्वन्द्धवराटकत्वक्षीणवृत्तित्व-नहणरुण्गरूज्रित्तिमहिलासुतमानहीन ताहनिए्टफलप्रदाः भर्यन्ति।

स्तीणाँ त्वहुष्ठमूलान्मजिबन्धाद्वा प्रचलितसंभाग्यरेखान्तिक शुभरेखासक्निधी वा काचित्खण्डाभग्नारेखोदिता तर्हि * अक्षुप्ठ नखाध: पणरेखा भसति।

## पतिपुअसहज मातृपितृश्वश्रूश्वशु रादिकष्टमू हनीयमिति।

 शान्त्या द्वितृहायने शुभं विजेयमिति।यदि सदृशरेखान्तिके सजातिरेखोदिता स्यात्तहि द्विगुणाृहुखप्रदा भबेत्। यथा मत्स्यरेखोपरि मत्स्यरेखेत्यादि।

पूर्बार्दे कर रेखावर्णनावसरे सामान्यरेखाफलमुक्त विशेषफलन्तु पध्धेनानुपदं वक्ष्ये।

अब सम्पूर्ण स्त्री पुरुषों के सामान्य शुभाशुभ फल को कहते हैं।
पुस्षों के हाथ में यदि आयुष्य, मत्त्य; त्रिकोण, पुण्य, हल, श््वं, चक्र, ऊर्ध्न, पण, कमल, केतु और कानन आदि शुभ रेखायें दूसरी रेखा से कटी हों अथवा उनके पास ही खण्डित भगन कोई दूसरी रेखा उदित हो तो वह निर्दयता, अपवित्रता, झगड़ा, दरिद्रता, नष्ट जीविका, ऋण और रोगादि के द्वारा पीड़ा को देने वाली तथा धन पुत्र मान का नाश करने वाली होती है।

स्त्रियों के अङ्తुष्ठ मूल अथवा मणिबन्ध से उठी हुई सौभाग्य रेखा वा अन्य शुभ रेखा के समान किसी खण्डित भग्नरेखा का उदय हो तो उसे पति, पुत्र, भाई, माता, पिता, सास-ससुरादि को कष्टप्रद समझना चाहिये। शान्त्यादि शुभ कर्म से दो तीन वर्षों में शुभ होता है।

समान रेखा के समीप यदि समान ही रेखा का उदय हो तो वह सोलह गुणा सुखादि फल का बोधन करती है। जैसे मत्स्य रेखा के समीय मत्यय रेखा हो इसी प्रकार अन्य रेखाओं को समझना चाहिये।

पृर्वार्द्ध में कर-रेखा वर्णन करते समय प्रसङ्भवश कुछ सामान्य रेखाओं का वर्णन हो चुका है। विशेष रेखाओं का फल पद्य के द्वारा नीचे दर्शति हैं। सत्राजचिह्नानि पदे तदीये भवन्ति वा पाणितलेडमलानि । १।

जिस पुरुष के प्रसूति-समय में राजयोग प्रबल हो उसके हाथ और पैरों में अवश्य राजचिह्न की निर्मल रेखा होती है।? 11 अनामिकामूलगता प्रश्ता सा कीर्तिता पुण्यविधानरेखा। मध्याज़ुलेर्या मभिबन्धमाप्ता राज्याप्तये सा च किलोध्वरेखा। २। अमामिका के मूल से जो रेखा उठती है उसे पुण्य रेखा कहते हिं। इस रेबा के होने से मनुष्य धर्मकार्य में तंत्पर होता है और मष्य अहुली के मूल से मणिबन्ध तक पहुँची हुई रेखा को ऊर्ष्व रेखा कष्ते हैं; वह श्रेष्ठ और राज्य को देनेवाली है।। २। विराजभानं यवलाञ्छनं चेदड़ुष्ठमध्ये पुरुषस्य यस्य। भवेद्यशस्वी निजवंशभूषा भूषाविशेष: सहितो विनीत:।३।

जिसके अह्नुष्ठ मध्य में यव चिह्न हो वह मनुष्य यशस्वी और अपनें कुल का भूष्षण होता है। विशोष आभूषणों से युक्त तथा विनम्र होता है।३।
चेद्वारणो वातपबारणो वा वैसारिणः पुष्करिणी सृणिर्वा। वीणी च पाणौं चरणे नराणां ते स्युर्नराणामधिपा: वरेण्या: । $४ ।$ जिस मनुष्य के हाय या पैर में हाथी, छत्र, तस्य, पुष्करिणी, अड्नुका और वीणा इनमें से कोई भी चिह्न हो तो वह सब पुरुषों में श्रेष्ठ और सबका ख्वामी होता है।। ४।।
आदर्शमालाकरबालभैलहलाश्व यत्पाणितले मिलन्ति। स्यान्मण्डलीकोड वनिपालको वा कुले नृपालः कुलतारतम्यात्|乡।

जिस पुरुष के हाथ में दर्पण, माला, खड्ड, घौल या हल रेबा हो तो वह मण्डलाधीश्वर अथवा अपने कुल में कुलता-रतम्य से नरपति होता है।।य1।

## १ ₹ ह साभुद्रिकरहस्ये

चेद्यस्य पाणौ चरणे च चक्रं धनुर्ध्वजाऽब्जब्यजनासनानि। रथाश्वदोलाकमताविलासात्तस्यालये स्वर्गजवाजिशालाः।६। जिसके कर वा चरण में, चक्र, धनु, ध्वजा, कमल, व्यजन (पंखा), आसन, रथ, घोड़ा, दोला (पालना) रेखा हो तो उस मनुष्य के घर लक्ष्मी का विलास तथा घोड़े और हाथी को बाँधने की शाला होती है अर्थात् उसके दरवाजे पर हार्यी और घोड़े बैँधे रहें 1 ६।। स्तम्भस्तु कुस्भस्तु तरुस्तुरंगो गदा मृदङ्गोऽड्ड्मिकरप्रदेशे। दप्डोऽथवाइस्डण्डितराज्यलक्ष्क्या स्यान्मण्डितःपण्डितशौष्डको वा। ।

जिसके कर या चरण में स्तम्भ, कुम्भ, वृक्ष, तुरद्ज, गदा, मृदद्ज अथवा दण्ड रेखा हो तो वह मनुष्य अखण्ड राजलक्ष्मी का सुख्य भोगने वाला और पष्डितों में श्रेष्ठ होता है॥ज।। सुवृत्तमौलिस्तु विभालभालश्राकर्णनीलोत्पलपत्रनेत्रः। आजानुबाहुं पुरुषं तमाहुर्भूमण्डलाखण्डलमार्यवर्या:|६|

जिसका मस्तक गोलाकार और भाल उम्रत हो, नेत्र नील कमल दल कें समान विशाल, बाहु जानुपर्यन्त लम्बी हों, तो बह पुरुष अखण्ड भूमण्डल का राजा होता है, ऐसा आचार्यों ने कहा है (उत्तम समस्त रेखाओं के रूप स्थान चित्र सूची से चित्रों में देखिये)।ए।। नरस्य नासा रसला च यस्य वक्ष:स्थलं खापि शिलातलाभम्।


जिसकी नाक सीधी और वक्षस्थल (छाती) शीलातल के समान सुद्टढ़, नाभि गस्भर और चरणकमल कोमल और रक्त-वर्ण हो' बह पुरुष राजा होता है।।



उत्तरार्द्धे
जिसके हस्त में ऊपर प्र्लोक में कही हुई इन रेखाओं के चिन्ह हों तो वह मनुष्य सर्वदा प्रसन्न और उदार चित्त वाला गुरु और माधु से नप्र होता है और राज्यलक्ष्मी का उपभोग करता है।?०। करतले यदि यस्य तिलो भवेदविरलः किल तस्य धनागमः। पदतले च तिलेन समन्विते नृपतिवाहन-चिह्नसमन्दितः । ११।

जिसके करतल मध्य में त्तिल हो तो उस मनुष्य को सर्वदा धन की प्राप्ति हुआ करती है, और पैर के तलवे में तिल हो तो राज्यवाहन और राज्यचिन्ह से युक्त होता है।??॥
एतत्फलं राजकुलोद्भवानां स्यान्मानवानां मुनयो वदन्ति । प्रकल्पयेदन्यकुम्लोद्ध्रवानां नूनं तदूनं स्वकुलानुमानात् ११२।

ये सब फल राजकुल में उत्पन्न मनुष्यों के लिए होते हैं। दूसरे कुल में उत्पन्न मनुष्यों के लिए उनके कुलानुमान से न्यूनाधिक होता है ऐसा मुनियों ने कहा है।। १ २।। चिह्नानि यानि प्रतिपादितानि व्यक्तानि सम्पूर्णफलग्रदानि । वामेतरेडड्स्रौ च करे नराणां धंज्यानि वामे खलु कामिनीनाम् 1 १ ३

उक्त जितने चिन्ह हैं वे यदि ब्यक्त (साफ-साफ) हों तो दाहिने हाथ तथा पैर में पुरुषों को, बायें हाथ और पैर में स्त्तियों को उत्तम फल देने वाले हैं।। १३।।

$$
\begin{aligned}
& \text { ग्रन्थन्त्तरोत्तुण्यदिरेखाफलम् } \\
& \text { तत्रादौ पुण्य-(रवि-कीर्ति)-रेखाफलम्- }
\end{aligned}
$$

पुण्या रेखा विलसति निजस्थान एवातिशुब्दा धीजीव्यान्य: द्रविणयशसो सक्वथयी सर्वमान्यः। प्रत्युत्पन्ना मतिरिह भवेदर्थलाभोऽप्यकस्मात् १कृत्ने कार्ये भवति सफल: शन्तचित्तो मनुष्यः ॥११।

## १ぞ <br> सामुद्रिकरहस्ये

अन्य क्रन्थों में कहे हुए पुष्यादि रेखाओं का फल कहते हैं－ जिसके ह्हाथ में पुण्य रेखा अपने स्थान पर हो，शुद्ध रूप्प से शोभती हो तो वह पुरुष बुद्धिजींवी，यशस्वी，धनाढ्य，सत्कार्य में ख्यय करनेवाला，पुरुषों में माननीय और प्रत्युत्पक्न मति होता है और अकस्मात् उसे द्रव्य भी प्रास होता है，वह्र शान्त चित्त होता है और उसके सम्पूर्ण कार्यों में सफलता प्राप्त होत़ी है। चित्र २，रेखा ट।। ₹ ।। पिन्ना युक्ता यदि च तपना शिल्पसाहित्यदक्षः

टस्ये काब्ये स्पुरति च मति：पारदर्शी मनुष्या： चन्द्रस्थानं क्रजति च यदा पुण्बरेखा प्रसिद्धा

मर्त्यो मानी विपुलसुयशा अन्यकीयाश्रयेण ॥₹।। वही रेखा यदि अपने स्थान से चलकर पितृरेखा से मिल जाय तो मनुष्य बि़्ल्प－साहित्य में दक्ष（कुझ्मल）होता है तथा दृक्यकाय्य （नाटक）में उसकी बुद्धि स्कुरित होती है और उसका पारदर्शी होता है और वही प्रसिद्ध पुष्यरेखा यदि चन्द्रस्योन तक जाय तो मतुष्य दूसरे के द्वारा बड़ा यास्वी होता है। बिन्त ३，रेखा ह॥२।। सूर्यदिन्दुं प्रचलति यदा धमरेखा यदीया

इन्दुस्थानामिंमुखियते मातृरेखाइपि धुद्वा ।
चज्नसएलंकरितगतयो लक्षणज्ञा：नपन्ति
नूनां पध्धे विलसति मति：काष्यशास्त्रान्तगोडसी $\|$ 引 $\|$
जिसकी धर्म（पुण्य）रेखा सूर्य स्यान से चन्द्र स्यान तक जाय और मातृरेखा का भी घुदुरूप से चन्द्रस्थान तक जाय तो उस पुरुप की बुद्धि निश्रय पधरचना में लगती है，और वह़ काव्व पास्त का अन्त करने वाला होता है। सित्र $\&$ रेखा ४।। ₹।। भौमस्थानं क्रजति घ यदा भाएकराख्या दि रेखा

कायायासौ भवति मनुजः पौरु्वादर्थलाभ：।
उत्तराद्द पुष्यरेखाविचार：। श．६モ

## हधुक्ता चेद्भ्ववति तपना शतभने पाणिपझे

सम्यक्यस्या $5 भ ् य ु द ् य म य त े ~ श ो भ न ा च ् छ ि ल ् प श ा स ् त ् र ा त ् ~ । ~ ४ ~ । ~ । ~$ जब भास्कर（पुफ्य）रेखा मड़्ल के स्थान तक जाय तो मनुष्य बड़ा परिश्रमी और परिश्रम से द्रव्य प्राप्त करनेवाला होता है। चित्र ४， रेखा ६ै। जिसके सुन्दर करकमल में पुष्य रेखा हृद्य रेखा से युत्तहो वह मनुष्य फिल्प शास्त्र के द्वारा उन्नति करता है।।।।
उस्स्थानं द्रजत्ति तपनाइनाभिकाग्रापि पीना
शंस्ता माता विलसति यदा लेखको नाटकानाम्।
पाणौ यस्य प्रजलतपना मध्यमाडनामिके द्वे
दीर्घे तुल्ये भवति च तदा द्यूतनाणिज्यदक्षः $11 \& 11$ वही पुण्य रेखा भौमस्थान तक जाय，अनामिका का अग्र भाग मोटा हो और मातृरेखा प्रश्त हो तो मनुष्य नाटक－लेखक होता है। जिसके हाथ में पुण्येखा प्रबल हो，मध्यमा और अनामिका दोनों बराबर बड़ी हों तो पुरुष जूआ और व्यापार में दक्ष अर्थात्त् चतुर होता है। चित्र ६，रेखा द $\ddagger \|$
सुस्पष्टा चेन्द्वर्वति यदि सा ज्ञाड़्रिए：स्थानमुच्चै：
मानप्रज्ञानियतिषु जनो वर्द्धते शास्त्रमग्नः । कृत्तना⿸्⿵冂卄्यू्यः यवि च कुटिलाः पाणिमध्यो गभीर：

पुण्या रेखा भवति सबला नाखिलोद्योगहीन：॥६॥
जिसके हाथ में पुण्य रेखा स्पष्ट हो，बुध और गुरू का स्थान केँचा हो तो उस पुरुष के मान，दुद्धि और भाग्य की वृद्धि होती है और वह निरन्तर भास्त्रपरिशीलन में निमग्न रहता है। चित्र ७，रेखा 8। यदि सम्यूर्ण अंगुलियों टेढ़ी हों，हाथ का मध्य भाग गम्मीर हो तो पुफ्यरेखा बलवती होने पर भी मनुष्ष्य सम्पूर्ण उद्योग से रहित होता है। छै।

## उक्ता रेखा यदि बलवती खेटदेशाश्व निम्ना:

सम्पत्र्रासि: क्वचिदपि भवेदन्यव्यक्षं सकाशत्। वह्वी रेखा विलसति यदाइत्रैन पुष्यप्रदेशे

शिल्पाधिक्यादपि च विफला द्रव्यप्राप्तेर्हि चेष्टा ॥७।।
यही रेखा यदि बलवती हो, ग्रहों के स्थान भी नीच (गम्भीर हों तो किसी दूमरे व्यक्ति से सम्पत्ति प्राप्त होती है। चित्र 5 रेखा ४। इसी पुष्यरेखा के पास यदि बहुत-सी रेखायें हों ते शिल्पविद्या की अधिकता रहने पर भी द्रव्य प्राप्त करने की चेष्टा व्यर्थ होती है। चिम्र $9 \circ$, रेखा ज॥जा। पुण्या रेखोपरि भवेत्तारकाचिह्नमेकं

हस्ते यस्य प्रकृतिसुभगा बन्धुतश्रार्थलाभ:। सूर्यस्थाने स्पृशति च यदा घांतचिन्हं हि पुण्थाम्

धर्मे निष्ठा प्रभवति तदा सर्वदा जातकानाम् \|ए।।
जिसके हाय में पुण्य रेखा के ऊपर एक तारका ( $\star$ ) चिह्न हो तो वह पुरुष अपने बन्धु के द्वारा अर्थलाभ करे। चित्र $\epsilon$,रेखा $७$ । और रविस्थान में यदि घात $(\mathrm{x})$ चिह्न पुण्यरेखा का स्पर्श करे तो मनुष्ध निरन्तर धर्म में श्रद्धा रंखता है। चित्र $q ?$, रेखा ७\|६।। यत्र स्वान्तां स्पृशति तपना श्यामविन्दुश्र तन्र नेत्रान्धो वा भवति मनुज: नेत्ररोगेण दुःखी। सूर्या रेखा प्रभवति यदा द्वित्रिशाखाविशिष्टा

कृत्ये स्तोकेइनवरतकृत्तेसोऽन्तनिष्पत्तिशून्यः ॥६॥ पुप्य रेखा यदि स्वान्त (हुपय) रेखा का स्पर्श करे और उसी स्थान में काला चिह्न हो तो वह मनुष्य नेत्र रोग से दु:खी या

अन्धा हो। यदि यही रेखा दो-तीन शाखाओं से•युक्त हो तो मनुष्य अनेक कार्य करे किन्तु परिणाम में कार्य की सिद्धि न हो।६।। आदु-(स्वन्तह्दय) रेखाफलम्र
यदा सूक्ष्मगा निर्मला स्वान्तरेखा
तदा शान्तचित्त: कृपावान्नरः स्यात्। शनिस्थानतः प्रस्थिता स्वान्तरेखा

## तदाऽSनन्दभागिन्द्रियाणां नरः स्यात् \|?\|

जिसके हाथ में आयुरेखा सूक्ष्म और निर्मल हो तो मनुष्य शान्तचित्त और दयालु होता है। चित्र २, रेखा ज। और जब वही रेखा शनिस्थान से चली हो तो मनुष्य इन्द्रियों के आनन्द का अनुभव करनेवाला होता है।। ? ।

गुरुस्थानतः सौम्यगा स्याद्यदा सा
मनःकष्टदा सोऽपि सन्दिग्धचित्तः।
परस्त्रीरतः शृह्व लास्वान्तरेखा
सनिम्नं गुरुस्थानकं ह्ट्व्व्यथा स्यात् ॥२॥
जब वही स्वान्तरेबा गुरु स्थान से बुध स्थान तक जाय तो मन को कष्ट देने वाली होरी है, और उस पुरुष का चित्त सन्देहयुक्त होता है। चित्र ₹, रेखा द। और जब यही शृंखला के समान हो तो मनुष्य परस्त्रीगामी होता है। गुरुस्थान निम्न हो तो हृदय में ब्यथा होती है।।२।।

यदा पाण्डरा रक्तवर्णाडथवा सा मनोमानवीयं सुबज्ञानुकारी।
हुदाख्याहि म्लाना समा शृृ़ ला चेत्
तदा वज्वनावृत्तिलग्नो नरः स्यात् ।३।।

जब वही रेखा शुक्ल और रक्तवर्ण हो तो मनुष्य का हृद्य वज्र के समान होता है। हृदय रेखा मलिन और शृंख्नल्ता (सिकड़ी) के समान हो तो मनुष्य धूर्त (वंचक) होता है। चित्र $\wp$, रेखा $\wp \| ३ । ~$

हरिद्रेव गौरा हदाख्या यदा चेत्
भवेत् कालखण्डातपीडा तौदानीम् ।
यदा कमरिखायुता स्वान्तरेखा
भचेदर्थलुब्ध भ्र्व हिंस्रः प्रतारी । $\mathrm{C} \|$
हृदय रेखा हल्द्दी के समान गौर वर्ण हो तो मनुष्य यकृत्त् रोग से पीड़ित होता है। जब स्वान्त रेखा मातृरेखा से युक्त हो तो मनुष्य धन का लोभी, हिंसक और ठग होता है। चित्र ४, रेखा ६11४।

## शनिस्थान रूढा हि शाखाविहीना

बलान्मृत्युदाल्पायुषो दायिका सा।
गुरुस्थानजाता 5 तिसूक्ष्मा यदा हुत्
तदा निष्ठुर: प्राणघाती मनुष्यः $\|\&\|$ यही रेखा जनिस्थान से उठी हो और शासाओं से रहित हो तो मनुष्य अल्पायु होते हैं और उनकी हठात् मृत्यु होती है। चित्र ६, रेखा१? और यही जब गुरुस्थान से उठे और अत्यन्त सूक्ष्म हो तो मनुष्य निष्ठुर हद्यवाला और हिंसक होता है।६।। अनामाE्रू欠ीमूलजाताइतिसूक्ष्भा

सदा कष्टदाडऽयासतो द्रव्यलाभः ।
यदा ह्तन्सुदीर्घा विधुस्थानयुच्चै-
र्युता शुक्रद्धा पनित: संशय: स्यात् \|६्द
ह्ददय रेखा अनामिका अँगुली से उठे और अत्यन्त सूर्ष हो तो मनुष्यों को क世 हो और बड़े परिश्रम से द्रव्य मिले। चित्र

ज，रेखा छ। जब यही रेखा बड़ी हो और चन्द्रमा का स्थान ऊँचा छो और शुक्र रेखा भी हो तो，अपनी स्री से सन्देह होता है।। ६्।। यदा हुद्विहीन：कर：स्याग्नरस्य तदा छम्मयुकः निसर्गात्कुदृतः । यदा स्वान्तरेखा नहि स्याद्विशुष्धा

तदायुः कृशं ह्वद्वय्यतो5स्य मृत्युः \｜ज\｜
मनुष्यों का हाथ जब ह्रक्ष्य रेखा से रहित हो तो वह कपटी और स्वाभाविक दुर्वृत होता है। चित्र $\tau$ ，रेखा $\xi$ और जब स्वम्त रेखा घुद्ध न हो तो मनुष्य अल्पायु होते हैं और हृद्धय की पीड़ा से उनकी मृत्यु होती है। चिस्न 90 ，रेखा ६॥ज।। प्रभग्ना प्रतिस्थानतो हैस्यदा स्यात्


शनेर्गीब्पतेर्मध्यगा चेद् ह् हृाख्या
तदाडSजन्मसीभाग्यशाली मनुष्य：\｜₹ \｜
जब ह्रुदय रेखा प्रत्येक स्थान से कटी हो तो मनुष्य स्तीद⿳亠二口丿⿳亠二口欠女， चञ्नल और हृदयगामी होता है चित्न $q \circ$ ，रेखा है। जब यही गुरु और शनि स्थान के मध्य भाग तक गई हो तो मनुष्य जन्म भर सौभाग्यशाली होते हैं। चित्र $\epsilon$ ，रेखा है।५।।

हदाख्याद्वि शाखार्किजीचाश्रया चेत्
तदा धर्ममतो हि मोघोद्यमी स्यात्।
नहि स्वान्तशाखा गुरुस्थानगा चेत्
तदा द्रव्यहीनो बुधै：कीर्तितोना \｜モ\｜
ह्ददय रेखा दो शाखा युक्त होकर प्रनि और गुरु स्यान पर्यन्त जाय तो मनुष्य धर्मोन्मादी होता है और उसका श्रम विफल होता

है चित्र ११, रेखा ६। यदि हृदय रेखा गुरु स्थान पर्यन्त न जाय तो मनुष्य द्रव्य से रहित होता है। चित्र १२, रेखा ४॥€\| बुधस्थानगा नास्ति शाखा यदाऽस्या:

तदाइपत्यहीनो नरो निश्चयेन।
मन: सूर्यगा दुर्बला भाग्यरेखा
तदा दुर्भगो नापि चोद्योगहीन: 119011
जब इसकी शाखा बुध स्थान तक न गई हो तो मनुष्य निश्चय अफ्त्यरहित होता है। चित्र $१$ ₹, रेखा $४ ।$ मन रेखा, सूर्य स्थान तक जाय और भाग्य रेखा कृश हो तो मनुष्य दुर्भग और उद्योगरहित होता है। चित्र १8, रेखा 811 १०।

हृदयाख्योर्ध्वत: कर्तिताङ्का यदा चेत्।
जनस्यार्त्तिद: स्याद् क्रण: पृष्ठदेशे 11 ०० $\frac{?}{2} \|$ हृदयरेखा जब ऊपर से कटी हो तो मनुष्य के पृष्ठ भाग में कष्ट्रद नण (फोड़ा) होत्ता है, चित्र १५, रेखा ४ 11 १० $\frac{2}{२} ॥$ प्रकृत्योत्तमो बासद: श्वेतगर्त्तः


रविस्थानतोऽधो यथोक्तं फलं स्यात् ॥??।।
मनुष्य के हार्थ में यदि श्वेत वर्ण गर्त्त (गड़हा) हो तो उसे स्वाभाविक उत्तमोत्तम वस्त्र प्राप्त होता है, और रक्तबिन्दु हो तो शिल्प कार्य का विनाश करने वाला होतां है। सूर्य स्थान से नीचे यही बिन्दु हो तो ऊँची अभिलाषा के कारण मन को कष्ट होता है।श्श। बुधस्थाननिम्नो यदाप्येष विन्दु:

नरो दर्शनाभिज्ञनीतिप्रवक्ता ।

# चिकिस्सां समालम्ब्य दु:खानुगामी 

 बुधै: कीर्तित तत्फलं लक्ष्रणज्ञःः ॥१२।।जब यह बिन्दु बुध स्थान से नीचे हो तो मनुष्य दर्शन शास्त्र और नीति का ज्ञाता होता है तथा चिकिस्सा के द्वारा दुःख-भागी होता है।ाश२।

यदा स्वान्तरेखा शनिस्थानमेत्य

## शिरो रेखया संयुतः पाणियुग्मे।

तदा लक्षणज्ञा: विचार्येयमाहु:
बलात्तस्य पुंसश्व भाविप्रणाशः 11१₹।।
जब दोनों हाथ की हृदय रेखा शनिस्थान में जाकर शिरोरेखा से युक्त हो तो उस पुरुष का हठात् (सहसा) विनाश होता है। ऐसी लक्षणशास्त्र-वेत्ताओं की सम्मति है। चित्र १७, रेखा ₹॥ई३।

हृद: काऽपि शाखा शिरोरेखया चेत् सुलग्नाडन्यया रेखया खण्डिता स्यात् ।
तदा चिन्तनीया विवाहाख्य-कार्यात्
जन: कष्टभागी भवेत्सर्बदा स: 1 १४।।
हृदय रेखा की कोई शाखा शिरो रेखा से युक्त हो और उसे दूसरी रेखा खण्डित करे तो मनुष्य चिन्तनीय विवाहरूप कार्य से सदा कष्ट भोगता है।१४।।

यदा काऽपि रेखा ह्हदड़ुक्दि बक्रा शशिस्थानगा भ्राणघाती नर: स्यात्।
अनामान्तिके वेष्टिता चेद्धृद्दाख्या
तदा गुप्तविद्याधिकारी प्रगल्भः \|? $\|$
यदि कोई रेखा हुदय रेखा से टेढ़ी होकर चन्द्र स्थान तक जाय तो मनुष्य हिंसक होता है, चित्र १७ रेखा ह। अनामिका के समीप

यदि ह्रुद्य रेखा वेष्टित हो तो वह पुरुष गुप्त विद्या का ज्ञाता और ब्युत्पभ्न होता है।? ६ी।

मादरेखाप्रक्वरान्तरण शिरोरेखाफलम
शाखा युत्ता यदा न प्रभवति जननी भग्नरूपा च मर्त्य: सन्मेधावान् विचारे स भवति निपुणो मानसी शत्तिमातः। यद्येषोक्ताडन्यथा स्यात्फलमपि सकलं बैपरीत्यं प्रयाति स्वल्पा सा मन्दगा चेत्भविशति मनुजोडकालमृत्योर्भुखे सः |१|

यदि मातृरेखा भग्न और शाखाओं से युक्त न हो तो मनुष्य बुद्धिमान्, विचार में निपुण, प्रभावशाली और मानसिक बल से युक्त होता है। चित्र १४, रेखा ₹। यदि इसके विपरीत भग्न शाखा विशिष्ट और मलिन हो तो फल भी विपरीत होता है, चित्र ? रेख्रा है। यदि यही रेखा छोटी हो; शनिस्यान तक जाय तो मनुष्य की मृत्यु अकाल में ही होती है, चित्र १५, रेखा ₹॥१।
 विभ्थासेनापि शूल्यो भवति स हि यदा दीर्घसूक्ष्मा च धूर्तः। कृष्गा विस्तारयुक्तोदरगद-सहिताड डलस्य-तृष्णाडभियुक्त: सा स्यत्पित्रा न गुका स धरति पुएपोडनेकरूपं सदैब।२।

यदि मातृरेखा श्रंख्खलाकार हो तो मनुष्य प्रतिज्ञाशून्य और चक्षल़ प्रकृति का होता है, चित्र $\psi$, रेखा ₹। यदि यही लम्बी और सूक्ष्म हो तो विश्वासरहित और धूर्त होता है, चिन्र $9 \circ$, रेखा ४। यदि कृष्णवर्ण और चौड़ी हो तो मनुष्य लोभी, उदर रोग से युत्त और कालसी होता है। चित्र ११, रेखा ह। मातृरेखा यदि पितृ रेखा से मिली न हो तो मनुष्य अनेक रूप को धारण करता है। चिन्र १२, रेखा ₹।। २।

वक्ता स्वात्माभिमानी स्थिरमतिरहितः कार्यशक्त: पृथग्धी: मातृरेखे यदा द्वे करकमलगते स्यात्तु मर्त्यो दयातुः। जीवार्क-स्थानमुच्चैर्मृदुलतर-करादुक-दोषान्तकौ तौ फ्रूरो वा सद्विचारं वितरति सततं लक्षणज्ञा: वदन्ति।३। और वक्ता, आत्माभिमानी, क्षणिक बुंद्धिवाला (स्थिर विचार से रहित), कार्य में आसक्त, पृथक् विषारवाला होता है। चिन्र १२, रेखा ₹। जिसके कर-कमल में मातृ रेखा दो हो तो वह पुरुष कभी दयालु, कभी क्रूर तथा अच्छे विचार को देनेवाला होता है। चित्र ४, रेखा ₹। जिसके हाय अत्यन्त कोमल हों, गुरू और सूर्य का स्थान ऊँचा हो तो सम्ूूर्ण मत्तृ रेबोक्रदोप निवृत्त हो जाते हैं। ऐसा लक्षण घास्त्र जानने वाले कहते हैं।३।। पित्रा युक्ता गभीरा शुचितमजननी स्याध्दि शाखाविशिष्टा साहित्ये गूढनेत्ता त्वभिनवरचना सुष्दुलेखप्रवीण:। छिन्ना क्षुत्राभिरेखा प्रचलति जननी पाणि-मूल-प्रदेशे आत्मानं घातयेत्सो निवसति विमले पाणियुग्मे हि यस्य।४। मातृरेखा पितृरेखा से युक्त, शुन्द, गम्मीर, ख्छ औरशाखाओं से युक्त हो तो मनुष्य साहित्य शास्त्र के गूढ़ किषय का जाता, नवीन रचना (आविष्कार कल्पना), सुन्दर लेख में निपुण होता है। खित्रश ₹, रेबा ३। यदि यही छोटी-छोटी रेखाओं से कटी छो और मणिबन्ध तक चली जावे तो मनुष्य आत्मघात करता है, चित्र ६, रेखा ₹॥४॥ भूत्वा खण्डद्वायं चेत्रचलति शशिनं ह्रोकशाखा च तस्या; वाञ्छासिद्धिर्नरस्य प्रभवति सततं मोदते सौख्ययुक्त:। तच्छेषांशो हि भुग्न: प्रचलति जलधिं कल्पना-शत्कि-दक्ष: प्रष्छभां वेत्ति विद्यां प्रसरति कविताशक्तिरत्यन्तमस्य \|द\|

यही रेखा दो खण्ड हो और इसकी एक शाखा चन्द्र स्थान तक जावे तो मनुष्य के अभीष्ट की सिद्धि होती है और वह सुख युक्तहो， सका प्रसन्न रहता है। और इसी रेखा का शेष भाग टेढ़ा होकर सिन्धु स्थान तक जाय तो मनुष्य कल्पनाशक्ति में दक्ष，गुप्त विद्याओ का जानने वाला होता है और इसकी कवित्व शक्ति बढ़ती है， चित्र ज，रेखा ३॥ほ॥

आरोग्य－（स्वास्थ्य）－रेखाफलम्
आरोग्याङुक भवति यदि चेदल्परक्ता तदानीम्
रोगै：शून्यों मनुरनिवहो मोदते शर्म्मयुक्तः। रेखैषैव श्रयति जनकं चिन्तितो दु：खद्यु：खी
हित्वा पित्राह्欠ूमिह विशदो दीर्घजीवो बलाढ्यः ।1？।। आरोग्य रेखा यदि किक्वित् रक्तवर्ण हो तो मनुष्य प्रमोद प्रिय और नीरोग रहकर सुखादि का अनुभव करता है，चित्र १०， रेखा $५ ।$ यही यदि पित्रेरेा से मिलकर ख्छच हो तो मनुष्य दीर्षायु और बलवान् होता है। चित्र 8 ，रेखा ४।।？।I
एषा रेखा चलति च यदा मध्यभागेन नूनम्
मेधावी स्याधपलग्रकृतिर्याति वाचालताश्र्व। कृष्णोयं चेद्भवति मनुजो रोगवान् कृच्छूभोगी

स्वच्छास्निग्धा विविधवणिजां कृत्त्यकृत्पाटला चेत् ।12।। भ्यही आयु－रेबा आदि से चलकर यदि बीच ही से चले तो वह मनुष्य बुद्धिमान्，चपल और वाचाल होता है। चित्र छ，रेखा ४। यही यदि काली हो तो मनुष्य रोगी रहता है और अन्त में अधिक कष पाता है। यही यदि स्वच्छ，स्निगध और रक्त हो तो मनुष्य अनेक प्रकार के ब्यापार का करनेवाला होता है।२२।

एषा मध्रेऽरुणकृशनिभा रोगपीडागतोऽसौ
युक्ता लঞ्न्वा व्रजति मनुजो मान्य्यमग्नेश्र सद्यः। मान्रा लग्ना त्रिभुजबलिता कीर्तिमान् गुप्तविद्य: दैवीं प्रज्ञां द्रजति मतुज: सत्र्भभावाश्रितोऽसी 11 ३। यही रेबा यदि बीच में लाल और सूष्य हो तो मनुष्य ज्वरादि रोग के द्वारा कष्ट पाता है। यदि छोटी रेबाओं से युक्त हो तो मनुष्य की अग्नि मन्द रहती है, चित्र १२, रेखा 5 यही यदि मात्रेखा से मिलकर त्रिकोणाकार हो जाय तो मनुष्य यश़स्वी, गुप्त विद्याओं का जाननेवाला, दैवी बुद्धिवाला और प्रभावशाली होता है। (चिन्न 5 ,रेखा ३) ॥३॥
आत्रोत्येष श्रितरिपुजयो मानमानं समन्तात्
भाग्या लग्ना त्रिभुजवलिता भाविवक्तृत्वदक्षः। मर्त्यो लोकोत्तर-कृतिकरस्तत्त्वविद्याबतंस: स्थानञ्धान्ब्ं व्रजति हृदयाकुल्यमेहाख्यरोगी 11811 और शत्रुओं का पराजय कर सर्वत्न से मान प्राप्त करता है। यही यदि भाग्य रेखा और श्रिरोरेषा से मिलकर त्रिकोणाकार हो जाय तो मनुष्य स्वाभाविक भविष्यद् बत्ता और अलौकिक कार्यों का करंनेवाला तत्चन्तानी होता है। चित्र $£$, रेबा ६। यदि यही रेखा चन्द्रस्थान तक चली जाय तो कह पुरुष अव्यवस्पित नित्त का और प्रमेह रोगवाला होता है। (चित्र ? ? रेखा ५) ॥8। भाग्यरेखाफलम्न

## व्रजति यदि हि भाग्यो पैतृकस्थान्तोरपि

 सकलशुभगुणःः स्वैरम्नतीः संलभन्ते। मिलति जनकचिह्नैर्वर्षमाने हि यस्मिन् जनयति सुबंपुख्जं बान्ध्धानां च पित्रा ॥१॥
## १と。 सामुद्रिकरह्हस्ये

भाग्य रेखा पितृ रेखा से उठकर यदि शनिस्थान तक जाय तो मनुष्य अपने सम्ूूर्ण अच्छे गुणों से उम्नति प्राप्त करता है। यही रेबा जिस वर्ष-प्रमाण में पितृरेखा से मिले उस वर्ष में बान्धव और माता-पिता को सुख प्राप्त होता है।?।।

विलसति मणिबन्धान्मन्दगा यत्र भाग्या
भवति स हि मनुष्योडत्यन्त-सौभाग्यशाली।
प्रचलति यदि चन्द्राहैबरेखा प्रसिद्धा
उदयमघिलभन्ते मानवादन्यदीयात् \|२\|
जिसके हाथ में मरिबन्ध से लेकर शानिस्थान तक भाग्य रेखा शोभती हो तो बह मनुष्य अत्यन्त्त सौभाग्यश़ाली होता है। चित्र२, रेखा ४ या चित्र ५, रेखा १। यदि यही रेखा चन्द्रस्थान से होकर चले तो मतुष्य दूसरे के द्वारा उम्नति प्राप्त करते हैं, चित्र ३, रेखा २॥२।।

यदि करतलमध्यादुत्थिता सौभ्यगा स्यात्
उपदिशति मनुष्यः शास्त्रविज्ञांनवार्तम् ।
प्रंचलति यदि भाग्या भास्करस्थानमेवम्
उदयति स हि शिल्पे श्रव्यदृश्याख्यकाव्ये ॥ई।। यही रेखा हाय के मध्य भाग से उठकर सुध स्थान तक जाय तो पुरुप शास्त्र और विज्ञान विषयक उपदेश करनेवाला होता है, चित्र $१^{\circ}$, रेखा २। एवं यदि यही सूर्यस्थान तक कली जाय तो वह शिल्प (कारीगरी), काष्य और नाटक से उव्नति करता है। चित्र $\in$, रेखा २्।।३। सकलगुणयिशिष्टाइनामिका चोत्तमा स्यात् स हि समधिकदक्षः शिल्पशास्त्रे मनुष्यः।
यदि भवति चत्रष्काइनामिकाग्रा नराणाम् जनयति हि तदा सा पाटबं काब्यशास्त्रे ॥४॥

भाग्यरेखा के सहित अनामिका उत्तम (सरल, सूक्ष्म, सुन्दर) हो तो मनुष्य मिल्प शास्त्र में बड़ा चतुर होता है। चित्र $?$ ?, रेखा २। यदि अनामिका का अग्रभाग चौकोर हो तो मनुष्य काव्यक्रास्र में निपुण होता है। 1811

निपुणतरमति: स्यात्पीवराडनामिकाप्रा
सुललित-रचनायां दृश्यकाव्यस्य मर्ल्य:।
अमरगुरनिवासस्थानगा
दैवरेखा
अधिकतरतृडिच्छोर्वनते क्षान्तिभावः \|५।।
यदि अनामिका का अग्रभाग स्यूल हो तो मनुष्य नाटक की सुलसित रचना में निपुण होता है। भाग्यरेखा गुस्स्थान तक गई हो तो मतुष्य की अभिलाषा बड़ी ऊँची और उस्की क्षमता की चृदि होती है (चित्र नं०१२, रे० नं०२)॥६॥

प्रधलति करमध्रान्मध्यमायास्त्रिपर्व:
स भवति मनुजानां दुर्भगोद्योगहीनः।
सरलनियतिरेखा स्यद्धि शाखाविशिष्टा
अपि भवति दरित्र: सुष्ठुसम्पन्निधानः ॥६॥
भात्यरेखा करमष्य से उठकर मध्यमा के तीन पर्व तक जाय तो बह मनुष्यों में दुर्भग और उबोगहीन होता है। मि० १ ३, रे० २। भाम्यरेखा सीधी और शाखाओं से युक्त हो तो दरिद्द मनुष्य भी सम्पत्तिशाली होता है (चि०१४, रे०२) ॥६॥

कुंटिलप्रथमभागोडभुग्नशेषो नियत्या:
प्रथमधनविह्हीनो वित्तपूर्णश्व पश्चात्।
अरुण-सरल-भाग्याक्रामति स्वान्तरेखाम्
उपनन - कृषिविज: कार्वैज्ञानिकर्थ \|ज\|

## भाग्यरेखा का प्रथम भाग टेढ़ा और शेषांश अभुग्न अर्थात् सीधा

 हो तो मनुष्य पहिले दरिद्र और पीछे धनी हो। चि．१द，रे．२। यही रेखा सीधी और रक्तवर्ण होकर हृद्यदरेखा का अतिक्रमण करे तो मतुष्य उपवन और कृषिकार्य में निपुण，शिल्पी तथा वैज्ञानिक होता है।ज।भवति नियति रेखा भग्नवक्रायदब्दे
प्रभवति पुरुषाणां तत्र वर्षे विपत्तिः। भवति यदि च भग्ना केनलं यस्य हस्ते

अनुभवति तदाऽसौ लौकिकं कष्टजालम् \｜丂\｜ भाग्यरेखा जिस वर्ष में भग्न（कटी）और टेढ़ी हो，तो पुरुषों को उस वर्ष में विपत्ति प्राप्त होती है। चित्र $₹ \zeta$ ，रेखा़ा। केवल भाग्य－ रेखा जिसके हाथ में भग्न हो तो मनुष्य लौकिक कष्टों का अनुभव करता है，（सांसारिक कष्ट भोगता है）（चित्र १ ५，रेखा ६）। ५। यदि सरल－विशुद्धा शोभते भाग्यरेखा

निखिलमनुजकष्टं याति सद्यो विनाशम्। भर्बति लघुतराभिः सा हि भग्ना शनौ चेत्

धनजनितविपत्तिर्जीवनस्याइन्तभागे $\|€\|$
भाग्यरेखा यदि सरल और शुद्ध हो तो मनुष्य का सम्पूर्ण कष्ट शीघ्र नष्ट हो जाता है। चित्र 5 ，रेखा १े। यदि भाग्यरेखा शनिस्थान में छोटी－छोटी रेखाओं से विभक हो तो जीवन के अन्य भाग में धन के द्वारा विपत्ति होती है（चित्र १ज，रेखा १）। $€ \|$ निर्यतिजनकभेत्री भार्गवोत्त्या यदाल्पा

स हि भवति वियोगी मानिनीतोडथ दुःखी । नियति－मुख－पद्रेशे स्याधदा तारकांको

भवति जनकसत्त्वे कुर्मगोडसौ मनुष्यः \｜ई०\｜

यदि कोई छोटी रेखा शुक्त स्थान से उठकर भाग्यरेखा और पितृरेखा का भेदन करे तो मनुष्य स्त्री－वियोगी या स्ती के द्वारा कष्ट पाता है चित्र $₹ ७$ रेखा ₹। भाग्यरेखा के आदि में यदि तारका चिह्न हो तो माता－पिता के रहते भी मनुष्य दुःखी रहता है（चित्र q७，रेखा ४） 1 १०।।

भबति यदि कविस्था तारका तेन गुका
लघुवयसि तदा स्यात्तस्य पित्रोर्बिनाशः।
लसति यदि यवाड़कं दैवमात्रो：प्रदेशे
नियतिरपि च भुग्नोद्वाहहीनो मनुष्यः ॥११ ॥
उक्त रेखा के साथ यदि शुक्र स्थान में भी तारका चिह्न हो तो थोड़ी अवस्था में ही मनुष्य के माता－पिता का विनाश होता है चिन्र $₹ \vartheta$ ，रे०६। भाग्य और मातृरेखा में यदि यव का चिह्न हो，भाग्य रेखा भी टेढ़ी हो तो मनुष्य विवाहं से रहित अर्थत् उसका विवाह नहीं होता है। चिन्न $\& ;$ रे०दll श 11

धरति यदि च भाग्या मध्यदेशे यवाड्र्म्यू
प्रलुभति पुरुषेण स्नी स्त्रिया मानवोडपि ।
श्रयति यदि च शीर्षा निम्नभागे सवोड़्म्म्
लुभति असमवर्णननाङ्भॉना ना स्त्रिया च ॥१२॥
यदि भाग्य रेखा के मध्य भाग में यव का चिह्न हो तो पुरुष के द्वारा स्न्नी और स्ती के द्वारा पुरुष लुभाये जाते हैं। चित्र १ई，रेखा $\zeta ।$ यदि मातृ रेखा के निम्नभाग में यव चिह्न हो तो असवर्ण पुरूष से स्त्री और असवर्णा स्त्री से पुरुष मोहित होते हैं। चित्र १७，रेखा ६।१२ा।

भाग्यरेखाविरहित：पुरुषो दुर्भगो भवेत्।
उयोगरहिसथेति कथर्यन्ति मनीषिण：11？द॥ q

भाग्यरंखा मे रहित मनुष्य दुर्भागी और उद्योगरहित होता है~ प्सेता विद्वानों का कथन है। चित्न ? ऽ, रेखा ज। ई३।
पिह- मतान्तरेणाड द्नरेखाफलम

कररिखेति केचित्-
विलसत्त: पितरौ पृथगौ यदा
भवति संकरवर्णनरस्तदा।
कुटिलदीर्घलघू यदि वा छिते
जनकयो: सुखमेत्ति न मानच: \|१॥
मातृ-पितृरेखा परस्पर मिली न हों तो मनुष्य वर्णमड़ुर होता है। ये दोनों रेखाएँ टढ़ी-टढ़ी, लन्बी-छाटी वा छिन्न-भिन्न हो तो मतुष्य को माता-पिता का सुख नहीं होता है। चित्र २ रेखा ५।?॥ सुरुचिरे तु तयो: सुखमेधते

शरदि यत्र विलूनिमति च ते । भवति तन्न वियोगमथोभयो-

रनुभवन्तुर बुधा: स्थिरकीत्तये ।। ॥
यदि ये दोनों रेखाऐं सुन्दर स्पप्ट हों तो मनुष्य को माता पिता का सुख होता है और ये दोनों (मातृ-पितृ) रेखा जिस वर्ष प्रमाण में कट्टी हों उस वर्ष में माता-पिता का वियोग होता है। स्थिर कीर्ति चाहने वाले विद्वानों को इसका अनुभव करना चगहिये चित्र ३ रेखा ३।२। मतनन्तरेखननया 55 टुखो शुन्मयदीर्घा स्पष्टा नातिसूक्ष्शा न वक्रा

भग्ना चासावन्ययत नाफि छित्रा ।
दीर्घाधुष्मान् सच्वरिचस्वआच:
मर्त्यो नित्यं कोद्धते सैख्यद्युक्त: ॥इ॥

आयु रेखा लम्बी और स्पष्ट हो，अतिसूक्ष्म，अतिवक्र，भग्न और अन्य रेखा से कटी न हो तो मनुष्य दीर्घजीवी，सत्त्वभाव－वाला और सचरित्र होता है। सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। चित्न रेखा २।। ३। म्लाना छिक्ना भिन्नरूपा यदा सा

मन्द्रज्ञो दुर्बलोऽसौ विवादी। गर्बैयुर्को दुर्भगो दुःखजीवी

यस्भिन्माने जायते सा च भग्ना \｜४\｜
यदि यह रेखा मलिन और छिन्न－भिन्न हो तो मतुष्य मन्द बुद्धि， दुर्बल，विवानी，अहड्रारी，भाग्यहीन होकर दुःख से जीवन व्यतीत करता है और यह रेखा जिस वर्ष प्रमाण में भग्न हो－ 11 ४।। तस्मिन्त्षर्ष लौकिकोडस्यन्तकष्टम्

मृत्युर्यद्वा जायते तस्य पुंस：। छिन्ना क्याऽपि क्वाऽपि सूक्ष्माऽथ मर्त्य：

चित्तं तस्य सद्म्यवस्थाविशून्यः ॥६।।
उस वर्ष में उस पुरुष को सांसारिक महान् कष्ट या मृत्यु होंती है। यही रेखा कहीं छिन्न और कहीं सूक्ष्म हो तो मनुष्य अव्यवस्थित चित्त का（चज्वल）होता है। चित्र 8 रेखा २।६।।

लच्ची शग्ना खाल्पजीनी मनुष्य：
चेदेकस्मिन्पणिपद्मे हि भग्ना।
सक्तोडन्यस्मिन् रोमयुत्रो भवेत्स：
चुन्दा जीचं अद्रजेत् पाणिमूलात् 14 ॥ ।
यही रेखा यदि लघु और भग्न हो तो मनुष्य की आयु अस्प होती है। चित्र

में मिली हो तो मनुष्य रोगी होता है। यदि मणिबन्ध से जठकर बृह्हस्पति स्थान तक शुद्ध रूप से चली जाय－।। है।। उच्चेहानान् दीर्घजीवी मनुष्य：

लब्वाडनेकां सततिष्ठां हि धन्यः।
उत्थायाइस्मात् काऽपि रेखा हि शुद्धा
शुक्रस्थानं प्रद्रजेत् चेत्तदाडहौ \｜ज\｜
तो मनुष्य उध्रभिलाषी，दीर्घजीवी होता है और अनेक सत्र्रतिष्ठ प्राप्तकर धन्य（कृतकार्य）होता है। चित्र ज रेखा २। इसी स्थान से कोर्द रेखा उठकर शुद्ध रूप से शुक्र स्यान तक जाय तो वह－\｜ज।। भूत्वा कस्या योषितोडन्तेडधिकारी

सम्पद्युको मोदतेडसौ सुखेन ।
सत् स्थानात् कापि रेखोस्त्थिता चेत्
भूत्वाइधस्तात्
प्रद्रजेखेन्दुदेशम् \｜द\｜
किसी एत्री का उत्तराधिकारी होकर सम्पत्तिशाली होता है। चित्न 5 रेखा २। यहीं से कोई रेखा उठकर अधोमुखी हों चन्द्य स्थान तक जाय－॥ヶ\｜

श्रव्यादीनामायुष：शेषभागे
नाशो चेय：सर्वदा जातकस्य। सैवाडरोग्यां स्पर्शयन्ती सुनीचै：

वक्त्रं कृत्वा याति चन्त्रोपदेशम् \｜६\｜
तो मनुष्य के शेष जीवन में उसके द्रव्य，स्त्री－पुत्रादि का विनाश चानना। चित्र $9^{\circ}$ ，रेखा ३। पितृरेखा आरोम्य रेखा को स्पर्म करती हुई अधोमुखी होकर चन्द्रस्थान तक जाय－\｜El।

जाल्मो बंशद्वेषता वाइथ द्यूतै:
सरंँ द्रव्यं नाशयेदल्पकाले।
शुक्रस्थानात् काडपि रेखोत्तिथता चे-
दायुर्मातृस्वान्तरेखा:
तो वह मूर्ख जडतावश क्लह या द्यूत के द्वारा सम्पूर्ण सम्पत्ति अल्पकाल में ही भाश कर देता है। चित्र $€$, रेखा ३। शुक्र स्थान से कोई रेखा उठकर आयु (पितृ), मातृ और स्वान्त रेखाओ का भेदन करे- 11 १०ll

तस्मिन्बर्ष विप्रयोगो जनानाम्
पित्रोर्झेयो निश्धितं * मृत्युजन्यः।

अन्रत्योत्त्था चाडपरा कापि रेखा
सूर्यस्थानं याति सम्यग्विशुद्दा $11 १ १ ॥$
तो आत्मीयजन तथा माता-पिता का उसी वर्षप्रमाण में वियोग हो। चित्र $१ १$, रेखा $१ १ 1$ इसी स्थान से कोई रेखा उठ कर शुद्ध रूप से रवि स्थान तक जाय तो-। ? ? ।

मर्त्य: सम्यङ् मानपूर्वा प्रतिष्ठम्
लब्ध्या लोके पूज्यते सत्वभाबैः।
इत्वं ज्ञात्त्वा विज़वर्ये: समस्तै-

मनुष्य सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सख़ों से पूजित होता है। इस प्रकार सम्पूर्ण विज्ञ लाक्षणिकों को उचित है कि अच्छी तरह रेख्या का विचार कर फल कहें। चित्न ? 5 रेखा $\mathrm{El} \ell$ रे।

* क्रापि कष्टम्— इत्यपि पाठ:। ऐसा भी पाठ है, अर्य है- वियोग और अत्यत्त कष्ट प्राप्त होता है। शास्त्र और तृतीय भक्ति की जानना। ऐसा विद्यान् लोग कहते हैं। चित्र २ रेखा १－२－३！। २ ॥

एतासु स्वच्छा सरला गभीरा
स्निग्धा न छिन्ना सबला भवेत् सा। तिस्त्रोऽधिका दैन्यविसूचिकोक्ता

सर्वा विशुद्धोक्त गुणैर्विशिष्टा ।२॥।
इनमें जो रेखा स्वच्छ，सरल，गम्भीर，स्निग्ध हो और छित्र न हो तो वह रेखा बलवती होती है और उसका फल भी उत्तम होता है। चित्र २ रेखा १－२－३। यदि तीन से अधिक रेखायें हों तो वे दर्दिता और दुर्भाग्यसूचक होती हैं। चित्र १६ रेखा १। तीनों रेंखायें शुद्ध पूर्वोक्त गुण से युक्त हों लो－॥श॥ विद्वान् धनी चारुशरीरधारी सौभाग्यशाली च सुखेन जीव्यात्। स्यु：शृर्बलाङ्षा यदि ता：श्रमी स：

द्रव्यापिरत्यन्तपरिश्रमात्
स्यात् ॥३॥
मनुष्य विद्वग्，धनी，सुन्दर शरीरवाला，सौभाग्यशाली छोकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करे। तीनों यदि शृख्ध्र्लाकार हों तो मतुष्प परिश्रमी हो और उद्योग कर द्रव्य प्राप्त करे，चित्र $\mathrm{\varepsilon}$ रेखा ६॥झ।

छिन्ना यदि स्यु：स नरो दरिद्र：

## भवेन्निरद्योग्यलसाधिपश्र।

तस्यां त्रिकोणोऽस्ति जन：परस्य

## धनं प्रतिषां लभते च मानम्－18।।

तीनों रेखायें यदि छिन्न－भिन्र हों तो मनुथ्य दरिद्रि，आलसी और निल्दोगी होता है। चित्र 90 रेखा $q 1$ मणिबन्ध रेखा में यदि त्रिकोण हो तो मनुष्य दूसरे का धन，प्रतिष्ठा और सम्मान प्रात्त करे，चित्र $\in$ रेबा $₹\|४\|$

सृृष्टोध्वर्वेखा यदि छिन्न－भिन्ना
पापी दुरात्मा－डनृतभाष्यहंयुः।
उत्त्थाय तस्माद् ब्रजतीन्दुदेशम्
द्वीपान्तरं याति पथा जलेन ॥पू॥
ये हिन्न－भिन्न हों और ऊर्धरिखा इनसे मिली हो तो मनुष्य पापी，दुष्टात्मा，मिय्याभाषी और अहंकरी हो। बित्र ？？रेखा？ यहीं से कोई रेखा उठकर चन्द्रस्थान तक जाय तो मनुष्य जल मार्ग से दीपान्तर यात्रा करे।（चित्र १२，रेखा १）॥ई। उत्थाय तस्मात्मभिबन्धदेशा－

त्रेखाइपरा कृन्तति पितृरेखाम्। द्वीपान्तरप्रस्थिति－कृत्यकाले

यमालयं गच्छति शर्मयुक्त：11६11
मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर यदि पितृ रेखा का भेदन करे तो मनुष्य द्वीपान्तर यात्रा में मुत्यु को प्राप्त होंवे। चित्र१३，रे．१ १६। उत्थाय तस्माद्धि बुधं प्रयाति

> विना प्रयासेन धरं लभेत।

## सूर्यालयं गच्छति चेत्परेण

धनानि लब्ध्रा निससेत् सुखेन \|ज\|
मणिबन्ध से कोई रेखां उठकर यदि बुध्रस्थान तक जाय तो मनुष्य अनायास धन पावे। चित्र १४, रेखा \& और रवि स्थान तक जाय तो दूसरे की सहायता से धन प्राप्त कर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। चित्र १द रेखा १।ज।

इति झन्थान्तरोक्तुण्यादिखाफर्नं समाप्तम्।
अथाडन्यान्यरेखाफलम्। तत्रादौ शाखस्यखल्वेफशंश्नोंड्ययनस्वभाव:


तुर्यज्च शब्वं नृपति - प्रभुत्वम् ॥९॥
जिस मनुष्य के हाथ में एक शब्ठ्व हो तो वह मनुष्य अध्ययन-शील होता है, दो शर्वृ होने से दरिद्ध, तीन होने से स्त्री के लिये खुन करता है और चार हों तो राजा या राजतुल्य प्रभुता वाला होता ।।श। शर्वेशरा यत्र भरन्ति पाणौ समुद्रतुल्यां प्रभुतां चदन्ति। षट्शइन्बन्योगेडतिविचक्षण: स्याच्छैले दरिद्रोडष्टसु सौख्यजीची।२।

यदि पाँच शःं हाथ में हो तो समुद्र पर्यन्त प्रभुता का सूचक है। छः शान्व्व हों तो बड़ा भारी विद्वान् हो, सात हों तो दरिद, आठ हों तो सुखपूर्वक जीवन ब्यतीत करे।। २।

शह्नुन्यान्तशंखे खलु भामिनीवत्
दिक्शंखयोगे नृपतिर्यथा बा।
योगाभ्रितो काननमध्यचारी
पुमान् भवेच्छास्त्रबिदो वदन्ति \|३\|

यदि नौ श़्व हों तो मनुष्य स्र्री-प्रकृति का होता है और दस शर्ब्वं हों तो मनुष्य राजा या कानन-मध्यचारी योगी होता हैं। ऐसा


चक्ररेखफलन्न
प्टुत्वमेकचक्रे स्याद् द्विचक्रे चाडतिसुन्दरः।
त्रिचक्रे तु विलासी स्याहरित्रो बेदचक्रभृत् ॥४ \|
हाथ में एक चक्र हो तो चातुर्य युक्त, दो हों तो अति-सुन्दर, तीन चक्र हों तों विलासी और चार चक्र को धारण करने वाला मनुष्य दरिद्र होता है।। ४।।

पञ्चचक्रे महाजानी षट्सु पण्डितशौण्डकः।
सप्तसु शैलभोगी स्यादष्टु स्याद् चर्णटक: \|५\|
पाँच चक्रवाला मनुष्य ज्ञानी, छः चक्रवाला पण्डितों में दक्ष(चतुर), सात चक्रवाला पर्वत पर विहार करनेवाला और आठ चक्रवाला

नवसु नृपतिमैव दशस राजसेवक:।

अम्यत्र
सर्वासु चक्रै: परिपूरितासु, महाबलप्रापिवरेण्यलक्षणम् |द्। नौ चक्र से राजा और दश चक्र होने से मनुष्य राजसेवक होता है। प्रकारान्तर से सब (दसों) अंगुलियों में चक्र हो तो मनुष्य महाबली प्रभु होता है। चिन्न३, रेखा६ में चक्र देखे।। है।। लीपफलम
सीपैकं करशाखायां यस्य राजा भवेक्षर:
सीपद्वयं यदैकन्न दरिड्रोडसौ न संशयः \|v \|
जिसके हाय या ह्ठाय की अँगुली में एक सीप हो तो वह मनुष्य

राजा होता है। यदि एक ही स्थान में दो सीप हों तो वह निश्रय दरिद्र होता है।ज।

अंगुल्योऽस्तु पृथक् सीपद्वयं चेत्स धनी नरः ।
एव सीपत्रये योगी तुर्यसीपे दरिद्रता \|६\| जिसकी अँगुलियों में अलग-अलग दो सीपें हो तो वह मनुष्य धनी एवं तीन सीप होने से योगी और चार होने से दरिद्र होता है।चा। पञ्चसीपान्वितो यस्त्रु धनी, योगी रसेपु च्व सप्तसीपे दरिद्र: स्यादष्टसीपे धनी नर:। नवसु योगयुक्ता तु दरिद्रा दशसु ध्रुवम् \|モ\| पाँच सीपवाला मनुष्य धनी, छहवाला योगी, सात सीप वाला दरिद्र, आठ वाला धनी, नौ वाला योगी और दश सीपवाला मनुष्य निश्रय दरिद्र होता है। चित्र ३, रेखा $₹ \circ$ में सीप।। है।

ऊपर लिखे शह्तं, चक्र, सीप रेखाओं की सङ्ख्या पाँच तक एक ह्राथ से, इसके ऊपर हो तो दोनों हाथ से गणना करना। पर्वरखाफलम्
अंगुलीनां पृथग्रेखा त्रितयं मन्यते पृथक्र । रेखाद्वादशकं सौख्यं धन - धान्य-प्रदायकम् \|?०\| तिसृणां नव रेखाः स्युक्षक्ररेखा यदा भवेत्। अपरा: किं करिष्यन्ति बिना यत्नेन सिध्यति l॥?ः। जिस मनुष्य के चारों अंगुलियों में पर्व रेखा तीन-तीन पृयक् पृथक्त हों और सब बारह रेबा संट्टिख पड़े तो वह मुतुख्य धनधान्यादि समूर्ण सुबों से युक्त होता है। चित्र $? ६$, रेखा ६। तीन अद्धुलियों में नी रेबायें हों और चक्र रेखा भी शोयती हो

तो और रेखाओ के बिना भी मनुष्यों के सब कार्य बिना प्रयास सिद्ध हो जाते हैं। चित्र १५, रेखा Ł 1 १९-११।।

अंगुलीनां पृथग्रेखा गणने चेत् न्रयेदश ।
महादु:खं महाक्लेशं सामुद्रवचनं यथा ।।?२।।
रेखा: पज्चदशत्तेन षोडशद्यूत-वज्चक; ।
पापी ससदशः ज्ञेयो धर्मत्माडष्टादशात्मके । १ ₹ ।।
ऊनविंशतय: मान्यो गुणजो लोकपूजितः । तपस्वी विंशतौ जेयो महात्मा एकविंशतौ 11 \&४। अड्जुलियों की पृथक सब रेखायें गिनने से तेरह प्रतीत हों तो मनुष्य बड़ा दुःखी होता है-ऐसा सामुद्रिक वेत्ताओं ने कहा है।।१२।।

यदि गणना में सब पन्द्रह हों तो चोर, सोलह हों तो जुआ में ठगनेवाला, सत्रह हों तो पापी, अठारह हों तो धर्मात्मा, उत्नीस हों तो अति प्रतिष्टित, गुणज्ञ और लोकपूजित होता है, बीस हों तो तपस्वी और इक्कीस रेखा हों तो मनुष्य महात्मा होता है। चित्र $\xi$, रेखा $₹$ में या चित्र $\leftarrow$-रेखा-७ में पर्व देखो।११३-१४।। ललनारेखाफलम्
कनिष्ठाड्रुलिमूले तु रेखा चोद्वहहसाधिका। कुशाग्रा शोभनाद्वाह्या विपरीतो5न्यथा भवेत् $\| १ ई 1$ कनिष्ठाधःस्थिता रेखा संख्या यावतिका स्टृता: । लावती पुरुषाणां तु नारी भबति निस्वितम् ।१६। कनिष्ठा अंगुली के मूल में विवाहसूचक रेखा होती है। यह यदि कुसाग्रा (महीन) और सुरूपा जितनी रेखायें हों उतना विवाह कहना, विपरीत (स्यूला कुस्पा) हों तो विपरीत्त फल कहना चाहिये। १५-१६॥ चित्र २, रेखा €\| जितनी रेखायें हों संख्या में उतने ही भाई, और छोटी-छोटी जितनी रेखायें हों उतनी बहिन की संख्या कहना उचित है। चित्र २ रेखा q०l१ज)


स्वल्पायुपश्छिन्नलघुग्रमाणा: $\|$ १ॅ।।
अड्नुष्ठ मूल उच्चस्थान में सन्तानसूचक रेखायें होती है, उनमें फुष्ट अच्छिल्न (शुद्ध, जो कटी न हो) और दीर्ष रेखगयें चिरायु सन्तान (पुत्र) बोधक और कटी कुटी या छोटी रेखायें स्वस्पायु सूचक हैं। सूक्ष्म (पतली) रेखा कन्याबोधक होती है। चिन्र $२$, रेखा ११। अद्धुष्ठमूल में यव हो तो भी मनुष्यें सन्तानयुक्त होता है। चित्र २ रेखा १२Н१₹।।

पु:न-कीच्राविबोधिका रेखा
एका हस्तगत्म रेखा भवेदूध्र्बान्तिका यदा
पुत्र - पौन्नविहीनक्ष पशुनृत्तिरतस्तथा।
पुश्रयौत्राषि - सम्पत्मा चोध्ररेखा चुभध्रवा $\|? ६\|$ ऊर्ष रेषां के पास एक बड़ी रेबा हो तो मनुष्य पुत्र-पौन्र से

रहित होकर पशुवृत्ति में रत रहता है। चित्रश ₹ रेखा६। और शुद्ध ऊर्ध्व रेखा के होने से मनुष्य पुन्र पौत्रादि से युक्त होता है। १६। Fसाफल
हिंसा यदा स्यात्पतिता हि पाणौ महोश्चवर्गा पुरुष्य यस्य। दाराभिमर्षी परनिन्दकश्ध श्ववृत्तितुल्यो पुरुषो भवेद्यै।२०।

जिस पुरूष के हाय के उस्यान में हिसा रेषा पड़ी हो तो वह पुरुष दाराभिमर्षी（स्री के द्वारा क区 पानेवाला），पराई निन्दा करनेवाला और भान के समान वृत्तिवाला होता है। सित्र श६，रेखा ७।।२०। गोपीड़ा बालपीड़ा स्यादारपीढ़ा तथैद च।
हिंसा－दर्शनमात्रेण शान्तियोगी भवेत्तथा।२？॥ बसुहीनो दारहीनो पुन्त्रीनश्र दु：खित：। शान्तिवार्ता प्रबोधेन हिंसादोषश्र कथ्यते ।।२२।।
हिंसा रेषा देषबते ही गो पीड़ा，बालपीज़ा तथा स्री पीड़ा को प्रात्ति योग के साथ－साय कहना चाहिये। हिंसा रेखा वाला धन， सरी तथा पुत्र से हीन होता हैं；कतः हिंसा दोष को घान्ति वार्ता के द्वारा और प्रतोध करते हुए कहना चाहिये। चित्र ३，रेखा $\rightarrow$ और चित्र $७$ रेबा श०।२२－२२ा

पाप－पुण्यमूचकरेखाफलम
हिंसा रेखा थदा च्छिन्ना पुण्यरेखा च शोभना। पुण्यं स्वाद्विपरीते तु पापी बोध्यं सदा बुधै：।२३।। जब हिंसा रेबा कटी हो और पुण्येरेबा सुन्दरी हो तो पुष्यात्मा मनुष्य और विपरीत होने से पापी होता है। नित्र ₹，रेषा ज।२३। मित्रा 5 मित्रफलसूचकरेखाफलम् पुण्यादिरेखा：छिस्ना स्यु：रक्ता रेखा कुशोभना।

हिंसारेखाऽहीरिखात: शत्रुतृद्धि: प्रजायते। आभिर्हीनस्य मित्राणामुदयं परिकीतयेत् ॥२४॥ जिस मनुष्य के हाथ में पुप्यादि रेखायें छिन्न हों, लाल रेखा तथा कुस्तित रेखा हिंसा और सर्प रेखा हो तो शत्रुओं की वृद्धि होती है। चित्र ४, रेखा ११। इन दुष्ट रेखाओं के न होने से मित्रों का उदय होता है।। २४। चित्र ? छ रेखा फ।l

पित्रोर्या छिन्नरेखा स्यात्तयोरेकस्य निश्र्य: । द्वयोश्छिन्ने द्वयोर्नाशो वक्तब्य: सर्वदा बुधै: ।1२५।। कस्यापि लधुदीर्घा चेत् पित्रोरेकस्य संस्थिति:। सुशोभना सुमार्गा चेत् पितरौ स्तौ न संशय: ॥२६॥ यस्मिन् वर्षे हि या छिन्ना कष्टं स्यात्तस्य तत्र वै ॥२७॥

मातृ-पितृ रेखा में से जिसकी रेखा क्टी हो उसका विनाश कहना, दोनों कटी हो तो दोनों का विनाश कहना चाहिये।।५।

दोनों में कोई छोटी या बड़ी हो तो माता-पिता में एक की स्थिति कहना। चिन्न $q$ ६, रेखा $€ ।$ दोनों यदि सुन्दर और सरल हों तो दोनों की स्थिति कहना।२६।। जिस वर्ष के प्रमाण में ये रेखा कटी हो उस वर्ष में उसके लिए कष्ट कहना चाहिये।र७॥ त्रिकोणफलम्
स्वान्तरेखामतः शुद्धस्त्रिकोणो यदि शोभते।
गृहोर्ष्ष्डुपननादीनां सुखमेति स्वपौरषषात् 11 ₹।।
त्रिकोण: पितृरेखायां पैतृकं बसु लभ्यते।
त्रिकोणो भातृरेखायां आतामहधनं लभेत् ॥२६॥
जिस मनुष्य के हृदय रेखा में शुद्ध त्रिकोण हो तो वह पुख अपने पुरुषार्थ से गृह, भूमि और बाग इत्यादि को प्राप्त कर सुली
उत्तरार्द विय्याप्रदरेखाविचारः। १६७

होता है। चिन्न ४, रेखा ७।यदि पितृ रेखा में त्रिकोण हो तो मनुष्य पैवृक धन (चित्र ७, रे. ६) और मात्रृ रेखा में त्रिकोण हो तो मातृकुल (नाना) की सम्पत्ति का भागी होता है, चित्र ६,रेखा छ॥२६-२६॥
त्रिभुजो
भाग्यरेखायामनायासधनागम:।
लघुसम्पत्तिद: स्वल्पस्त्रिकोणो बृहदो बृहत् l३०॥ स्थानजन्यं सुखं चापि लभते नाइत्र संशय:। त्रिकोण: पुणयरेखायां शिल्पज्ञोऽसौ भवेद्धुर्वम् ॥इ१॥। यदि भाग्य रेखा में त्रिकोण हो तो अनायास धन की प्रात्ति होती है। चित्र११, रेखा१०। छोटा त्रिकोण हो तो थोड़ी और बड़ा त्रिकोण हो तो बहुत सम्पत्ति और अपने स्थान पर सुख प्राप्त होता है, इसमें सन्देह नहीं। चित्र ६, रेखा ६। पुण्य रेखा में त्रिकोण होतो मनुष्य निश्चय शिल्पज होता है। चित्र १२ रेखा ६। इन कहे हुए स्थान के अतिरिक्त यदि किसी स्थान में त्रिकोण हो तो उत्त फल नहीं होता और स्थानजन्य सुख भी नहीं होता है।३०-३१।।

## विद्धाउदरेखाफलम्

कुशाप्रा भाग्यरेखादि तथा पुण्या त्रिकोणकम् । यवः पव्मं च विद्यायै श्ञस्त्रं च क्रसशः शृणु ।३२।। शब्दसाहित्यशास्त्रे च ज्यौतिषं बैद्यकं तथा। पज्च्वमाड़ुलभाषंटं वै कथयन्ति मनीषिण: ।1३३।। यदि भाग्यादि प्रशस्त रेखा कुसाग्र हों तो मनुष्य मब्द (व्याकरण) जासस्र का ज्ञाता पुण्य रेंखा से साहित्य शास्त, त्रिकोण रेखा से ज्योतिष शास्त्र, यव से वैध्यक तथा कमल रेखा से आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा का ज्ञाता होता है।।३२-३३।।

## १६ะ <br> सामुद्रिकरह्दस्ये

महिलार्थरुदन-परदारयोग रेखाफलम्
अब्नहलात्रिसुभाग्यविहीने
हा ललनेति विलापपरो ना ।
अन्यवधूसुरतेसु रतोऽसौ
जार - कलङ्ऊ - विभूषितमर्त्य: \| ३ ४।।

जिस मनुष्य का करतल पव्य, हल, शैल और सुन्दर भाग्यरेखा से रहित हो तो वह स्री के लिये निर्त्तर रुदन किया करता है और जाररेखा युक्त मनुष्ये परस्तीगामी होता है। चित्र $\varphi$ रेखा ज।३४।। याज्चाप्रचक-रेखाकलम्न
डमरू-बज्र-कुम्भैश्व भिक्षार्थं परितः व्रजेत्।
योगरेखा सनाथोऽसौ परमानन्द-योगिराट् ॥३乡।।
उमरू, वत्र और कुम्भ रेखा होने से मनुष्य भिक्षार्थ श्रमण करता है। चिन्र३ रे०४। योग रेखावाला मनुष्य परमानन्द-निमग्न और योगियों में श्रेष्ठ होता है।३दा।

यश्गेडसभा-विवावमूचक-रेखाफलय
यदोऽड़्रुछढ़ोदरे सोम-सूर्यौं च करमध्यगौ।
यशस्वी विपरीते तु मनुजोडकीर्तिभाग्भवेत् ।३६॥
विबादी मकराड़ेनेन भवत्येव न संशय: $11 \frac{2}{र} ॥$
जिस मनुष्य के उद्युष्ठोदर में यव रेखा और कर मध्य में चन्द्य या सूर्य रेखा हो तो मनुष्य यशस्वी (चित्र $\in$, रेखा $\leftarrow-€$ ) होता है और यदि इसके प्रतिकूल हो तो मनुष्य अपयश का भागी होता है। चित्र $\varsigma$, रेखा $₹ 1$ और मकर से मनुष्य झगड़ातू होता है। चित्र $\xi$, रेखा ६ 11 ₹६ $\frac{श}{₹} ॥$ मतान्तर से धनी भी होता है (पूर्वार्ष पृष्ठ ६७ म्लोक ३६)॥

अथ योगाबली
P-परमेश्षरपूजनं भविष्यद्टष्टियोगसस्वान्ताऽपरा यस्य करे विराजते

## वृद्धाड़्रुली पुष्टतराऽपि चाऽSयता।

स्यान्मानवो माधवपादसेवक:

## दृष्टिर्भविष्यद्विषये च जायते ॥? ॥

जिस मनुष्य के हाथ में द्वितीया स्वान्त्त (आयु) रेखा हो, अथवा कराङ्धुष्ठ दीर्ष (लम्बा) और पुष्ट हो तो वह मनुष्य भगवदाराधना में तत्पर रहता है और भविष्य का ज्ञाता होता है। चित्र १ 5 रे० $॥$ ॥? २-भक्रियोगः- स्थानं बुधेन्द्वोश्र समुन्नतं स्यात्

तत्रैव जालज्च गुणाख्याचिह्नम्। शाखाविशिष्टा जननी च यस्य दीर्घं कनिष्ठान्तिमपर्वभक्तः ॥२।।
बुध और चन्द्रमा का स्थान ऊँचा हो, वहीं जाल और गुणाख्य (x) चिह्न हो, मातृरेखा शाखाओं से युक्त हो और कनिष्ठाहुली का तृतीय पर्व दीर्घ हो तो मतुष्य भक्त होता है। चित्र १६ रेखाई।।२।
३- भविष्यद्वक्वृत्वयोग:

चान्द्रं पुष्टं कर्तितं चाल्पचिह्नै:
रुच्यं बौधं चैन्दवं स्थानमेवम्।
लोके ख्यातो भाविवक्ता नरोऽसौ
रेखाविज्ञा: सञ्जगुः सत्सु मान्या: ।1३ ।
चन्द्र स्यान पुष्ट और छोटी-छोटी रेखाओं से कटा हो, देखने में बुध और चन्द्रमा का स्थान मनोह्र हो तो मनुष्य भविष्यद्वा होता है। चित्र $\uparrow ७$ रेखा $₹ 0 \|$ ॥। १ २

## यदा पाणिमूलात् समुस्त्थाय भाग्या

तृतीये हि मध्याद्धुर्ली पर्वणीयात् ।
नरो बेत्ति कालत्रयाणां स वार्ता
मुदा सर्वदा पण्डिता: सड़्िरन्ते ॥४।।
भाग्य (ऊर्ध्व) रेखा मणिबन्ध से उठकर मध्यमा के तृतीय पर्व तक जाय तो मनुष्य त्रिकालज होता है, गेसा पण्डितों का कथन है। चित्र ₹ ६ रेखा रा।४।

$$
\begin{aligned}
& \text { य-योगी } \\
& \text { योग-रेखाश्रितो योगयुक्तो नर: } \\
& \text { मन्द - जीव-प्रदेश: समुचो रवे:। } \\
& \text { शुद्धरेखा, स योगी, शानिस्थानगं स्या- } \\
& \text { त्तिकोणं तदा योगयुक् पूज्यतेऽसौ ॥द।। }
\end{aligned}
$$

योग रेखा युक्त मनुष्य योगी होता है, अथवा शनि और बृहस्पति स्थान उन्नत हो तथा रवि रेखा शुद्ध हो तो मनुष्य योगी होता है। चित्र $१ \varsigma$ रेखा ? (योग रेखा भी)। शनि स्थान में त्रिकोण हो तो मनुष्य योगी होकर विशेष गौरव प्रांप्त करता है (पूजित होता है। चित्र $₹ \mathrm{~F}$ रेखा $?$ में 11 दू। \&-श्रेप्टषदतनाश:
अनामिकाया: प्रथमाध्दि पर्वण:
तृतीयपर्वावधिभाग्य - रेखिका ।
विशुद्धर्तेपेण प्रयाति छेत्तद्य
नर: समीर्चीनपदं स चिन्दति ।हा। अनामिका के पहले पर्द से तीसरे पर्व तक भाग्य (ऊर्ध्व) रेखा शुद्ध रूप से हों तो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ (उस्त) पदप्रास करता है चि.१२, रे.€।द्ध।

## ज- परकीय- सम्पति-लाभ:

यदाडपरा पितृबरा विभाति स्थानं रवेर्वोच्चतरं हि पुण्या। विधेम्य रेखाsतिविशुद्धरूपा परार्थभागी भवतीह मर्त्य: |ज|

जब हाथ में अपरा पितृ-रेखा शोभती हो या रवि स्थान उच्च हो, पुण्य और भाग्य रेखा अति शुद्ध हो तो मनुष्य दूसरे की सम्पत्ति प्राप्त करता है। चित्र ?० रेखा १०1। ज।।
Б-पूर्ण निहान-योगत:

गुरोर्बुधस्यापि रवेस्तथोचै: स्थानं समुत्याय पितुस्ततोध्ध्वा। गुरोर्गृह याति जनः सुविद्यापारझ्नतः संलभते प्रतिष्ठाम्|ऽ।
बुध, गुऊ और रविस्थान उच्च हो और पित्रेखा से ऊर्द्ध-गामिनी कोई रेखा बृहस्पति स्थान तक भुद्ध रूप से जाय तो मनुष्य विद्या में पारङ्न होकर प्रतिष्ठा लाभ करता है। चित्र १̧ रेखा?०।च।। रेखास्तिस्तो वाडथ बह्वयोडथमा स्यु:

कूटा खण्डा कूर्मरूपा कुठारा। पाणौ घस्य स्यात्तदा मानवोडसौ

## द्रव्या 5 भाचाद् दु:खमत्यन्तमेति \|£\|

जिसके हाथ में तीन रेखा या बहु रेखा हो अथवा कूट खण्ड, कुठार और कूर्मादि कोई रेखा हो तो वह पुरुष धना-भावादि के कारण अत्यन्त दुःखी रहता है।ह।।

$$
\begin{aligned}
& \text { คo -द्यनाश: } \\
& \text { शुक्रस्थानादेत्त्य रेखाडतिलध्वी } \\
& \text { छिन्चा भाग्यां पैतृकाङ़ुञ्च गच्छेत् । } \\
& \text { भौमस्थानं स्थीयहस्त्येन मर्त्य: }
\end{aligned}
$$

सद्य: संत्क्ष नाशयेद्य द्रव्यराशिम् \|?०\|

शुक्र स्थान से छाटी－छोटी रेखा उठकर भाग्यरेखा और पितृ रेखा को काटती हुई भौमस्थान तक जाय तों मनुष्य स्वतः अपने हाथों से द्रव्य राशि को विनष्ट कर देता है। चित्र १ ३ रेखा ११ १।१०। ？？－विन्नाब्दान्दनमियोग：
नक्षत्र चिह्नं यदि स्याद्धि जीवस्थाने तदोद्वाहवशाद्धनातिः । स्यात्तेन मर्त्योडतिसुखेन कालं स्वं यापयेच्छास्त्रनिदा वदन्ति 1११।

बृहस्पति स्थान में यदि नक्षत्र चिह्न हो तो मनुष्य विवाह से बहुता धन ग्राप्तकर सुख से कालयापन करता है（चि．१ ₹ र．१०）। १ १।（मनोहर और कुशाग्र परिणय रेखा बुधस्थान से उठकर रविस्थान का स्पर्श करे तो उत्तम कुल में विवाह होता है और उससे विशेष धन प्रास होता है） २ २－कष्टकरविवाह：
यदा कुत्सितोद्वाह－रेखाति－रीना－ डथदा कर्तिता स्वल्पया रेखया स्यात्। तदा कष्टकारी विवाहोडन्यथा चेत्

कुशाग्रा सुरूपा सुखोद्वाहकर्त्री ॥१२॥ परिणयन रेखा स्यूला और कुत्सिता हो अथवा सरल स्वल्प रेखा द्वारा कडी हो तो विवाह कष्टकारी होता है।（चित्र १ ३，रेखा €）। सुन्दर कुशाग्र और दर्शनीय हो तो सुख़्रद विवाह होता है।१२।। ？१－अनेक－भवस्यकोणन कविस्थानगं जालचिह्हं तृतीये

तथा तारका तर्जनी－पर्वणि स्यात्। विवाहाख्येखोर्ध्धगं जारचिह्नम् नरोडकेनया भार्यया सड्न्मीयात् 11१३।। शुक्र स्थान में जाल चिह्न तथा तर्जनी के तृतीय पर्व में नक्षम्र चिह्ण चि．१४ रे．६ हो अथवा परिणयन रेखा के ऊपर जार चिस्न हो तो

अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होता है चि. १४ रें (परिणय रेख़ा में में जितनी रेखायें झुकी हों उतनी ही स्त्रियों का वियोग होता है)। ₹३। विनाह- विचार
१-परिणय रेखाओं में जितनी रेखायं कुशाग्र, सुन्दर और ममानान्तर की दीख पड़ती हों तो उतने ही विवाह होते हैं।
२-विवाह र्खे से कोई शाखा निकलकर ह्रदय रेखा का म्पर्श करे तो विवाह होकर सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।
₹-विवाहरेखा ऊपर अड़ुलीकी ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता। ४-भाग्य रेखा से कई रेखायें निकलकर ह्रदय रेखा का म्पर्श करे तो भी विवाह नहीं होता।
५-गुरु स्थान के पास तर्जनी के बगल में नीचे जितनी मुन्द्र गेवाएँ एक समानान्तर में दिखाई पड़ें उतने ही विवाह कहना चाहिये। दाम्पत्य-जीनन
६- (क) मातृ रेखां से कोई शाखा निकलकर या स्वतः मातृ रेखा पितृ रेखा से मिले तो स्त्री पुरुष को चाहती है।(ख) एवं पितृ रेखा मातृ रेखा में आकर मिले तो पुरुष स्त्री को चाहता है।
(ग) दोनों मातृ-पितृ रेखा के पृथक्-पृथक् होने से स्त्री-पुरुषों में परस्पर प्रेम नहीं रहता। (घ) दोनों रेखायें परस्पर मिली, देखने में सुन्दर तथा स्वच्छ हों तो दम्पति में परस्पर अत्यन्त प्रेम होता है।
(७) विवाह रेखा आयु रेखा के जितनी ही निकट हो तो उतनी ही जल्दी विवाह होता है।

$$
\begin{aligned}
& \text { p \&-बन्दीयुक्योग: } \\
& \text { यदा भूमिपुत्रोशन-स्थानगं स्यात् } \\
& \text { चतुष्कोण-चिहं करस्याडज़ुलीर्बा । } \\
& \text { चतु:पर्वयुत्ताडपि काराधियासी } \\
& \text { विभिन्न्रा तु गत्वा नरो मुच्यतेडसौ } 119 ४ 11
\end{aligned}
$$

शुक्र और भौम स्थान में चतुष्कोण चिह्न हो तथा हाथ की कोई अड़ु़ुली $४$ चार पर्वों से युक्त हो तो मनुय्य बन्दीगृह (कारागार) का भागी होता है। वित्र ₹४४ रेखा ए-€। यदि छिन्न-भिन्न हो तो जाकर छूट जाता है।१४।।

P\&-काणदण्ड (फाँसी) योग:
नक्षत्र-चिश्नि-द्वयं सौरिगम् मध्यमापर्वणण स्यात्तृतीयेऽपिच। भग्नाशनौ मातृरेखा यदा मानव: प्रणणदण्डं समेयात्तदा। 1$\}$

शनि स्थान और मध्यमा अद्धुली के तृत्तीय पर्व में यदि दो नक्षत्र चिह्न हों अर्थात् उत्त दोनों स्यानों में नक्षत्र चिह्न हो या मातृरेखा शनि स्थान में भग्न हों तो मनुष्य को प्राणदण्ड (फाँसी़) होता है (चित्र १द रेखा २)।? ॥॥ ?६-आत्महत्यायोग:
भाग्यादौ शशिनश्र देशमभजन्कक्षत्र-चिहंं यदा भौमस्यापि द्वितीयके यदि भवेत् स्थाने गुणाख्यं तथा। जालाङूश्ध सुलक्ष्म-शास्त्र- निपुण: विद्दद्वरेण्या: द्विजा: प्रोचुर्मर्त्यगणाधम: स कुरुते हिंसां स्वकीयां स्वयम् ।?६। भाग्यरेखा के प्रारम्भ में और चन्द्र स्थान में भी नक्षन्र चिह्न हो और द्वितीय मड़्नल स्थान में गुणाख्य तथा जाल चिह्न हो तो मनुष्य आत्महत्या करता है, चित्र $₹ 5$ रेखा ३।१६३। $p-9$-अकलम्नृत्रुयोन:

## नियत्यन्तिके स्वान्तमात्रोश्र मध्ये

गुणाड्डों विछिम्नाइथवाइडयुष्यरेखा। विलूनाऽथना स्वल्परेखाभिरायु-

स्यतदाइकालमृत्युं भजेन्मानवोऽसी ॥९७।। भाग्य रेखा के पास चित्र रे. $v$ तथा अयुष्य और मातृरेखा के बीच
उन्नरार्द्द योगानली।

में गुणाग्य चिह्न हो（चि．१३ रे．६）या आयुरेग्बा भग्न का छाटी छछोट्टी रेखाओं में कटी हो तो मनुष्य की असामयिक मृत्यु होती है।？ज।
 मातृरेखामछित्त्वैव भाग्यो यदा सौरिगेहं ब्रजेत् स्वत्पमायुस्तदा। स्थानमिन्दोर्गुरोश्रोन्नतं चोत्पलं मृत्युदेशे भवेत्तीर्थ－मृत्युं व्रजेत्｜？च।

भाग्य गेख़ा मातृरेखा को न काटकर् मन्द म्थान नक जाय तो मनुष्य अल्पायु होता है। चित्र १थ रेखा ज। चन्द्र और गुरु स्थान उम्नत हो तथा मृत्युस्थान में पद्य रेखा हो तो मनुष्य की तीर्थ में मृत्यु होती है। चित्र \＆\％रेखा ち॥？ची

## अथाडडयुरेखाविचार：

अखुषां योगास्त्रिकिधास्तनाडSE－
त्रिविधाश्वायुषां योगा：स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमा：
द्वात्रिंशत्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो
भवेत् ।
चतु：षष्ट्या：पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम्
उत्तमायु：शतादूर्ध्वमिति शास्त्रेषु निश्रितम् ॥？६॥ आयु तीन प्रकार की होती है－
१ दीर्घायु，२ मध्यमायु और ₹ अल्पायु। इनमें ६४ मे $₹ 00$ दीर्षायु，३२ से ६४ तक मध्यमायु और ३२ तक अल्पायु होती है। यदि 900 से अंधिक हो तो उत्तमायु कही जाती है॥१६॥

प्रथम आयु का विचार करके तब लक्षणादि का विच्चार करना चाहिये। यथा प्रर्वमायुः परीक्षेत पश्धाल्लक्षणमादिशेत्। निरायुष： कुमारस्य लक्षणण：कि प्रयोजनमिति＇（पू० पृष्ठ ५४ श्लोक？）।

P．दीघ⿸\zh14⿰㇇⿰亅⿱丿丶丶⿸厂⿱二⿺卜丿．－
हाय की अँगुलियाँ लम्बी और आयुरेखा बुधस्थान से गुरस्थान तथा स्पष्，，गम्भीर，खच्छ，मनोहर तथा अखण्डं हो।

पितृ रेखा लम्बी，स्पष्ट，वक्र，नीचे की ओर झुकी तथा अच्छिन्न।

स्वास्थ्य रेखा पितृ रेखा से मिली न हो, तथा स्वच्छ परिपूर्ण हो तो मनुष्य की दीर्घायु या उत्तमायु होती है।
₹. मष्यमाध्र:-

हाथ की अँगुलियाँ मध्यमश्रेणी की तथा आयुरेखा शनिस्थान तक स्वच्छ इत्यादि उक्त गुणयुक्त पितृरेखा नीचे की ओर धुकी न हो, तो मध्यमायु होता है।
श. अत्यव्ध:-

अंगुलियाँ छोटी, कृंश और वक्र, आयु रेखा अनामिका के मूल तक अथवा शनि वा गुरुस्थान तक होकर भी छित्न भिष्न, म्लान और भद्दी हो, पितृरेखा सूक्ष्म (पतली) वा चौड़ी म्लान, भह्षी तथा खण्डित, मातृरेखा शनिस्थान तक शाखारहित, स्वान्त रेखा कृष्ण वर्ण छिन्न-भिन्न हो, प्रायः ये सब रेखायें देखने में सौन्दर्य विहीन हों तो अल्पायु योग होता है।

ऐसे मनुष्य प्राय: रोगी, अनेक प्रकार के दु;खों से पीड़ित और स्वल्पायु भोगते हैं, अतः ऐसे प्राणियों को भगवद्धजन तथा सद्धर्मदि करना श्रेयस्कर है।

अभाइरिष्यिचार:
तर्जनीमूलगामिन्यां रेखायां छिद्रता यदि ।
श्वाविन्-मूषिक-मार्जारं-सर्पदशो भविष्यति ॥२०॥
आयुष्य रेखा में (जो बुधस्थान से उठकर तर्जनी के मूल तक जाती है (चित्र २ में रेखा $७$ देखिये) यदि छिद्र या नीला, काला, लाल रड्ज के दाग हो तो मनुष्य को साही, मूषक, बिलार और सर्प आदि जानवरों के काटने का भय होता है।।२०।। व्याख्या हस्त सञ्जीयनी के आधार पर
१- यदि $? ~ र क ् त न ी ल-म ि श ् र ि त ~ ब ि न ् द ु, ~ २ ~ क े व ल ~ र क ् त ~ ब ि न ् द ु, ~ ₹ ~ ? ~$ श्वेत बिन्दु वा 8 श्याम बिन्दु आयुष्य रेखा में हो तो मनुष्य को क्रमशः१ सर्पदशन, २ रक्तरोग, ३ सन्तिपात और ४ विर्षपान का

भय होता है और यदि आयुष्य रेखा क्याम वर्ण और उसमें रक्त बिन्दु हो तो मनुष्य को बिजली के द्वारा भय होता है। २- आयुष्य रेखा यदि किसी सीधी रेखा से कटी हो $?$ अथवा बुध स्थान में अहुख्ये सदृश कोई रेखा नीचे की और मुख्ज कर इसे काटती हो, २ वा इसके अन्त में अनेक छोटी रेखायें हो तो ३ क्रमशः शस्त ?, हाथी ₹ और घोड़े ३ के द्वारा भय होता है।
₹- यदि दक्षिण अथवा वाम भाग से अनेक टेढ़ी रेखायें आयुष्य रेखा को काटती हों तो क्रमशः अग्नि तथा जलमें डूबनेका भय प्राप्त होता है। 8 - यदि आयुष्य रेखा को अनेक रेखायें दाहिनी ओर से और एक रेखाबाँयीं ओर से काटती हो तो मनुष्य भयंकर रोगसे पीड़ित होता है। ५- यदि आयु रेखा अन्य रेखाओं से अनेक स्थान पर कटी हो तो स्ती द्वारा कलडु तथां अपमृत्यु होती है।

६- यदि इस आयु रेखा से कोई शाखा नीचे की ओर झुकी हो या यह क्ठिस्न-भिन्न हो तो उत्च स्थान से गिरने का भय होता है पूर्वार्द्ध पृष्ठ ६ट श्लोक ३७ देखिये।

७- यदि आयुष्य रेखा प्रारम्भ में सूक्ष्म (पतली), अन्त में स्थूल (मोटी) और मध्य में छिन्न-भिन्न हो तो प्रबल शत्रुओं द्वारा मनुष्य को हानि होती है। यदि इसके विपरीत अर्थात् आदि में स्थूल, अन्त में सूक्ष्म और शुद्ध रीति से पूर्ण हो तो वह पुरुष शत्रुओ पर विजय प्राप्त करता है।

५- आयुष्ष्य रेखा मोटी, देखने में भही तथा फ्यामवर्ण हो तो मनुष्य को कुटुम्ब सम्बन्धी चिन्ता होती है और मन उसका चञ्वल तथा उद्रेग युक्तहोता है। छस रेखा के ढ्वारा ह्टदय की गति भी जानी जाती है।

## प्रकार-

£- पुरुष के दाहिने और स्ती के बायें हाथ की आयुष्य रेखा के जिस बयोमान (वर्षपरिमाण) में उक्त चिह्न पाये जौँय उस वर्ष में इनका भय-मात्र समझना और यदि ये चिह्न दोनों छायों में उसी स्थान पर हों तो मृत्यु कहना चाहिये।

और दोनों हाथों में भिन्न-भिन्न स्यान में यह उपरोक्त जितने चिह्न. पाये जाँय उतने ही बार केवल भय प्राप्त होता है।

१०- यदि ऊर्ष्व रेखा शुद्ध और सरल हो तो मनुष्य का समूर्ण कष्ट आकर निकल जता है। उत्तरार्ध पृष्ठ१५२ श्लोक $₹$ देखिये। २९-अल्पाबस्थायां पिज्ञोर्बियोग: नियत्यादिदेशे भवेशेद्यवाङ् कस्त्रिकोणोडथवा शैशवे मानवगनाम् । भवत्येव पित्रोर्विनाशोइतिशीध्रम् विपश्यिद्वरेष्या वदन्तीह सत्यम्|२?

भाग्य रेखा के आरम्भ में यव चिह्न चित्र $१ ४$ रेखा $\varphi$ हो या त्रिकोण चित्र $\uparrow ६$ रेखा $\rho \circ$ हो तो बाल्यावस्था में ही उसके मात्ता पिता की मृत्यु होती है।।२?।

२२-घरूष्यभिचारयोग:
भृगुस्थाननं जालचिह्नं यदा स्या-
त्तथा तर्जनी - मध्यमा - पर्वदेशे।
तृतीये क्रमाद्र- त्रिकोणाख्यचिह्ने
भवेतां व्यभीचारयुक्तो नरः स्यात् ॥२२।।
गुक्र स्थान में जाल विह्न तथा तर्जनी और मध्यमा के तृतीय पर्व में क्रम से नक्षत्र और त्रिकोण चिह्न हो तो मनुष्य ब्यभिचारी होता है। चित्र ? १ रेखा प॥२२।।

२₹-परघमीनलम्बनम्न
यदि कत्तिपय-शाखा भाग्यरेखासमुत्त्या:
सुरुचिर-मणिबन्ध-स्थानमीयुस्तथा च।
विलसितगुणचिह्नं भास्करस्य प्रदेशे
श्रयति नर-कदर्यः पारकीयं हि धर्मम् ॥२३।।
भाम्य रेखा से कई गाखा उठकर मणिबन्ध की ओर जाँय तथा सूर्यस्थान में गुणाब्य चिह्न हो तो मनुष्य दूसरे के धर्म का अवलम्बन करता है।(चित्र \&५ रेषा ४)। २३।।

## २8-भानदोद्यन:

पाणिमूल-बलयोपरि भागे स्याद् गुणाख्यमथ पुष्टतरोधर्वा। भाग्य-शालि-मनुजेषु प्रसिद्ध: राजते स खनु मानव-जातः ।२४। मणिबन्ध वलय के ऊपर गुणाख्य चिह्न (चित्र शैज रेखा७) हो तथा ऊर्ष्व (भाय्य) रेखा पुष्ट हो तो मनुष्य सौभाग्यशाली होता है।२४। २६-जलसग्नयोग:
तृतीयेषु सर्वान्दुली-पर्वसु स्यात् यदाङ्को नरो दुर्गताचार-युक्तः। निमज्याडप्सु पज्तत्वमेतीह लोके चिचार्येदमाहुर्बुधा: लक्ष्तणज्ञा:।

सब अड़ुलियों के तीसरे पर्व में यव चिह्न हो तो मनुष्य दुराचारी होता है और जल में डूब कर मरता है। चित्न १२ रेखा ६।।२६।। Pह-ससम्प्रत्यिखजीवनयापन्न
गुरूस्थानगाडSयुष्यरेखा तदीयै-कशाखा शनिस्थानमेतीति मर्त्यः। सपत्नं विजित्यातिसम्वत्तियुक्त: सुखेनात्मकालं नयेद्वर्षयुक्तः।

आयुष्य रेखा गुरु स्थान तक हो और उसकी एक शाखा शनि स्थान में प्राप्त हो तो मनुष्य शत्रुओं को पराजित कर सम्पत्तिशाली हो सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है, चित्र १६, रेख्रा१०।२६।। इति योगनतनी समासा।
अथ दर्ष-शुभाडशुस-ज्ञानम/(हस्तरक) कस्मिन्बर्षे शुभं कस्मिन्नशुभं वा भवेत् मम्म। इति ज्ञेये पड्चदश भाग्ग: पउ्चाद्नुलीभवा: ।1911 वीक्ष्यास्तेष्यु च या रेखा ऊर्ध्नचंक्रे यदोडथवा । तस्मिन्वर्ष शुर्भं लक्ष्म्रीपुत्राद्यास्तिर्यश: सुखम् ॥। २। तेष्ठ पर्वसु चा रेखा छिजा भिझा च वेधयुक्र। श्रुत्ति-बिन्द्र-चतुष्कोण-भाख्यास्तद्य दुःखदायकम् ।। ₹ ।। व्यवस्थायादिमं बर्ष कनीनिकादि बिच्चार्यन्त

850 सासुद्धिकरहस्ये
तरो बामे पड्चदश पुनर्दक्षिण-वामयो: । स्त्रियां बामेऽथ सद्ये च विमृश्यन्ते चतत्क्रमात् 11211 प्राणियों के प्रत्येक अड्जुलियों में तीन-तीन पर्व होते हैं; इस प्रकार १६पर्व दाहिने तथा ? थबायें हाय का मिलाकर ३०पर्व होते हैं। इन पवों का प्रथम दक्षिण फिर बाम बराबर आयु की संख्या तक गणना करनी चाहिये। अब जिस वर्ष के पर्व में ऊर्ध्व, चक्र या यव रेबा हो उस वर्ष में शुभ कार्य, लक्ष्मी, पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति, यश और गुख प्राप्त होता है। जिस वर्ष के पर्व में रेखा छिन्न-भिन्न, सीप, बिन्दु, चतुष्कोण, तार का चिन्न्र दीख पड़े तो वह वर्ष अनेक्र प्रकार का दु:बदायक होता है। पुरुष का प्रयम दक्षिण तब वाम और एन्री का प्रथम वाम तब दक्षिण हाथ से गणना करनी चाहिये।?-दू। उद्दाहरण-
जैसे किसी के ३५ वर्ष के शुभाशुभ को जानना है, तो उस मनुष्य के दाहिने हाथ की कनिष्ठिका के आदि से अह्वृष्ठ के अन्त तक $? ६ प$ पर्व एवं वाम हाय के भी १५़ पर्व तक तीस वर्ष फिर दक्षिण कनिष्टिका का ३ और अनामिका के दो पर्व तक ३५ वर्ष हुए, इस पर्व में यदि शुद्ध ऊर्ष रेखा हो तो पुत्रादि की प्रापि, यश और शुभ विवाहादि मद्ल कहना चहिये। इसी चाहिये। इसी प्रकार स्री के वाम हाय से देखना चाहिए 19 -६॥

अ\% मास- श्रभान्शुभजानम्
श्रावणो हस्त-ताल: स्यादहुछठो भाव्रपान्मतः कुमारस्सर्जनीये्ये कार्तिक: भीविधानतः मार्गशीर्षोडनामिकायां किए भविधानतः 11 १। दकिणायनमेबं स्याद्द दहिणायां वु पौषक: । बामे माश: कनिकाद दक्षिणे सिंद्धनाहने ॥२॥ मध्या चैक्रे आषाषोो प्रदेशिन्यां माधबोड बर्लमानो हितल: पो मास: एवं स्यादुक्तरायणम । स पज्चनाड़िका ।। ४।।

ततो हस्तेक्षणघटी - मासस्तस्य शुभाऽशुभम् । रेखा कामदुघा रूपा वाच्यं लक्षणशिक्षितैः 11 ц। तर्जन्याज्च कनिष्ठायां प्राप्तो मासस्तु नो शुभः । शेषस्थाने शुभोडङ्बुष्ठे रणप्रश्नोडतिमङ्नदः 11 ६। 11 तर्जन्यां जयद: सोडपि तालस्थ: कोपिनो शुभः । लक्ष्मीस्थितो धनकरो मेरुस्थ: पददायक: \|ज\| यद्वा माघादयो मासा: द्वादशोऽपि लघो:क्रमात् । दिनोदयात्पञ्चघटीमाना पाणाक्षणावधि 11 ही। यो मासः प्राप्यते तस्य स्थानलक्षणवीक्षणात् । मासे शुभाडशुभं वाच्यमित्युरंत ज्ञानिभि: पुरा 11 ₹ 11 प्रत्येक पुरुष की दाहिनी हथेली में श्रावण, अँगूठे में, भाँदव तर्जनी में, कुआर मध्यमा में, कार्तिक अनामिका में, अगहन और कनिष्ठिका अङ्डुली में पौष मास होता है। दाहिने हाथ के ये ६ महीने दक्षिणायन कहलाते हैं। एवं वाम हाथ की कनिष्ठिका में माघ, अनामिका में फाल्गुन, मध्यमा में चैत्र, तर्जनी में वैशाख, अड्धुष्ठ में ज्येष्ठ तथा हथेली में आषाढ़ मास होता है। इस प्रकार वाम हाथ के छ: महीने उत्तरायण के हैं। गणना के अनुसार सूर्योदय से $\varphi$ दण्ड तक वर्तमान महीना भोगता है, अनन्तर $\varphi$ दण्ड बाद का दूसरा घहीना, इस रीति से $\varphi-\zeta$ के क्रमानुसार ? दिन-रात में १२ महीने भोगते हैं।

हाथ देखने के समय की घड़ी से जो महीना आवे उसका शुभाशुभ फल जानना क्योंकि लाक्षणिकों ने रेखा को कामधेनु रूप माना है। तर्जनी कनिष्ठा और करतल (हथेली) पर जो मास पड़े वह अशुभ और अन्य स्थानों में शुभप्रद है। किन्तु युद्ध विषयक प्रश्न में अद्धुष्ठ हानिकारक और तर्जनी जय देनेवाली है। हथेली पर प्राप्त महीना किसी प्रकार शुभ नहीं है। लक्ष्मी (मध्यमा) में धन प्रापि, मेरु (अड्दुष्ठ) में पद (मान-प्रतिष्ठादि) प्राप्त होता है। अथवा दूसरी किस्ये यह भी है कि कनिष्ठिका से

में क्रमशः माघ आदि १ २महीने होते हैं। सूर्योदय से हाथ देखने के समय तक $\zeta-\zeta$ घड़ी के अनुसार पूर्वोक्त विधि से शुभाशुभ फ्ल जानना चाहिये, ऐसा विद्वानों का कथन है।l?-६।l

## उदाहरण-

जैसे किसी ने माघ महीने में $9 \%$ घड़ी पर प्रश्न किया कि यह महीना मेरा कैसा बीतेगा? अब यह देखना चाहिये कि माघ महीना नाम हाथ की कनिष्ठा में है, सूर्योदय $\varphi$ दण्ड तक इसका भोग और $q \circ$ दण्ड तक मधमा में फान्गुन मास का भी भोग हो चुका 90 से $१ ५$ दण्ड तक तर्जनी में चैत्र भोगेगा, अतः यह महीना जुभदायक नहीं है। परन्तु युद्धविषयक प्रश्न हो तो शुभ अर्थात् जयप्रद है, इसीप्रकार महीनों का विचारकरना चाहिये। $१-६ \mid$

तिथि-द्रभान्शुभफलम
यस्यां निरीक्ष्यते हस्तः सा तिथि: स्याद्दिनोदये ।
घटीचतुष्टयं शेषास्तदनुक्रमतो मता: \|१॥ हस्तवीक्षणवेलायां या तिथि: समुदीयते। तदाॅड़्ुर्ल्या: स्वरूपेण वाच्यं सर्वं शुभाडशुभम् ॥२॥ नन्दा-भद्रा-जया-रिक्षा-पूर्णास्तु तिथय: क्रमात्। ताराद्या: कृष्णपक्षे . तु दर्शः सूर्येन्दुसड़गमः \|३॥ तारादि-न्यंशके ज्ञेया प्रतिपत्वष्टिका तिथि:। एकादशी च क्रमश: शेषं शेषांशबत् स्थितम् $118 \|$ जिस तिधि में हाय देखा जाय उस तिथि का मान सूर्योदय से 8 घड़ी (दण्ड) तक होता है। उसके बाद इसी क्रम से प्रत्येक $४$ दण्डपर १ दिन रातमें पन्द्रहों तिथियाँ भोगती हैं। तथा देखनेके समय जिसतिथि का उद्य हो उस अन्दुली के स्वरूप से सम्पूर्ण शुभाशुभ कहना चाहिये।

कनिष्ठिका से लेकर अड्डुषष्ठ पर्यन्त क्रमशः नन्दा, भद्रादि (कनिष्किका अछ्दुली में नन्दा१-६-११। अनामिका में भद्रा २-७-१२। मधमा

में जया ३-₹-१ ₹। तर्जनी में रिक्ता ४-६-१४। और अड़्रुष्ठ में पूर्णा ५-१०-१५।) तिधियों का वास रहता है। कनिष्ठिका के अगदि पर प्रतिपदा, मध्य में षष्ठी, अन्त में एकादशी, इसी क्रम से अनामिका इत्यादि अड़लियों में भद्रादि प्रत्येक तिथियों को समझना चाहिये। बायें हाथ में कृष्गपक्ष और दाहिने में शुक्लपक्ष, कृष्णपक्ष में अमावस्या और शुक्लपक्ष में पूर्णिमा होती है।।१-४।।

## उदाहरण-

जैसे शुक्ल़पक्ष की श्नयोदशी तिथि को $? \circ$ दण्ड पर किसी ने प्रश्न किया तो ग्रथोदशी तिथि का निवास मध्यमा के तृतीय पर्व में है; उसका मान सूर्योदय से $\gamma$ दण्ड तक भोग चुका, उसके बाद $\succ$ दण्ड तक रिक्ता की चतुर्यी भी तर्जनी के प्रथम पर्व में भोग चुकी, $\varsigma$ दण्ड के बाद १२ दण्ड तक नवमी तर्जनी के मध्य पर्व में भोगेगी, इसलिये प्रश्न काल (दण्ड १०)
 सो उसका फल उक्तवर्ष शुभाशुभ प्रकरण में कृथित, ऊर्ध्व चक्रादि के समान जानना चाहिये। इसी क्रम से अन्य तिथियों का भी ज्ञान करना।।?-४।।

## प्रन्थत्तुतिविजापनज्च-

ये सप्तकृत्वः सुधियः पर्ठन्ति ग्रन्थोत्तमं भत्कियुष: किलैतम्। ते दैवतृत्तावगतौ विचक्षणा: भजन्ति निर्वणिदं सुभव्यम्य ॥

जो विद्वान् लोग इस उत्तम ग्रन्थ को भक्तिपूर्वक सात बार पढ़ेंें वे लोग परमेश्वर के दृृष्टि-क्रम की जानने में निपुण होकर (यषा मानादि तथा भगवर्दक्ति प्रासि द्वारा) सुन्दर निवर्व पद को प्राप्त करेंगे।। १।। बेदाडष्टाङ्क्रमगाङ्欠 (१६६४) बत्सरगते चैत्रस्य शुकलेदले रामाख्ये नगरे च रामनबमी-तिथ्यां रसौ पुष्ये । काशी-राज-भुजे समस्तसुभगे देबापगा-रोधसि प्रन्थोडयं परिपूर्णतां समुद्दगगच्छीकालिकाशर्मण: 11911

शुक्ल यजुर्वैद संहिता ग्लेज रामायण मध्यम भाषा-टीका रामायण रंगीन भाषा-टीका श्री मदूभागवतरहस्य डोंगरे जी दुर्गार्चन-पद्धति भाष-टीका मन्नसागर भा. टी. साजिल्द रामलीला दर्पण नाटक राथेश्थाम रामायण बरेली दुर्गासप्तशती शिवदत्ती टीका बंग्लामुखी रहस्य, बगलोपासन भुगुसंहिताफलितसर्वाग्ड़ दर्शन बृहद् पाराशरहोराशार्तभा.टी. वृहण्जातक भाषा टीका मानसागरी भा. टी. सलिज्द सामुद्विक रहस्य भाषा टीका भावकुतूहल भाषा टीका मुर्वांचिन्तामणि भाषा टीका जातक दीविका भाषा टीका गृहरल भुषण भाषा टीका बृहज्योतिषसार भाषा टीका यज़ रहस्य भाषा टीका वर्षकृत्य प्रथम भाग भा. टी. वर्षकृत्य द्वितीय भाग भा. टी. विवाह पद्धतिं शिवदत्ती भा. टी. भुगुरंहिता (अंग्रेजी में) लग्नचन्द्रिका भाषा टीका गृहराल भूषण भाषा टीका

२००- स्वाहाकार मिमांसा
२४०- अवकहड़ा चक्र भापा टीका 80)$\begin{array}{ll}\text { १६०-) हनुमानज्योतिष भाषा टीका } & \text { १२)- } \\ \text { २२०- }\end{array}$ २२०- हनुमान लागुंलस्तोत्र भा.टी. 900 - जीवन भविष्य दर्पण भा. टी. v0-) कर्म-विपाक भाषा टीका ६०-१२०- शिवस्वरोदय भाषा टीका द०$\begin{array}{ll}\text { शिवस्वरोदय भाषा टीका } \\ \text { हनिमानज्योतिष भाषा टीका } & \text { २०)- }\end{array}$ 92)-9६)(0) प.0) чo) yo)-yo)-yolצ.) १२)92) 9२)-92)-92)-90)-(v)-v)-

$$
\text { हाहख नामावली } 24
$$

 घर बैटे V.P.P द्वारा मेंगाने रिख, गेगा, विषा, मेख ज्योतिष प्रकाशन
चीक, वाराणसी -२२,
फोन :


